डैडीगाम

अशोक



डैडीगाम

(मैथिली कथा-संग्रह)

अशोक

नवारम्भ
पटना

ISBN : 978-93-82013-10-5

डैडीगाम
(मैथिली कथा-संग्रह)

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2017
मूल्य : 200 रु.

प्रकाशक
नवारम्भ
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मधुबनी : वार्ड न.-2, विवेक पुरम्
Email : navarambhprakashan@gmail.com
lekhakajitazad@gmail.com
मो॰- 09304349384, 08434680149

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Daddygaam
Collection of Maithili Short Stories By **Ashok**
Edition : December, 2017, Price : Rs 200/-



दीदा (स्व. गीता देवी) केँ ई पोथी

कथा-क्रम

11 : लाथ

16 : छल

24 : स्वाधीन

34 : ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि

40 : डैडीगाम

राग : 56

लेमन आइसक्रीम : 62

उमकी : 69

मनसूबा : 78

अभयक बेटा केँ टूटा दाँत भेलनि : 88

93 : खुशीक नाम जीवन

98 : टीस

103 : छुट्टीक एक दिन

112 : गामक कातक हाइवे

117 : एना भ' क' कियो

कथा सँ पहिने किछु गप

'मातबर' कथा-संग्रहक बाद ई 'डैडीगाम' अपने सभक लग प्रस्तुत अछि। 'मातबर' 2001 मे निकलल रहय। एहि संग्रह मे 'मातबर'क बाद लिखल कथा सभ अछि। एहि पोथी मे संग्रहीत सभ कथा (केवल अन्तिम कथा के छोड़ि) कोनो ने कोनो पत्रिका मे छपि चुकल अछि। एक कथा 'छल' पहिल बेर एक पोथी 'कथासेतु' मे छपल रहय। अंतिमो कथा 'एना भ' क' कियो' मिथिला दर्शनक टटका अंक मे आबि रहल अछि। 'मातबर' सँ पूर्व 'ओहि रातिक भोर' कथा-संग्रह 1991 मे आयल रहय। ओहि सँ पहिने 1986 मे कथाकार मित्र शिवशंकर श्रीनिवास ओ शैलेन्द्र आनन्दक संग तीनूक पाँच-पाँचटा कथाक सहयोगी संकलन 'त्रिकोण' निकलल रहय।

एम्हर किछु वर्ष सँ हमर कथा लिखबाक गति पहिनहुँ सँ कम भ' गेल अछि। पछिला शताब्दीक अंतिम दशक मे 'सगर राति दीप जरय' कार्यक्रम मे सक्रिय सहभागिताक कारणे कथा बेसी लिखाइत छल। ओ समय बेसी उर्वर रहय। चाहै छी जे आब कथा लिखबामे तेजी आनी। कथाक डिमांडो बढ़ल अछि। मैथिली मे एखन जे पत्रिका सभ निकलि रहल अछि, तकर सम्पादक कें कथाक खगता बेसी रहैत छनि। तैं आग्रहो रहैत छनि। से एहि कारणे जे कथा आवश्यकतासँ कम लिखल जा रहल अछि। मैथिली मे पत्रिके कतेक अछि? एहू पत्रिका सभ कें जँ नीक कथाक अकाल भ' जाइ त' स्थिति विषम कहल जा सकैत अछि।

कथा पर केन्द्रित चर्चा सेहो नहि भ' रहल अछि। एखन धरि मैथिली कथा पर कोनो पोथी नहि आयल अछि। जे पोथी आयल अछि से कथा पर लिखल लेख सभक संग्रह थिक। तथापि मोहन भारद्वाजक 'कथा गोष्ठी' आ शिवशंकर श्रीनिवासक 'बदलैत स्वर' मैथिली कथा के जनबा-बुझबा मे सहायता त' अवश्य करैत अछि। आनो विध सभक सैह हाल अछि। आनो विध सभ के केन्द्र मे राखि वर्त्तमानक आकलन नहि भ' पाबि रहलए। कोनो गोष्ठी सभ मे जे चर्चा होइतो अछि से या त' रचनाकार केन्द्रित रहैत अछि अथवा विषय सँ बेसी सोर के ध्यान

मे राखि क'। तैं मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाक जे विकास भेल अछि से समग्र रूपें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे जनबाक लेल पोथी लिखल जायब जरूरी लगैत अछि। से फराक-फराक विधा पर फूट-फूट सक्षम लेखक/आलोचकक हुअय त' उत्तम। एहि लेल लेखक सभ के चुनि क' उत्तरदायित्व देल जेबाक चाही। ओना एहि लेल गोष्ठी हुअय त' समकालीन कथा, उपन्यास, कविता, आलोचना पर हो। हँ, अनुवाद पर एक कार्यशाला सेहो जरूरी लगैत अछि।

जे पत्रिका सभ निकलि रहल अछि, ओहि मे पोथी समीक्षाक स्तम्भ नहि रहैत अछि। यदि रहितो अछि त' नियमित नहि। पत्रिकाक सम्पादक सभ केँ एहि दिशा मे ध्यान देबाक चाही। समीक्षक बनेबाक काज पत्रिका सभ के करबाक चाही। एहि लेल जे युवा सभ आलोचकीय प्रतिभा सँ सम्पन्न छथि, हुनका प्रेरित-प्रोत्साहित कएल जेबाक चाही। जहिना रचनाकारक जरूरत तहिना समीक्षक-आलोचकोक। बहुतो नब लोक सभ देखा रहल छथि जे नीक समीक्षा लीखि सकैत छथि। एहि नब लोक सभ मे साहित्यक प्राध्यापक ओ रचनाकार दुनू छथि।

वर्त्तमान मे मैथिली संसार मे बहुतो सकारात्मक आ प्रशंसनीय काज भ' रहल अछि। विभिन्न संस्था सभक आयोजन, पोथी सभक लोकार्पण, साहित्यकार सभ के पुरस्कार आ सम्मान खूबे भ' रहल अछि। दिवंगत साहित्यकार सभ के मोन पाड़ल जा रहल अछि। पोथी-पत्रिका पहिने सँ अधिक छपि रहल अछि। एहि मे नवारम्भ प्रकाशनक योगदान उल्लेखनीय अछि। मिथिला दर्शन आ घर-बाहर त' अछिए। विभिन्न स्थान सँ प्रकाशित होइत स्मारिका, वार्षिक-अर्द्धवार्षिक पत्रिका सभ सेहो महत्वपूर्ण अछि। प्रकाशनक गुणवत्ता बढ़ल अछि। देखबा मे पोथी-पत्रिका सभ हिलसगर लगैत अछि। नब-नब युवा रचनाकारक रचनाशीलता अकानल जा रहल अछि। पोथी-पत्रिकाक बिक्री बढ़ल अछि। फेसबुक आदिक द्वारा मैथिली संसार विस्तृत ओ लोकतांत्रिक भेल अछि। नब-नब रचनाकार, मैथिली साहित्य प्रेमीक संख्या मे वृद्धि भेल अछि। निधोख गप भ' रहल अछि, चर्चा भ' रहल अछि। किछु लोक गम्भीरता सँ एहि सभ काज मे लागल छथि, से बहुत आश्वस्त करैत अछि। आश्वस्त युवा लोकनिक सक्रियता सेहो करैत अछि जे साहित्यिक चौपाड़ि, अकासतर बैसकी आदि गोष्ठी सभक माध्यमे रचनाशीलता के बढ़ेबा मे योगदान क' रहलाहे।

एहि कथा-संग्रहक प्रकाशनक बेर मे भाइ मोहन भारद्वाज बेर-बेर मोन पड़ैत छथि। ओ पछिला दू वर्ष सँ हमरा पोथी छपेबा लेल तंग करैत रहला। विस्मरणक बिमारी आ दुखिताहो रहैत जखन मोन पड़नि, टोकि देथि– 'आब अपन कथा-संग्रह छपाउ।' ओ हमर कथा सभक पहिल श्रोता रहला अछि, खाली अंतिम कथा छोड़ि क'। आशा करैत छी जे ओ शीघ्र स्वस्थ हेता आ पहिने जकाँ कथा सुनि निधोख टिप्पणी करता। एहि अवसर पर मित्र विद्यानन्द झा सेहो मोन पड़ैत छथि जिनकर एक कविता मे आयल 'डाकबला लाल बक्सा'क संग जुड़ल स्मृति के हम एक कथा मे उपयोग कयल अछि। मोन त' बहुतो मित्र सभ, युवाबन्धु सभ पड़ैत छथि जे कथा-संग्रह लेल चरिअबैत रहला। कथा सभ के पढ़ैत रहला। ओहि पर लिखैतो रहला। बजैतो रहला।

एहि समय मे कथाकार राज मोहन झा केँ स्मरण क' गह्वरित होइत छी। ओ आइ नहि छथि मुदा हुनकर व्यक्त कयल भरोस मोन पड़ैत रहैत अछि। होइत रहैत अछि जे कोना ओहि भरोसक मान राखि सकब।

अन्त मे अजित आजाद के धन्यवाद दैत छियनि जे ओ व्यस्तताक बावजूद तत्परतापूर्वक एहि पोथीक प्रकाशन केँ सम्भव केलनि। धन्यवाद समकालीन कवि रघुनाथ मुखिया के सेहो जे एकर अक्षरांकन मे बहुत मेहनति केलनि।

पता नहि फेर अगिला कथा-संग्रह कहिया निकलत? ताबत जे अछि से अहीं सभ लेल अछि....।

अशोक
पटना
27 दिसम्बर 2017

लाथ

मंडल अयला त' कहलियनि– 'एकटा कुरता किनबाक अछि। पैजामा सेहो। सोचैत रही जे अहाँ आयब त' बजार चलब।' हुनकर ठोर पर आने दिन जकाँ बिहुँसी अयलनि। फेर जोरसँ हमरा संग हाथ मिलौलनि। ई हुनकर हिस्सक छनि। बजला मुदा प्रश्नवाचक जकाँ– 'पक्का?'

–'हँ, एकदम पक्का! लॉक क' दिऔ।' ओ जोर सँ हँसला। हाथ पकड़नहि पुछलनि– 'कहिया चलब?'

–'आइ, एखनहि।' –हम जवाब देलियनि। हमर चेहरा पर परिवर्त्तन देखार छल। मंडल बूझि गेला।

–'खुशी भेल भाइ। बहुत-बहुत खुशी। अहाँ अजुका काज काल्हि पर नहि टारलहुँ।' हम एहन खुशी मंडलक चेहरा पर देख' चाहैत रही। देखलहुँ हुनकर चेहरा कहल बातक समर्थन मे पसरल रहय। ओ ठीके प्रसन्न भेल रहथि। मंडल हमर नीक मित्र छथि। मनोविज्ञानक प्रोफेसर छथि। दुनू गोटे एक्के कॉलेज मे छी। हम समाजशास्त्र मे ओ मनोविज्ञान मे। बहुत गरीब पृष्ठभूमि सँ एत' धरि पहुँचल छथि। जीवन जीबाक अपन एक ढंग छनि हुनकर। कहलनि– 'चलू, चलल जाय।' हम हुनका संग बजार जा क' एकटा कुरता कीनि अनलहुँ। बेस लम्बा। करिया रंगक कुरता। जाहि पर पीयर आ हरियर रंगक गोसबारा धारी रहय। मंडल बजारे सँ अपन डेरा चल गेल रहथि।

हम डेरा आबिक' पैंट-शर्ट खोलि पहिने उजरा पैजामा पहिरलहुँ। देखलहुँ अपन देह मे पैजामा। एकटा अट्ठारह-बीस बरखक नवयुवक मोन पड़ल। ओहि नवयुवक सँ हम नहि किछु त' तीस बरख अवश्य जेठ होयब। शोभा देखलनि त' चिचिअएली।

–'अरे वा, अहाँ पैजामा पहिरिलियै! ई की फुड़ि गेल अहाँके? आइ धरि त' पैजामा अहाँ कहियो नहि पहिरलहुँ।' कहलियनि– 'एखन की देखलियैए। जखन कुरता देखबै तखन ने।' हम हबड़-हबड़ पन्नी सँ कुरता निकाललहुँ। हाथ सँ पकड़िक' ओकरा शोभाक सोझाँ लटकेलहुँ। शोभाक मुँह सँ कोनो शब्द नहि निकललनि। हम कखनो कुरता आ कखनो शोभाकेँ देखि रहल छलहुँ। ओहो सैह

क' रहल छली। हुनका चकबिदोर लागल छलनि। देखलहुँ हुनकर आँखि मे रोशनी चमकलनि। बजली– 'हे भगवान ई की केलियै यौ? एहन कुरता?' हम साफ देखलहुँ शोभाक नाक घोकचि गेल छलनि।

बियाहक पच्चीस बरख बीति गेल अछि। पच्चीस बरख कोनो कम नहि होइ छै। चिन्ह' त' लगले छियनि हुनका। एहि पच्चीस बरख मे बहुत किछु सिखने छथि ओ। चेहरा आ संवादक तालमेल त' ठीके सँ सिखने छथि।

–'हमर देह पर नहि नीक लागत की?' हम हुनका उकसेबाक चेष्टा केलहुँ। ओ जेना कने सम्हरली। बजली– 'नीक किए नहि लागत। असल मे एहन कपड़ा अहाँ नहि ने पहिरैत छी। ककरो देखिक' अजगुत लगतै।'

–'अहूँके देखि क' लागल?' हम फेर हुनका टोन' चाहलहुँ।

–'त' हमरा नहि लागत? सभ दिन अहाँके सादा-सादी देखलहुँ। उज्जर रंगक कपड़ा। खासक' कए कुरता-धोती त' अवश्ये उज्जर। बेसी फूल-फाल रंगीला त' कहियो ने देखलहुँ अहाँके। जहियासँ बियाह भेल एहिना देखैत छी।'

हम सोचलहुँ बात त' ठीके कहैत छथि। बियाह सँ पहिनहि प्रोफेसर बनि गेलहुँ। किताबक दुनिया मे चल गेलहुँ। फेर बाप बनि गेलहुँ। बीच मे शुभ्र-शाभ्र सन अपन छवि नीक लाग' लागल। छवि बनेबाक पाछू कखन उज्जर रंग देह पर चढ़ैत गेल पते ने चलल। अपनाके फराक बनेबाक चेष्टामे कत' सँ कत' चल गेलहुँ।

कुरता पहिरबाक मोन हुअ' लागल। एक-एकटा बटन मोलायम हाथें खोललहुँ। नवका कपड़ाक बटन सभ खोलै मे कठिन होइ छै। धैर्यक परीक्षा लैत छै। अगुतेलासँ झंझटि। जोर लगेलासँ टुटबाक डर। आस्ते-आस्ते चारू बटन खोलि देलियै। पहिर' लगलहुँ त' नाक मे नबका कपड़ाक सुगन्धि भरि गेल। आह, की सुगन्धि होइ छै नव वस्तुक। एहि सुगन्धि लेल लोकक मोन कत्ते व्याकुल रहैत छै। तखने मोन पड़ला एकटा मित्र। डॉक्टर छथि। हुनका डेरा पर एकबेर ठहरल रही। भोर मे सुनलहुँ अपन कनियाँ पर ओ तमसाइत रहथि। कियो हुनकर नवका अखबारक तह बिगाड़ि देने रहनि। पढ़ि लेने रहनि अखबार। हुनकर क्रोध हमरा अजीब लागल रहय तहिया। अखबारक तह बिगड़ि गेलै त' की भेलै। अखबार त' ओहिना छै। पढ़ि लेथु। बूझल छल ओ पैखाना मे अखबार पढ़ैत छथि। पुछलियनि त' कहलनि– 'अरे, अखबारक सभटा सुगन्धि उड़ा देलक। तह टूटि गेलै त' नवका अखबारक अपूर्व सुगन्धि उड़ि गेलै ने। आब हमरा नदी कोना

होयत?' हम आश्चर्य मे पड़ि गेल रही। ई अखबारक सुगन्धिसँ नदीक कोन सम्बन्ध छैक। डॉक्टर अपने कहलनि– 'नहि बुझलियै। अखबारक तह खोलै छियै त' ओहि सँ एकटा अपूर्व सुगन्धि निकलै छै। तेलाइन, तीताइन किछु अजीब सन। ओहि सुगन्धिसँ हमरा 'स्टीमुलेशन' होइए। जुलाबक काज करैए ओ। आइ हमरा नदी फिरै मे दिक्कत भ' गेल।'

–'से किए, कोनो नवका अखबार मंगा लिअ।' हमरा हँसी लागि रहल छल। मुदा डॉक्टर गम्भीर छला।

कुरताक सुगन्धि हमरा मे उल्लास भरलक। स्फूर्ति आयल देह मे। पहीरिक' अपना दिस तकलहुँ। शोभाकें पुछबाक इच्छा भेल। मुदा शोभा त' ताबत कोठलीसँ निकलि गेल छली। भनसाघर मे रहथि। हम ओत्तहिसँ चिकरलहुँ– 'कत' गेलहुँ? देखियौ ई कुरता केहेन लगैए हमर देह मे?' ओ लगले अयली। एक नजरि हमरा पर फेकलनि। बजली– 'नीक त' लगैए। मुदा कने कोनादन सेहो।'

–'कोनादन की?' हम पुछलियनि।

–'यैह, एहन कपड़ा अहाँ पहिरैत नहि ने रही। कने दोसर तरहक।'

–'दोसर तरहक की? बदलल लगैत छी? दोसर लोक?' हम हुनका पूरा खोल' चाहैत रही।

–'दोसर लोक त' नहि। मुदा कम बएसक जरूरे भ' गेल छी। बएस पाछू चल गेल अछि।'

–'कत्ते पाछू?'

–'करीब दस बरख त' अवश्ये।' ओ आब हँस' लागल रहथि। लागल स्थिति के आब ओ थाहि लेने छथि। दस बरख पाछू चल गेला पर हमरो खुशी भेल छल। एक झटका मे दस बरख पाछू चल गेलहुँ। फेर सँ जीवन जीयब। मुदा ई दस बरख छोट भेनाइ कोनादन कोना भ' गेल? पुछलियनि– 'दस बरख छोट भेनाइ कोनादन लगै छै। से कोना?' ओ एखनो मुसकुरा रहल छली। कहलनि– 'अहाँ दस बरख पाछू चल जायब त' हमरो जाय पड़त की ने? से नीक लागत अहाँके?' आब हँसबाक बारी हमर रहय। कहलियनि– 'अहाँके पाछू जेबाक कोन काज अछि। अहाँ त' ओहिना दस बरख पाछू लगिते छी।' आब ओ आँखि गुड़ारि के हमरा तकलनि। कोनो उत्तर नहि देलनि। चुल्हा पर लोहिया चढ़ल रहबाक गप्प कहि चल गेली। हम अयना मे अपन देह देख' लगलहुँ। देह पर कुरता के देखलहुँ। मोन भेल एही कुरता मे अपन सरहोजि सँ

भेंट क' आबी। ओ लगे मे रहैत छली।

डेरासँ नीचा उतरलहुँ आ विदा भेलहुँ। बगलबला फ्लैटसँ हरेराम देखलनि। हरेरामजी गायक छथि। रेडियो मे गबैत छथि। मंच पर सेहो कार्यक्रम करैत छथि। श्रोताके पसिन्न पड़ैत छथिन। देखिते चहकि उठला– 'अरे वाह! प्रोफेसर साहेब, ई अपन चोला कोना बदलि लेलहुँ? एहन लहकदार कुरता? ताहि पर पैजामा! साफे बदलि गेलहुँ अछि।'

–'नीक नहि लगैए की?' हम पुछलियनि।

–'आहि, नीक किए नहि लागत। एकदम निराला लगैत छी। आब खाली एकटा ठेकाके कमी रहि गेल अछि।' हम हँसैत कहलियनि– 'तखन त' अहाँ संग नीक संगति रहत। संगतिया भ' जायब हम अहाँक।'

ओ जोर सँ हँसला। हँसैत रहला। हम आगू बढ़ि गेलहुँ। सरहोजि ओहिठाम पहुँचलहुँ। ओ सन्ध्याकालीन पूजा मे छली। सरहोजि हमर खूब धार्मिक लोक छथि। घरे मे एकटा मन्दिर बनौने छथि। पूजा मे दुनू साँझ तीन घंटा लगैत छनि। एहन कोनो भगवान नहि भेटता जे हुनकर मंदिर मे नहि रहथि। हम ड्राइंग रूम मे बैसि गेलहुँ। संयोगसँ ओ जल्दिए फारकति पाबि आबि गेली। अबिते कहलनि– 'अरे ओझा! आइ ई कोन रूप ध' लेलहुँ अहाँ?'

–'अहींके त' देखब' अयलहुँ अछि। केहेन लगैए?'

–'आर कोनो कपड़ा नहि भेटल? दरबज्जाक परदा पहीरि क' चल अयलहुँ। केहेन नीक लोक छलहुँ। ई की पहीरि लेलहुँ?'

–'से किए, नीक नहि लगैए की?' हम पुछलियनि। हमरा आनन्द भ' रहल छल। ओ बजली– 'नीकक कोन गप्प छै। नीक त' आरो लाग' लागब जँ पैजामाक बदला नूआ पहीरि लेब।' हमरा हुनकर जबाब मे हास्य आ व्यंग्य दुनू बुझा पड़ल। हँसी लागल। हँसैत कहलियनि– 'तखन त' आर नीक होयत ने। एकदम्मे अहाँ सन भ' जायब। अहाँक सखी-बहिनपा।' भरिसक ओ घमि गेली। हँसी लगलनि। चाह-ताह पिऔलनि। जलखैक आग्रह केलनि। हम घूरिक' डेरा दिस विदा भेलहुँ। सोचलहुँ ई कुरता-पैजामा त' बड़-बड़ रंग देखौलक। कुरता आब आर नीक लाग' लागल।

रस्ता मे परशुरामजीसँ भेंट भ' गेल। परशुरामजी भविष्यवक्ता छथि। लोकक कुण्डली बनबैत छथि। औंठी प्रिसक्राइब करैत छथिन। जबानिये मे मुदा वृद्ध सन लगैत छथि। कपड़ा मे कमेकाल साबुन लगबैत छथि। हमरा कने ग'र

सँ देखलनि। चश्मातर हुनकर आँखि स्थिर भ' गेल छलनि। कहलनि– 'प्रोफेसर साहेब, ई कुरता-पैजामा अहाँ नहि पहिरू। अहाँके ई नीक नहि लगैए।' हमरा फेर हँसी लागल। मुदा हँसलहुँ नहि कहलियनि– 'असल मे हमरा पर एखन साढ़ेसाती चलि रहल अछि। कारी रंग जरूरी अछि।' ओ प्रसन्न भेला। कहलनि– 'तखन त' नीक कएल। अवश्य पहिरू। शनिक ई प्रिय रंग थिकनि। नीक रहत।' हम परशुरामजीकेँ नमस्कार करैत विदा भ' गेलहुँ। ओ ठाढ़े रहला। हमरा दिस तकैत रहला। डेरा पर अयलहुँ त' शोभा कहलनि जे संतोषक चिट्ठी आयल अछि। संतोष, हमर बालक जे डॉक्टरी पढ़ैत छथि। चिट्ठी ल' कए पढ़लहुँ। संतोष अपन पढ़ाइ-लिखाइक मादे लिखने छला। लिखने छला जे एकटा सौंस मुरदा के ओ चिरने छला। मनुक्खक सभटा अंग देखने रहथि। तखन इहो लिखने छला जे 'बदलैत लोक आ मिथिलाक जातीय संरचना' पर छपल हमर निबन्ध प्रोफेसर चट्टोपाध्यायकेँ पसिन्न पड़ल छलनि। चिट्ठी पढ़ि लागल रहय जे संतोषके हमर देह मे ई कुरता खराब नहि लगतनि।

राति मे मंडलक फोन आयल। पुछलनि– 'भाइ, रतुका पान खेलहुँ?'

–'रतुका पान?' हम बुझियो के कने अकचकेलहुँ।

–'अरे आइ-काल्हि पान त' अहाँ साँझक बादे शुरू करैत छी ने।' हम हँसलहुँ। मंडलो हँसला। ओ शुभरात्रि कहलनि। हमहूँ कहलियनि।

दुनू बेकती खा-पीबि क' बिछान पर गेलहुँ। आर त' कियो डेरा मे छल नहि। बेटी सासुर मे आ बेटा कलकत्ता मे। हम रातियो मे कुरता-पैजामा नहि उतारलहुँ। शोभा सेहो किछु नहि कहलनि। राति मे निन्न मुदा नीक भेल। एहन निन्न कहियो-कहियो होइत छैक। भोर मे उठलहुँ त' अनुभव भेल जे हमर देह पर किछु अछि। देखलहुँ शोभाक हाथ थिक। शोभा सूतल छली। हुनकर हाथ हमर कुरता पर छल। लागल जेना एहि हाथक प्रतीक्षा बहुत दिन सँ रहय...।

■■

छल

भोली झा गामसँ पटना आयल छल। ओकर आगमन सँ हम बहुत प्रसन्न भेल रही। एहन प्रसन्नता कहियो-कहियो होइत अछि। प्रसन्नताक कारण रहय जे भोली झा हमर लंगोटिया अछि। नेनपनक अधिकांश समय ओकरे संग बीतल छल। दोसर कारण इहो रहय जे ओकरा संग कहियो झगड़ा नहि भेल। हमरे किए, ओकरा ककरोसँ झगड़ा नहि भेल छलैक। असल मे ओ लोके तेहन अछि। झगड़ाक स्थितिए नहि बन' देत। एहन मखौलिया लोक जीवन मे कम्मे देखने छी। डेरा पर अबिते कनेकालक बाद कहलक– 'सुनह, बौआसीनके कहि दहुन जे आइ हम अगबे कोबी-मटरक तीमन खायब। बहिंचो... अल्हू खाइत-खाइत अकच्छ भ' गेल छी।'

हमरा हँसी लागल। मुदा हँसी रोकिक' ओकरा पर हुड़कलहुँ– 'वाह, अहाँ बड़ काबिल छी ने! हमरा जे जुड़त से ने खुआयब।'

मुदा ओ मानैवला कहाँ छल। कहलक– 'हम भरि रस्ता बसमे कोबीएक मादे सोचैत आयल छी। आइ अरविन्दक ओहिठाम कोबी-मटर खायब। आ से हम खेबे करबह। बौआसीनक हाथक कोबी खेना बहुत दिन भ' गेल अछि। आह, की सनगर बनबैत छथि।'

हमरा लागल परदा अ'ढ़ सँ रेखा सेहो सुनि रहल छथि। भरिसक हँसियो रहल छथि। आब हमर किछु चल' बला नहि अछि। ओ कोबी-मटर घर मे नहियो हेतनि त' बजार सँ आनि भोली झा लेल बनाइये देथिन। एहि लेल आब हमरा कोनो तरद्दुत करबाक काज नहि।

भोली झा हमरासँ तीन मासक जेठ रहय। एतबे दिनक अन्तरक कारणे ओ रेखाक सोझा नहि जाइत छल। हमरा दुनू बेकती के ई बात अजगुत लागय। मुदा भोली झाके की कहि सकैत छलहुँ। ओ त' जे ठानि लेलक से करबे करत। एहिसँ ओकरा कियो हिला नहि सकैत अछि।

भोली झा गाम-घरक गप सुनाब' लागल रहय। खेती-बाड़ीक खिस्सा कह' लागल। बीया-बालिक समस्या पर आबि गेल। अकस्मात् हम पूछि देलियै– 'ऐँ, हौ! सुनने रहिय' जे तों मुखियाक चुनाव मे ठाढ़ हेबह। किए नहि ठाढ़ भेलह? हमरा लगैए तों जीति सकैत छलह।'

ओ हँसल। फेर बाजल– 'ठाढ़ हेबाक त' ठीके मोन भेल रहय। जीतियो सकैत छलहुँ। गुआर, अमात, कियोट, मुसलमान सभ सेहो भोट दितय। ब्राह्मणेक भोट कम भेटितय। मुदा अपन इदरिश ठाढ़ भ' गेल। ओ ठाढ़ भ' गेल त' लागल जेना हमहीं ठाढ़ भ' गेल छी। ओकर जमि क' समर्थन केलियै। जीति गेल ओ। तोरा त' सभटा बुझले हेतह।'

हम स्वीकार मे मुड़ी हिलेलहुँ। ठीके हमरा सभ किछु बूझल छल। भोली झा दिन-राति एक क' के इदरिश के जीतौने रहय। इदरिश सेहो हमर सभक संगी अछि। एक्के संग सभ मैट्रिक पास केने रही। भोली झा, इदरिश, रामचन्द्र, हरिशंकर, तेजू, पृथ्वी, बुदुर सभ एक्के संग गाम सँ स्कूल जाइ। पैरे टहलैत गप-सप्प करैत स्कूल पहुँचि जाइ। रस्ता कोना कटय से की कनियो पता चलय। ई नित्यके नियम भ' गेल छल। भोली झा के पुछलियै– 'इदरिशके ब्राह्मण सभ कोना भोट द' देलकै है। काली मिसर त' सेहो ठाढ़ रहथि। हुनका त' सुनैत छी दुइयो सए भोट नहि पुरलनि। ई कोना भेलै?'

भोली झा एकटा जोरगर ठहक्का लगौलक। फेर कहलक– 'अरे, जकरा संग भोली झा रहतै से त' जीतबे करत ने हौ। इदरिश लोकक बड़ काज करैत छै। बिना कोनो भेद-भावके। ईमानदार सेहो अछि। लोक के ओकरा पर विश्वास छै। गाम मे सभक संग ओकरा आपकता छै। तखन कोना ने ओ जीतितय। ओकरा त' जितबेक छलै। ओ जीतल। देखि लिहक कत्ते काज करैत अछि ओ।'

इदरिशक मुखिया चुनल गेला पर हमरो खुशी भेल रहय। बधाइ पत्र पठौने रहियै। ओहो उत्तर देने छल। किछु दिन पूर्व पटना आयल त' डेरा पर आबि भेंटो क' गेल। बहुत उत्साह मे रहय। ओकर उत्साह नीक लागल छल। सभसँ बेसी खुशी एहि बातक रहय जे एकटा ठीक लोक मुखिया चुनल गेल अछि। तै पर सँ हमर स्कूलिया संगी सेहो अछि। गामक विकास करबाक लेल कटिबद्ध भेल अछि। भोली झा संग ओकरा मादे बहुत रास गप-सप्प होइत रहल। बहुत राति धरि हम सभ गपियाइत रहलहुँ। खाइ लेल बैसलहुँ त' देखलहुँ जे बाटी मे कोबी-मटरक तीमन परसल अछि। ताहि पर सँ ओलक सन्ना सेहो छल। रेंची सँ झँसिगर क' बनल। रेखाकेँ बूझल छलनि जे भोली झाकेँ ओलक सन्ना पसिन्न छैक। केहनो कबकब ओल ओकरा नीक लगै छै। कहियो जीह नहि कटै छैं। ओ खेबा लेल बैसल त' भोजन देखि खूब प्रसन्न भेल। सुआदि-सुआदि क' खाय

लागल। हमरा ओकर खुशीसँ प्रसन्नता भ' रहल छल। पटनाक एकरंगाह जिनगी मे एहन मित्र सभक अयला पर समय जेना बदलि जाइत अछि। जतेक दिन रहत हुलसल-फुलसल रहब। खाइतकाल भोली झा कहलक— 'एकटा बात कहियह। आगू मे थारी अयला पर जे किछु परसल रहय तकरा देखि खूब प्रसन्न हेबाक चाही। प्रसन्नतासँ खयला पर अन्न देह मे लगैत छै। मुदा ई प्रसन्न हेबाक बात हम तखन बुझलहुँ जखन हमर उपनयन भेल।'

हम ओकरा दिस ताक' लागल रही। प्रसन्नतासँ भोजन करबाक लेल उपनयनक कोन प्रयोजन छै, से हम नहि बूझि सकलहुँ। कहलियै— 'तों ओहिना गप्पी रहि गेलह। अँए हौ, ई त' सभकेँ बूझल छै जे खेबा मे नाकर-नुकर नहि करी। खेबाकाल मोन खिन्न नहि रहय। प्रसन्नतासँ जे भेटय से खाइ। एहि मे उपनयन कत' सँ बीच मे आबि गेलइ?'

भोली झा मुसकुराय लागलें छल। बाजल— 'प्रसन्नतासँ खेबाक लेल उपनयनक कोनो प्रयोजन नहि छै। मुदा प्रसन्नतासँ खेबाक बात हम उपनयनक बादे बुझलियै। उपनयनक बाद सन्ध्या वन्दन करबाक लेल बाबू हमरा एकटा पातर पोथी देलनि। सदाचार संहिता। ओहि मे ब्रह्म मुहूर्त्त मे जगलाक बादसँ राति मे सुतबा धरिक दिनचर्याक मंत्र सभ देल रहैक। दतमनि करबाक लेल। भोजन करबाक लेल। नदी फीरि हाथ मटियेबाक लेल। सन्ध्या आ पूजा करबाक लेल। सुतबाक लेल। सभ किछु लेल। एही संग इहो लिखल रहैक जे दतमनि कोन गाछक नीक होइ छै। दतमनि कनगुरियाक अग्रभागसँ बेसी मोट नहि रहबाक चाही। ओहीं मे भोजनकाल लेल सेहो क्रिया आ मंत्र सभ देल रहै। लिखल रहै जे आगू मे आयल अन्नके देखि प्रसन्न भ' हाथ मे जल ली। तखन मंत्र पढ़ी। ओ मंत्र सभ त' आब एक्कोटा मोन नहि अछि। आ ने कहियो नेवैद्ये आदि निर्धारित देवता सभकें देलहुँ मुदा अन्नके देखि प्रसन्न हेबाक बात मोन मे रहि गेल। तकर हिसको लागि गेल। कोनो केहनो अन्न-तीमनके देखि मोन प्रसन्न भ' उठैत अछि।'

.'मुदा प्रसन्नता सँ खयला पर अन्न देह मे लगैत छै से त' ओहि मे नहि लिखल छै। से तों कोना बुझलहक?' हमरा भोली झाक गप नीक लागि रहल छल। हम कने ओकरा कचकचेलहुँ। मुदा ओ खिसिआयल नहि। कहलक— 'तोहूँ बूड़िक बूड़िये रहि गेलह। रौ बूड़ि, खुशीसँ जे काज लोक करतै ताहि सँ त' भाभंस हेबे करतै ने। कानिक' काज करबहक आ चाहबह जे काज भ' जाय त' से कोना

हेतह! खेबाक प्रयोजन की छै? देह-मन-प्राण पोसाय। पुष्ट हुअय। अन्नके त' ब्रह्म तक कहल गेलैए। भोजनो त' एकटा काजे छियै। से प्रसन्नता सँ नहि करबहक त' अभीष्टक प्राप्ति कोना हेतह?'

कहिक' भोली झा हँस' लागल। बहुत दिन पर एतेक आनन्द सँ भोजन केने रही। आइ खेनाइक स्वादो अपूर्व लागल। कहलियै— 'आब एत्ते दिन पर अयलह अछि त' हफ्ता भरि रह। हफ्ता सँ कम मे बात नहि फड़ियेतै।'

भोली झा मुँह बनौलक। बाजल— 'इह, हमरा गाम पर कोनो काज नहि अछि की? पटनाक त' काज एक्के दिनका अछि। काल्हि भ' जायत। परसू हम चल जयबह।'

—'अच्छा, जेबे करबह। कम सँ कम तीन दिन रुकि जाह। आइ सात तारीख छियै। नौ तारीख के हमर कोऑपरेटिवक आम सभा छियैक। ओहि मे डेलीगेट सभ के भी.आइ.पी. ब्रीफकेस बँटेतै। एकटा ब्रीफकेस मोन होइए तोरो दिया दी। कत्ते दिन सँ तोरा कोनो सनेश नहि देलियह अछि।'

भोली झा फेर ठहक्का लगौलक। कहलक— 'सनेशक बात तों ठीक कहैत छह। बौआसीन पी.एच.डी. केलथुन। अपने कोऑपरेटिवक कहाँदन बड़का अफसर भ' गेलह। तकर आइ धरि किछु सनेश नहि देलह अछि। से त' तोरा देबेक चाहियह। मुदा तोहर आम सभा मे हमरा कोना भेटत ब्रीफकेस? हम त' डेलीगेट नहि छी। हम त' कोऑपरेटिवक ने तीन मे ने तेरह मे।'

ओ हमरा दिस ताक' लागल। हम मुसकियाइत कहलियै— 'तकर चिन्ता तों किए करैत छह। इंतजाम हमरा करबाक अछि ने। आम सभा मे भागो लेबह। ओहिठाम हमर चलतियो देखबह। बढ़ियाँ भोजो परि लगतह। ताहि पर सँ विदाइ मे ब्रीफकेसो भेटि जेतह। भौजीके देखा देबहुन। हुनको नीक लगतनि।'

भोली झा किछु नहि बाजल। मुसकुराइत रहल। हमरा दिस तकैत रहल। खेलाक बाद हम सभ फेर कनीकाल गप केने रही। तकर बाद सूति रहल रही।

असल मे हमर कोऑपरेटिवक आमसभा नौ तारीख के हेबाक रहै। आमसभा मे डेलीगेट सभ के एकटा क' भी.आइ.पी. ब्रीफकेस भेटबाक व्यवस्था छलै। पाँच सएसँ बेसी डेलीगेट रहै। ब्रीफकेसक कारणे सभ बेर आमसभा मे बहुतरास बोगस डेलीगेट बनि जाइ। लागल-भिड़ल लोक अपन संगी-साथी, भाइ-बन्धु के ब्रीफकेस लेल डेलीगेट बनबा दैक। ब्रीफकेसो भेटै। भोजो खाय।

भाषणो सुनय। फेर अपन-अपन घर जाय। एहि बेर हमहूँ सोचलहुँ जे भोली झाके एकटा ब्रीफकेस भेटि जेतै त' की क्षति। सभ बेर आन कत्ते करमचारी-अफसर त' ई काज करिते अछि। डेलीगेटक पंजीकरणक प्रभारी मिसरजी छला। सोचलहुँ, एक गोटाक इंतजाम धराइये देता। मिसरजी सँ दोसर दिन गप केलहुँ। ओ कहलनि जे रमजानक मास चलि रहल छैक। तैं मुसलमान डेलीगेट बेसी नहि आओत। अहाँक संगीके कोनो मुसलमान डेलीगेटक नाम पर ढुका देबनि। ब्रीफकेस भेटि जेतनि। हम आश्वस्त भेल रही। मिसरजी एकबोलिया लोक छथि। बेर पर पलटी नहि मारता। कहलियनि– 'सैह, देखब। भोली झाके कहि देने छियैक। बेर पर बेइज्जत नहि करायब।' ओ फेर सँ आश्वस्त केने रहथि। हम निश्चिन्त भ' गेल रही। भोली झाके एकटा ब्रीफकेसक व्योंत भ' गेलै।

डेरा अयला पर अयलहुँ त' देखलहुँ जे भोली झा हमरा सँ पहिनहि घूरिक' आबि गेल छल। बंटी आ गुड़िया संग लागल रहय। गुड़ियाक कनिया-पुतरा बना रहल छल। कनियाक कपार पर टिकुली सटबाक इंतजाम मे रहय। एकटा लाल टिकुली साटि रहल छल। फेर कनियाकेँ चुनरी पहिराब' लागल। अपस्याँत रहय। हम कुर्सी पर बैसि क' ओकर तल्लीनता देख' लगलहुँ। ओ हमरा दिस एक नजरि ताकि क' खाली मुसकायल छल। बंटी आ गुड़िया ध्यानसँ कनियाक सिंगार-पेटार देखि रहल रहय। हम कहलियै– 'ई कोन काज मे तों लागि गेल छह? कनिया-पुतरा मे?'

ओ हँसल। फेर बाजल– 'कनियाके सजा रहल छियै। आइ एकर बियाह हेतै। एहि पुतरा संगे। नहि गै?' ओ गुड़िया दिस ताकिक' पुछलकै। गुड़िया हमरा दिस ताकिक' हुँकारी भरलक। ओकर चेहरासँ प्रसन्नता चूबि रहल छलैक। ध्यान एकदम चुनरी पहिरैत कनिया पर रहै। तखने बंटी बाजि उठल रहय– 'आ हम जेबै बरियाती। बियाहक फोटो सेहो खिचबै।' ओ एकटा खेलौनाबला कैमरा देखौलक। फट् सँ हमर फोटो खींचि लेलक। मुदा गुड़िया झंझटि ठाढ़क' देलकै।

–'इह, तूँ केना जेबही बरियाती? तूँ त' कनिया के भाइ छही। तूँ त' लाबा छिड़िएबही ने?'

हमरा सभके हँसी लागल। भीतरसँ रेखा सेहो जेना हँसली। मुदा बंटीक मुँह अनोन-बिसनोन सन भ' गेलै। साइत ओकरा ई बात पसिन्न नहि पड़लै। गुड़िया के कहलकै– 'ई कोनो तोहर बियाह छियौ जे लाबा हम छिड़िएबौ।

बरियाती त' हम जेबे करबै।'

आब भोली झाक काज खतम भ' गेल छलै। ओ कनिया के घुमा-फिराक' देखि रहल छल। प्रसन्न भ' रहल रहय। तखने बंटी-गुड़ियासँ पुछलकै– 'तूँ सभ कत' देखलही जे भाइ लाबा छिड़ियबै छै बहीनिक बियाह मे?'

गुड़िया कहलकै– 'से किए, परुँका उषा दीदीक बियाह मे देखलियै। संतोष भैया नै लाबा छिड़ियौने रहथिन?'

हम तीनूके गप करैत देखि उठिक' कपड़ा बदलै लेल भीतर चल गेलहुँ। रेखा कहलनि जे भोली झा एखन धरि जलखै नहि कयलनि अछि। कहा पठौलियनि त' कहलथिन जे अरविन्द आओत त' संगहि करब। तखनसँ बंटी आ गुड़िया मे लागल छथिन। दुनू हुनकासँ खूब रीतिया गेल अछि। हम जलखै परसै लेल कहि फेर बाहर अयलहुँ। भोली झाकेँ कहलियै– 'छोड़ह आब कनिया-पुतरा। भ' गेलै सिंगार-पेटार। जलखै होइ आब।'

भोली झासँ कनिया-पुतरा ल' बंटी-गुड़िया चल गेल। दूनू गोटे जलखै कर' लागल रही। भोली झाकेँ चाउरक सोहारी नीक लगै छै। रेखा चाउरक सोहारी बनौने रहथि। ताहि पर सँ नोन-तेल आ कुच्चा अचार रहय। खाइत-खाइत कहिलियै– 'तोहर ब्रीफकेसक इंतजाम भ' गेलह। मुदा एकटा मुश्किल छह। तोरा मुसलमान बन' पड़तह।'

ओ हमरा दिस तकलक। बाजल– 'से की हौ? मुसलमान किए बन' पड़त?'

–'असल मे डेलीगेट मे मुसलमानेक जगह खाली रहबाक सम्भावना छै। एखन रमजान चलि रहल छै ने? की हेतै? क्यो तोरासँ किछु पुछतह थोड़े? पैजामा-कुरता त' तों पहिरते छह।' –हम कहलियै।

ओ कने काल चुप रहल जेना किछु सोचि रहल हो। फेर बाजल– 'हँ, से की हेतै? कत्ते बेर नाटक मे मुसलमानक पार्ट खेलायल छी। तोरा त' मोने हेतह ओ बहादुरशाह जफरक पार्ट। तों लेफ्टिनेंट हडसन बनल रह'।'

हमरा मोन पड़ल। अद्भुत खेलायल रहय भोली झा। कत्ते स्त्रीगण त' कान' लागल रहै। जखन लेफ्टिनेंट हडसन बहादुरशाहक दुनू बेटाक मूड़ी काटि क' एकटा थार मे राखि जेल मे बन्द बहादुरशाह लग अनै छै आ काटल मूड़ी पर सँ कपड़ा हटा ओकरा देखबै छै से देखि बहादुरशाह जफरक कारुणिक अभिनय आ

हडसनक क्रूर अभिनय दर्शकके बहुत दिन धरि मोन रहल छलै।

कहलियै– 'हँ, अद्‌भुत खेलायल रह' तों। बहुत दिन तक तोहर छवि बहादुरशाहक रूप मे लोकके मोन सँ हँटबे नहि करै। अंतिम दृश्य मे जे तों ओ प्रसिद्ध गजल गौने रह' भोली झा। कोन गजल रहै? पाँती सभ मोन छह?'

हम गजल मोन पाड़' लागल रही। लागल, भोली झा सेहो जेना स्मृति पर जोर देलक। बाजल– 'सभटा त' नहि, मुदा किछु टूटल-फूटल पाँती मोन पड़ैए। हँ ओ गजल रहै– 'लगता नहीं दिल मेरा उजड़े दयार में। तकर बाद किदन त'...दो आरजुओं मे कट गये दो इंतजार में। आ ओ जे अंतिम पाँती रहै हौ, आह अद्‌भुत रहै. दो गज जमीं भी न मिली कूचे यार में।'

भोली झा कनेकाल चुप्प रहल। फेर कहलक– 'आह, एकटा बात बुझलह। जुलुम बादशाह रहै बहादुरशाह। अंतिम मुगल। देशक प्रथम स्वतंत्रता-संग्रामक नायक। अस्सी बरसक बूढ़। कत्ते हिम्मति सँ लड़लै अंग्रेजक संग ओहेन अवस्था मे।'

भोली झाक चेहरा पर लस्सा सन गाढ़ दर्द जेना सटि गेल रहै। हम बात के बदलै लेल कहलियै– 'देखियह भाइ, आम सभा मे पकड़ैयह नहि। एकदम सँ मुसलमान बनि जेबाक छह तोरा। कियो बूझि नहि पाबय जे तों हिन्दू छह। जँ बूझि गेलह त' बड़ हँसी हेतह।'

भोली झा हमर बात पर मुसकुरेबाक चेष्टा केलक। फेर बाजल– 'ईह, से की हम ककरो बुझ' देबनि। ठीके-ठीक मुसलमान बनि जेबै की। देखि लियह।'

से ठीके भोली झा ओहि दिन एकदम्मे मुसलमान बनि गेल छल। भिनसरे सँ उत्साह मे रहय। पैजामा-कुरता पहिरलक। कहलक– 'अरविन्द देखह। मुसलमान बनबाक लेल हम तैयार भ' गेल छियह। मुदा एखन धरि अपन नामो हमरा नहि बूझल अछि। ताहि सँ की? मोन सँ हम तैयार छियह। चलह आब।'

फेडरेशन हाल मे बहुत गहमा-गहमी छल। भोरे सँ लोक जुटि रहल रहय। मिसरजी लग जखन भोली झाके ल' गेलियै त' ओ ओकरा देखिक' हँसला। कहलथिन– 'अहाँ त' सरिपहुँ मुसलमान लगैत छी। मुँहठानो सँ कियो नहि पकड़त।' फेर एकटा पुर्जी दैत कहलथिन– 'पुर्जी पर अपन नाम पढ़ि लियह आ रजिस्टर पर दसखत क' दिऔ।'

पुर्जीके ल' क' पहिने हम पढ़लहुँ। लिखल रहै– 'मुहम्मद असलम,

प्रतिनिधि, मिल्लत कोऑपरेटिव, दरभंगा।' पुर्जी भोली झा दिस बढ़ा देलियै। ओ रजिस्टर पर दसखत केलक। मुहम्मद असलम। फेर ब्रीफकेस लेलक। हम ओकरा ल' जा क' हॉल मे बैसा देलियै। तकरबाद अपन काज मे लागि गेलहुँ। आम सभा शुरू भ' गेल छल। कोऑपरेटिवक सचिव वार्षिक प्रतिवेदन पढ़' लागल रहथि। एक घंटा आर सभा चलल हेतै की हॉल मे गुलगुल सुनाइ देलक। फेर हल्ला हुअ' लागल रहै। हम दौड़लहुँ जे देखी की भेलै। बूझल छल जे एहि बेर वातावरण गरमायल छै। निदेशक पर्षदक चुनाव भोटसँ हेतै। आन बेर जकाँ हथउठौअलि पर काज नहि चलतै। वर्त्तमान प्रबन्धनक विरुद्ध लोकके बहुत शिकाइत रहै। लगैत रहय जे बोर्ड बदलि जेतै। तें भेल जे भोटे कारणे कोनो हल्ला भेलैक अछि। मुदा हॉल मे पहुँचलहुँ त' देखल जे भोली झा जोर-जोर सँ ककरो पर बिगड़ि रहलए। किछु लोक ओकरा घेरने ठाढ़ छल। हम लपकि क' ओकर लग गेलहुँ। अनचिन्हार सन ओकरा सँ पुछलियै– 'की भेल अहाँके? किए चिकरि रहल छी? शान्त रहू। सभा चल' दिऔ। डिस्टर्व भ' रहल छै।'

ओ तामसे जेना माहुर भेल छल। बाजल– 'अरे, ई हाकिम तखनी सँ हम्मर मजहब के की-कहाँ कहि रहल छथ। कहै छथ जे इसलाम बहुत कट्टर मजहब हय। तलवार के जोर पर चलै हय। मुसलमान सब गायके माँस खाइ हय। हिन्दू के काफिर कहै हय। हम तब्बे से हिनका समझा रहल छली। अरे भाइ, ऐ मे हम्मर की कसूर हय। एतना दिन सँ हम सब एक-दोसराके संग रहल छी। तब्बो एक-दोसरा के नहि समझली? कौआ के पाछू दौड़ल जाइ छी। पर ई मानिते नहि छथ। की-कहाँ बकने जाइ छथ।'

भोली झाक चेहरासँ उत्तेजना टपकि रहल छलै। ओ जोर-जोर सँ बाजिए रहल रहय। आब हॉलक आनो लोक सभ ओत' पहुँच' लागल छल। हम चोट्टे भोली झाक बाँहि पकड़लहुँ आ घिचने-तिरने हाल सँ बाहर आबि गेलहुँ। ओकरा ठेलने हाल सँ बहुत दूर ल' अनलहुँ। फेर ओकर देह के झमारि क' चिकरलहुँ –'भोली झा...?'

एहि पर ओ हमरा दिस ध्यान सँ तकलक। फेर नहुँए सँ बाजल– 'अँए...।'

आब ओ टकटकी लगाक' हमरा देखि रहल छल।

■■

स्वाधीन

अजय आ जया नर्सिंग होम सँ डेरा आयल रहथि। जया गर्भपात करौने छली। नर्सिंग होमे मे दू दिन रह' पड़ल छलनि हुनका। अयबाकाल लेडी डॉक्टर अजयकें कहने रहनि– 'एबार्शन लेल अहाँ दुनू बेकतीक सहमति छल। मुदा देखब एबार्शन बेर-बेर नहि कराबय पड़य।' डेरा पर आबि क' जया गह्वरित भ' गेल रहथि। आँखिसँ अनायास नोर बहय लगलनि। ओ अजयक छातीमे अपन माथ सटा लेलनि। हुनकर माथक केस अजयक दाढ़ीकें छूबि रहल छल। अजय दुनू बाँहि पसरि जयाकेँ समेटि लेलनि। हुनका भेलनि जे आइ ओ वस्तुतः एक स्त्रीकेँ समेटि लेने छथि।

अजय आ जयाक बियाह दू वर्ष पहिने भेल रहनि। जया पहिले भेंट मे अजयकेँ पसिन्न पड़ि गेल रहथिन। अजय तहिया सीतापुरमे रहथि। आँखिक अस्पतालमे डॉक्टर। हुनके सीनियर रहथिन डॉ. आशीष। दुनूक डेरा अगल-बगल रहय। अजय बहुधा साँझक' डॉ. आशीषक डेरा पर पहुँचि जाथि। ओ डेरा हुनका भीतर उल्लास भरय। ओत' नहि जाथि तँ एम्हर-ओम्हर बौआयल घुरथि। कहियो क' खासक' शनिकेँ लखनऊ चलि जाथि। कोनो होटलमे रहथि। लखनऊ घूमथि। कहियोक' मोन बेसी उदास भ' जानि तँ होटलेमे बैसिक' शराब पीबथि। मुदा शराबसँ कहियो होश गुम नहि भेलनि। सभ दिन पीबाकाल एकटा संयम बनल रहलनि। दू पैगसँ बेसी कहियो नहि पीलनि।

डॉ. आशीष आ हुनकर स्त्री रचना अद्‌भुत मिलनसार लोक रहथि। समय हुनका लोकनिक सानिध्यमे कोना कटि जानि से बुझिये नहि पाबथि। ओना समय काटब अजय लेल कहियो समस्या नहि रहलनि। जहिया डेरासँ निकलबाक मोन नहि होनि तहिया किताब हुनकर संगी बनय। अपन विषय सँ ल' क' साहित्य धरि हुनकर रुचि छलनि। पहिने सभ तरहक किताब पढ़थि। मुदा पोथी पढ़बामे क्रमशः सेलेक्टिव होइत गेल रहथि। किताबक दुनियासँ बाहर रचना सन स्त्री ओ नहि देखने रहथि। माय तँ नेने मे मरि गेल रहथिन। कोनो बहीन रहबे ने करनि। पापा तेना ने जुगताक' पोसने रहथिन जे कोनो आन घरसँ तेहेन लगाओ नहि भ' सकलनि। नेना मे अधिक काल पापाक बहीन जे बिधवा रहथि, आयल करथिन।

अजय हुनका लाल पीसिया कहथिन। साइत ओ पापाक दुआरे अबथिन। अजयकेँ टुग्गर जानि आबथि। मुदा ओ जखन आबथि घरमे रमन-चमन भ' जाय। पुआ-पकवान बनय। राशि-राशिक तीमन-तरकारी बनबथिन लाल पीसिया। पापाकेँ हरदम बियाह लेल कहथिन। अजयक ताकुती हेबाक बात कहथिन। माय बिन सन्तानक टुग्गर भ' जेबाक डर देखबथिन। मुदा अजयक पापा हुनकर बात कहियो नहि माननलि। पता नहि लाल पिसिया अजयकेँ कहियो ने सोहेलखिन। हुनका संग कहियो रीतिएला नहि।

कॉलेजमे अजयक बैचमे कतेको छौंड़ी रहय। ओ सभ टिकुली जकाँ उड़ल फिरय। मुदा कियो अजयकेँ अपना दिस आकर्षित नहि क' सकल। कॉलेजमे कठोर आ घमण्डी बूझल जाथि। खाली अपना पढ़ाइसँ मतलब रखनिहार। मुदा डॉ. आशीषक स्त्री हुनका पसिन्न पड़ल रहथिन। ओ बहुत सहज छली। कोनो छद्‌म नहि। हुनका संग अजयकेँ बहुत गप्प होनि। डॉ. आशीष दुनू बेकती हुनका लेल आदर्श जोड़ी रहथिन।

तँ एक उदास साँझमे जखन अजय डॉ. आशीषक डेरा पर पहुँचल रहथि तँ गीतक स्वर सुनाइ देने रहनि। देखलनि एक अनचिन्हार युवती गीत गाबि रहल छल। आशीष आ रचना गीत सुनि रहल रहथि। ओ दरबज्जाक अ'ढ़मे ठाढ़ भ' गेल छला। गीत सुनय लगला।

सामरि, तोरा लागि अनुखन बिकल मुरारि
जमुनाक तट उपवन उद्‌वेगल फिरि-फिरि ततहि निहारि

अकस्मात अजय पर नजरि पड़ितहि ओ युवती एकाएक चुप्प भ' गेल छल। अजय कोठलीमे आबि गेल छला। डॉ. आशीष स्वागत कयने रहथिन– 'आउ, आउ, डाक्टर! बैसू, बेर पर अयलहुँ।' ...अजय बैसला तँ ओ परिचय करौलनि।

–'ई हमर भतीजी जया। बनारसमे रहैए। एकर पापा ओतय बीएचयू मे प्रोफेसर छथिन। फिलासफीमे। ई पोलिटिकल साइंसमे एम.ए. कयने अछि। अपन बैचक टॉपर अछि। एखन पी.एच.डी.क' रहलए। जनैत छी एकर सबजेक्ट की छै! 'चेलैन्जेज ऑफ डेमोक्रेसी इन कास्ट रिडन सोसाइटी।' ओ एक्के साँसमे बाजि गेल रहथि। जया हाथ जोड़ि नमस्कार केने छली। ओहो उत्तर देने रहथि। कने ध्यानसँ जयाकेँ देखने छला. पिण्डश्याम मुँह, कारी-कारी पैघ आँखि। सुन्दर देह-यष्टि। कुल मिलाक' जयाकेँ आकर्षक युवती कहल जा सकैत छल। अजय रचनाकेँ

कहलथिन– 'लगैए हमर अयलासँ बाधा भेल अहाँ सभके। केहेन सुन्दर गीत चलि रहल छल। रचना मुसकुराइत उत्तर देने रहथि– 'से किए, कार्यक्रम एखन बंद कहाँ भेल अछि। अहाँ बाधा किए होयब। की जया डॉ. अजयसँ लाज होयत अहाँके? ई अपने दिसक लोक छथि। अहीठाम डॉक्टर छथि अहाँक कका संगे। बगलमे डेरा छनि।' जया फेरसँ अजय दिस तकने रहथि। हुनकर ठोर पर मुस्की छल। अजय सेहो जयाकेँ देखि रहल छला। कहलथिन– 'बहुत सुन्दर कण्ठ अछि अहाँक। ताहि पर सँ विद्यापतिक गीत। कत' पायब? सुनबियौ ने आर।' डॉ. आशीष सेहो आग्रह केलथिन। जया एकटा आर गीत सुनौलनि। सभकेँ पसिन्न पड़लनि। जयाक स्वर जेना एकदम साधल छलनि। तकर बाद आर कतेक रास गप्प हुअ' लागल रहय। अजय जया सँ पुछने रहथिन– 'थीसिस सम्मिट करबामे आर कतेक समय लागत?' जया उत्तर देने छली– 'एक वर्ष तँ लागिये जायत। किछु काज बाँकी अछि। ओही लेल एत' सँ लखनऊ जायब।' थीसिसक सम्बन्धमे अजयक जिज्ञासा बढ़ि गेल रहनि। अहू सँ बेसी जया संग आर गप्प करबाक इच्छा जोर मारि रहल छल। कहलथिन– 'हमरा लगैए विषय तँ अहाँ एकदम आइ-काल्हिक रखने छी। हमरो रुचि भ' रहल अछि ओहि पर अहाँसँ गप्प करबाक। की तकर अनुमति देब अहाँ?' जयाकेँ कोनो आपत्ति नहि भेलनि। बजली– 'किएक ने, हमरो नीक लागत गप्प करबामे, कोनो आपत्ति नहि।' रचना दुनू गोटाकेँ गप्प करैत देखि पुछलथिन– 'की हम एहि गंभीर विषय पर चर्चाक बीच मे कॉफीक इंतजाम करी? जँ अहाँ सभके कोनो आपत्ति नहि हो।' उत्तर डॉ. आशीष देने रहथिन– 'अवश्य, अवश्य। एहिमे ककरो की आपत्ति भ' सकैत छै। मुदा ओहि संगे कने मखान सेहो भूजि लेब।' रचना चल गेली। अजय जयासँ पुछलथिन– 'लोकतंत्रक सभसँ महत्त्वपूर्ण कोन चुनौती लगैए अहाँके?' जया लगले उत्तर देलनि– 'सभ अपने लाभ लेल लोकतंत्रक उपयोग क' रहल अछि। लोकतंत्र व्यक्तिगत हित साधबाक साधन भ' गेल अछि।' अजय फेरो जिज्ञासा कयलनि– 'एहि व्यक्तिहित आ जातिहित मे केहेन सम्बन्ध लगैए अहाँकेँ?'

–'वस्तुतः जातिक उपयोग सेहो व्यक्तिहिते मे भ' रहल अछि। जातिक नाम पर लोक अपन हितसाधन क' रहल अछि।' अजयकेँ कने उकठ करबाक मोन भेलनि। कहलथिन– 'तखन तँ बढ़ियाँ छै की बेजाय। लोकक हित मे लोकतंत्रक उपयोग भ' रहलैए। चाहे कोनो नाम पर हो। जातिक नामपर अथवा

धर्मक नाम पर। की क्षति?' जया अजयक चलाकी बूझि गेली। कहलनि– 'लोक केवल व्यक्ति थोड़े थिक। लोक तँ समूह थिकैक। जनता छिऐ। जनसाधारण। आ ई जनताक समाज समानताक आधार पर होइ छै। जातिगत विभिन्नताक आधार पर नहि। लोकतंत्र लेल समानता जरूरी छै।' आब रचना कॉफी आ मखानक प्लेट ल' क' आबि गेल छली। अजय जयासँ पुछलथिन– 'लोकतंत्रक विकास लेल जाति अधीन समाजमे अहाँके सभसँ बेसी जरूरी कोन बात लगैए?' जया तुरंत उत्तर देलनि– 'जाति-निरपेक्ष सामूहिकता। व्यक्तिवादी सोचक स्थान पर सामूहिकता-बोधक विकास। जाहि समाजमे जते कम सामूहिकता-बोध छै ओतय ओतबे कम लोकतंत्र रहतैक। लोकतंत्रक नाटक भले ही होइत रहय।' डॉ आशीष कहलनि– 'जयाक हिसाबसँ तँ लगैए अपना ओहिठाम एखन दिल्ली दूर अछि। हम सभ नाटक देखि रहल छी।' जया लगले हस्तक्षेप केलनि– 'तें ई हालो अछि ने।' अजय जयाक सोझरायल विचारसँ प्रभावित भेल रहथि। ओ आर नीक लगलथिन हुनका। रचना सभकेँ कॉफी देलथिन। सभ मखानक संग कॉफीक स्वाद लेबय लागल रहथि।

तकर बाद अजयसँ जयाकेँ भेंटघाट हुअ' लागल रहनि। जया कहने रहथिन जे पी.एच.डी. केलाक बाद ओ लेक्चरशिप ज्वाइन करती। जया संग अजय सेहो लखनऊ गेल रहथि। डॉ. आशीष आ रचना एहि लेल उत्साहिते केने रहथि अजयकेँ। भरिसक ओ सभ अजय आ जयाक मादे सोचि लेने रहथि। चाहथि जे दुनू एक दोसराकेँ जानथि-बुझथि। एक संग टहलथि-घूमथि। अजय सोचय लागल रहथि जे जया संग बियाह क' क' जीवन सुखी रहत।

किछु वर्ष पूर्व मुदा अजयक पापा हुनकर विवाह अपन पसिन्नक परिवारमे करब' चाहने रहथि। अजयकेँ से पसिन्न नहि छलनि। पसिन्न नहि पड़बाक कैकटा कारण रहय। जे अजयक कनिया होइतथि से युवती बहुत गौरबाहि रहथि। अजयक एक घनिष्ठ मित्र ओहि परिवारसँ परिचित छल। ओहि घरमे बहुत धन रहैक। धनसँ अजयकेँ कोनो वितृष्णा नहि रहनि। जीवनमे धनक महत्त्व ओ जनैत छला। मुदा ओहि घर मे धन जाहि हिसाबें आयल रहय से हुनका पसिन्न नहि छलनि। ओ जनैत छलाह जे एहन घरमे धनोक कोनो महत्ता नहि रहि जाइत अछि। धन सूप महक भाटा भ' जाइत अछि। एम्हर-ओम्हर ओंघरायल फिरैए। धन नालीमे जेना बहैत रहैए। नालीमे बहैत धनसँ पोसायल ओ युवती अपनासँ बाहर किछु देखिये नहि पाबथि। पापा जखन ओहि घरसँ सम्बन्ध जोड़य चाहलनि तँ अजयकेँ कैक तरहें परबोधबाक कोशिश केलनि– 'देखू अजय। ओहि घरसँ सम्बन्ध होयब हमरा सभक लेल

सौभाग्यक बात थिक। एतेक पुरान प्रतिष्ठित घर। कनियाक प्रपितामह रायबहादुर! पितामह नामी वकील। बाप आइ.ए.एस.। सर-सम्बन्धी पैघ-पैघ ओहदा पर। कनियाँ एम.बी.ए. केने, गोर-सुन्दर। आधुनिक। तै परसँ एतेक दान-जैतुक। आर हमरा सभकेँ की चाही? अहाँ एहि सम्बन्धकेँ अस्वीकारि बहुत अनुचित क' रहल छी।' अजय पापाकेँ बुझेबाक चेष्टा केने रहथि– 'पापा! अहाँके कोन काज अछि दान-जैतुकक। ओहि घरसँ सम्बन्ध भेला पर की भेटि जायत? कथीके कमी अछि अपना सभकेँ। हम डॉक्टर भ' गेल छी। बढ़िया नौकरी लागि गेल अछि। अहूँ थोड़े दिनमे रिटायर करब। पाइके कोन कमी रहत?' पापा कने तमसायल रहथिन। मुदा फेर अपनाकेँ सम्हारैत कहलथिन– 'अजय! अहाँ बात नहि बुझैत छिऐक। एखन अहाँक वयसे कत्ते भेल अछि। हम दुनिया देखने छी। जीवनमे बहुत संघर्ष केने छी। हमरा बूझल अछि दुनिया बहुत खराब भ' गेल छै। विकासक विसंगतिमे लोक बहुत असुरक्षित भ' गेल अछि। ओहि घरसँ सम्बन्ध अहाँके सुरक्षा देत। कोनो जरूरते लाभ-हानिमे ओ सभ काज औता। हमर बात मानू। ओत' वियाह क' लिअ।' अजयकेँ भेलनि जेना पापा हुनका डरा रहल छथिन। हुनका लत्ती बुझैत छथिन। चाहैत छथि जे अपन बेटा लेल एकटा मजबूत मचानक इंतजाम भ' जाय। ई बात अजयकेँ अधलाह लगलनि। कहलथिन– 'पापा, हम अपने अपन सुरक्षा नहि क' सकब तँ की ससुरक बल पर सुरक्षित होयब? अहाँ एतेक आबेससँ हमरा पढ़ौलहुँ-लिखौलहुँ। हमरा मनुक्ख बनेबाक चेष्टा केलहुँ। आब हम अपन पैर पर ठाढ़ छी। तखन किए एतेक चिन्तित छी हमर भविष्यक लेल? कतेक दिन धरि हमर चिन्ता करैत रहब अहाँ?' पापा कनेककाल चुप्प भ' गेल रहथिन। साइत अजयक बात पसिन्न नहि पड़लनि हुनका। पता नहि किए ओ जिदिआयल जा रहल छला। आब ओ अपन स्वर बदलने रहथि। अजयके मोहपाशमे जकड़' चाहने रहथि– 'अजय, छह बरखक रही अहाँ जखन माय छोड़िक' चलि गेली। माय-बाप दुनूक काज हमरे करय पड़ल। हमर एकमात्र सन्तान छी अहाँ। हम कत्ते दिन रहब? चाहैत छी जे अहाँ सुखी रही। हम ई सम्बन्ध गछि लेने छिऐ। विश्वास रहय जे अहाँ अस्वीकार नहि करब। हमर बात मानि लिअ।' पापाक कण्ठ बाझि गेल रहनि। कनेककालक लेल अजय सेहो असमंजसमे पड़ि गेल रहथि। ठीके, पापा बहुत परिश्रमसँ हुनका पोसने छलथिन। नान्हिटासँ एतेक पैघ कयलथिन। कोन बयसे छलनि जखन माय मरि गेल रहथिन। पापा फेर दोसर बियाहो नहि कयलथिन। अजयक लालन-पालनमे लागि गेला। अजयक सोझाँ कहियो हुनकर मायकेँ नहि मोन पाड़लथिन। अपनाकेँ कठोर बना लेलनि। मुदा आइ मायक स्मरण करा रहल

छथिन अजयकेँ। माय-बाप दुनूक सम्मिलित कर्त्तव्यक एवजमे अवांछित बन्धनमे जकड़' चाहैत छथिन। किए? एही लेल ने जे अजय सुखसँ रहथु। कूसक कलेप नहि हो। दुखक नामोनिशान नहि रहय। अजयकेँ भेलनि जे बेटाक मोहमे पापा कमजोर भ' गेल छथि। एही संग हुनको कमजोर क' रहलथिन अछि। कहलथिन– 'पापा, अहाँ तँ एत्ते कमजोर नहि रही। हमरा बूझल अछि जीवनमे बहुत संघर्ष केने छी अहाँ। प्रतिष्ठासँ ल' क' अस्तित्व धरि कतेको बेर दाओ पर लागि गेल। मुदा अहाँ कहियो घबरेलहुँ नहि। झुकबो नहि केलहुँ। अपना प्रति एतेक कठोर। हमरा लेल एत्ते कोमल। किए? की अहाँ चाहैत छी जे हम भरि जीवन कमजोर भ' क' जीबी। कहू?' पापा किछु नहि बाजल रहथिन। अजयकेँ बूझल छलनि नापसिन्द बातक बेरमे पापा चुप्प भ' जाइत छथि। किछु बजबे नहि करता। ओ थोड़ेक कालधरि प्रतीक्षा केने रहथि। पापा किछु नहि बजलथिन।

तकरबाद ओहि घरसँ सम्बन्धक चर्चा सेहो कहियो नहि कयलथिन।

एक दिन जया लग अजय बियाहक प्रस्ताव रखलनि। एहि लेल ओ अपनाकेँ तैयार क' लेने छला। जयाकेँ पुछलथिन. 'जया! अहाँके हम पसिन्न पड़ै छी? हमरासँ बियाह कर' चाहब अहाँ?' जया अपना कोसा सन आँखिसँ अजय दिस तकने रहथि। कने आँखि आर गुड़ारिये क' कहलनि. 'हँ, अहाँ संग बियाह कयल जा सकैत अछि। मुदा एक बरखक बाद। ताबत हमरा पी.एच. डी. भेटि जायत। लेक्चरशिप सेहो भ' जायत।' अजय प्रसन्न भेल रहथि। मुदा हुनकर मोनमे ई दुविधा बनल रहलनि जे जया लेक्चरर भ' जेती तँ दुनू गोटा एक संग कोना रहब? जयाकेँ कत' भेटतनि नोकरी। हम तँ सीतापुरमे रहब। पुछलथिन. 'अहाँके कत' लेक्चरशिप भेटबाक संभावना अछि? किछु जोगाड़ पहिनेसँ लागल अछि की?' जया कहलथिन. 'बनारसेमे भेटि जायत। किछु बात भ' गेल छै। पी.एच.डी.क बाद नियुक्ति हैत।' अजय तखन अपन दुविधा प्रकट केलनि. 'हम तँ एत' सीतापुरमे रहब। अहाँ ओत' बनारसमे। एक संग तँ नहि रहि सकब। बियाहक बाद तँ एकठाम रहब जरूरी हैत ने? नै?' जया लगले उत्तर देने रहथिन. 'अहाँ बनारसेमे बदली करा लेब। जाबत बदली नहि होयत, दुनू गोटे अबैत-जाइत रहब।' अजय कहने छला. 'हँ, तँ आर कोन उपाय रहत? अहाँके तँ आब हम छोड़ैबला नहि छी। जत' रहब अहाँ ओतहि हमहूँ चल आयब।' एहि बात पर दुनू गोटा हँसल रहथि। हँसैत अजय जयाक दुनू हाथकेँ पकड़ि लेने रहथि।

एक बरखक बाद जया संग बियाह भ' गेल रहनि अजयक। जया पी.एच.डी.क' लेने रहथि। ओ बनारसमे लेक्चरर भ' गेल छली। जयाक बाबूजी आ माँकेँ अजय पसिन्न पड़ल छलथिन। ओ सभ बेटीक चयनसँ प्रसन्न भेल रहथि। अजय अपन पापासँ बियाह करबाक सहमति लिअ' सेहो गेल रहथि। पापा बिछान पर बैसल कोनो किताब पढ़ि रहल छला। रिटायर भ' गेल रहथि। अजय पापाक लगमे बैसिक' कहने रहथि. 'पापा, हम बियाह करय चाहैत छी। सीतापुरमे हमर एकटा सहकर्मी छथि - डॉ॰ आशीष। हुनके भतीजी छथिन जया। हमरा पसिन्न छथि। हुनको हम पसिन्न छियनि। दुनू गोटे एक-दोसराके बरख दिनसँ जनैत छी। बहुत सुसंस्कृत परिवार छनि हुनकर। बाबूजी बनारसमे प्रोफेसर छथिन। ओ लोकनि अपन सहमति द' देने छथि।' पापा किछु नहि बाजल रहथिन। केवल 'हूँ' कहने रहथिन। ई 'हूँ' एकदम अस्पष्ट बुझायल रहनि अजयकेँ। पापाक विचार नहि बूझि सकल रहथि ओ। अजय पापाक बजबाक प्रतीक्षामे बड़ी काल धरि बैसल रहला। मुदा ओ फेरसँ किताब पढ़' लागल रहथि। हुनकर मुँह सँ एक्को शब्द नहि निकलल रहय। एकटा असहज मौन दुनूक बीच चतरल जा रहल छल। अजय कनेकालक बाद ओत' सँ उठि गेल रहथि। मुदा अजय आ पापाक बीचमे ई मौन चतरिते चल गेल। बियाहक बाद अजय आ जया नैनीताल गेल रहथि। खूब घूमल-फिरल रहथि। एक मासक छुट्टी कोना बीति गेलनि से बुझबे ने कयलथिन। समय वसंतक भोर सन महमह उड़ल चल गेल रहय। किछु दिनक बाद अजय कोशिश-पैरबी क' क' अपन बदली बनारस करा लेने रहथि। सर सुन्दरलाल अस्पतालमे। दुनूक दिन गुलाबी-गुलाबी सन बीत' लागल। दू बरख एहिमे कोना बीति गेल से बुझबे ने केलथिन। मुदा किछु मास पूर्व एकटा एहन बात भ' गेल जे दुनूक जीवनकें झकझोरिक' राखि देलक। भेल ई रहैक जे अजयक किछु मित्र एकटा व्यक्तिगत पार्टी मे हुनका निमंत्रित कयने रहथिन। ओहि पार्टी मे शराब चलल रहय। अजय शराब बियाहक बाद छोड़ि देने रहथि। जयाकेँ शराब पसिन्न नहि छलनि। ओहि दिन कोना ने कोना संगी सभक आग्रहमे पड़ि पीबि लेलनि। से एतेक पीबि लेलनि जे होशमे नहि रहला। डेरा पर आबि क' बेहोश सन भ' गेल रहथि। पैरसँ कहुना जुत्ता निकालि कपड़ा बदलि बिछान पर चितंग पड़ि रहला। बेस रातिक' कने होश भेलनि। देखलनि जे जया बगलमे सूतल छथि। जीरोवाटक हरियर बल्ब जरि रहल छल। जया गुलाबी रंगक साड़ी-ब्लाउजमे रहथि। ओहि निशामे जयाकेँ देखि हुनका नहि रहल गेलनि। हुनकर देह पर हाथ

फेर' लगला। हाथ देहपर ससरैत रहल। जयाक निन्न टुटलनि तँ मना केलथिन। हाथ हटेबाक लेल कहलथिन। ओ बिगड़ल छली। मुदा अजय पर तँ कीदन सवार छल। जयाक विरोध अजयकेँ आर उत्तेजित क' देलकनि। ओ जयाक ब्लाउजक हूक तोड़ि देलथिन। जया कसमसाइत रहली। अपनाकेँ छोड़ेबाक चेष्टा केलनि। मुदा अजय बलजोरी कइए क' छोड़लनि। जया बादमे कान' लागल रहथि। अजय दिस अजीब घृणासँ देखने रहथि।

भिनसरे अजयक निन्न टुटलनि तँ जयाकेँ बिछान पर नहि देखलथिन। हुनका रातुक घटना मोन पड़लनि। ग्लानि भेलनि। ओ जयाकेँ ताक' लागल रहथि। जया बाथरूममे छली। नहा-सोनाक' बाहर भेली। एखनो हुनकर आँखि लाल रहनि। अजय हुनका लग गेला। हुनकर हाथ पकड़ि क' कहलथिन— 'जया, रातिमे हमरासँ अपराध भ' गेल। माफ क' दिअ'।' जया ओहिना घृणासँ अजय दिस तकलथिन। किछु नहि बजली। हाथ छोड़ा क' चल गेली। तकरबादसँ दुनूक बीचमे संवाद बन्द भ' गेल रहय। एकटा तनाओ जनमि गेल छल। दुनू अपन-अपन काज पर जाथि। घूरिक' डेरा पर आबथि। मुदा आपसमे टोका-चाली नहि होइन। जया खेनाइ बना क' टेबुल पर राखि देथि। अजय खा लेथि। अजय कत्ते बेर जयाकेँ बौंसबाक चेष्टा केलनि। मुदा ओ माललनि नहि। एहिमे दू माससँ बेसी समय बीति गेल। एहि अवधि मे अजय अजीब द्वन्द्वमे रहला। लागनि जेना जया सेहो हुनकर नहि रहि गेली अछि। कियो हुनकर नहि रहल। एकर कारण ओ अपनहि छथि। कोनो पैघ कमी छनि हुनका मे। जया सेहो एहि बीच बहुत तनावग्रस्त रहल करथि। हुनकर स्वाभाविक रूप जेना कतहु हेरा गेल छल। चेहराक लावण्य नष्ट भ' रहल छलनि। अजय किछु नहि क' पाबि रहल छला। मुदा जयाक प्रति चिन्तित होइत गेला। एक दिन उदास सन भिनसरमे अखबार पढ़ैत रहथि तँ जया आबिक' लगमे ठाढ़ भेलथिन। अजय देखलनि जया आइ बदलल सन छथि। एकदम शान्त आ मोहक लागि रहल छथि। ओ कने प्रसन्न भेला। जया एकटा कागज निकालिक' अजय लग रखलनि आ बजली— 'एहि पर दसखत क' दिअ।' अजय देखलनि ओ गर्भपातक लेल सहमतिक कागज रहय। जया ओहि पर दसखत केने रहथि। अजयसँ सेहो दसखत चाहैत छली। अजयकेँ किछु अर्थ नहि लगलनि। बुझलो नहि रहनि जे जया माय बनयबाली छथि। गर्भपातक हुनक निर्णय सुनि ओ आश्चर्यमे पड़ि गेल रहथि। अजयकेँ अजीब लगलनि। पुछलथिन— 'ई एबॉर्शनक कागज? अहाँ एबॉर्शन किए करब' चाहैत

छी? ई तँ पहिल संतान अछि हमरा सभक।' जया ओहिना गंभीर बनल रहली। कहलथिन– 'हम ई संतान नहि चाहैत छी।'

–'से किए?' अजयकेँ आश्चर्य भ' रहल छलनि।

–'ई सन्तान हमर इच्छाक विरुद्ध अछि। एकर माय हम नहि बनि सकैत छी।' अजयकेँ क्रोध हुअ' लागल छलनि आब, तैयो अपनाके सम्हारैत बजला– 'जुलुम बात करैत छी अहाँ। हमरालोकनिक ई पहिल सन्तान थिक आ अहाँ इच्छा-अनिच्छाक गप्प क' रहल छी। एहन नहि भ' सकैए। हम एबॉर्शनक सहमति नहि द' सकैत छी।' जया ओहिना स्थिर रहली। कहलथिन– 'से तँ नहि हैत। अहाँके सहमति दिअ' पड़त। हम एहि सन्तानके जन्म नहि द' सकैत छी।' अजयक क्रोध आब बढ़' लागल रहय। ओ कने जोरसँ कहलथिन– 'किए जन्म नहि द' सकैत छी?' सभ स्त्रीके सेहन्ता रहैत छै जे ओ माय बनय। मुदा अहाँ मायक सम्मानके ठोकरा रहल छी। अद्भुत बात अछि। एहन स्त्री हम आइ धरि ने देखने छी, ने सुनने छी।' जया लगले उत्तर देने रहथिन– 'पतिक बलात्कारसँ उत्पन्न संतानक माय हम नहि बनय चाहैत छी। भरि जन्म ई अपमान हम नहि सहि सकैत छी। सभ दिन एहि सन्तानके देखि हमरा ओ राति मोन पड़ैत रहत। हम एबॉर्शन जरूर करायब। अहाँ दसखत क' दिअ'।' जयाक बातसँ अजय एकदम तिलमिला गेल रहथि। हुनका लगलनि जे माफियो माँगि लेलाक बाद जया हुनका माफ नहि केने छथि। ओ उत्तेजनामे आबि गेल छला। कहलथिन– 'एहि सँ नीक जे अहाँ हमरा तलाक द' दिअ। खिस्सा खतम। तकर बाद जे फुड़य से करब।' जया आब कने मुसकिआय लागल रहथि। अद्भुत छल हुनकर मुसकुरायब। कहलथिन– 'तलाक हम अहाँके नहि दिअ' चाहैत छी। तलाक नहि देब। जेना अहाँ हमर हाथ पकड़ने रही तहिना हमहूँ पकड़ने छलहुँ। बात बराबरक अछि। हम खिस्सा खतम नहि, शुरू कर' चाहैत छी। अहाँ एबार्शनक लेल सहमति दिअ।'

अजय तखन सोच' लागल रहथि जे बात के बढ़ायब एक दोसर जबर्दस्ती होयत। खाली माफी माँगि लेलासँ जयाक अपमान खतम नहि भ' जाइत अछि। जया अपमान सहियो क' हमरा छोड़' नहि चाहैत छथि। अद्भुत छथि ई। एहन स्त्रीक सम्मान लेल एबार्शनक सहमति किछु नहि थिक। अजय आब जेना शान्त भ' गेल रहथि। तखने हृदयमे शीतलताक अनुभव केलनि ओ। जयाक संग अपन जीवन दुर्लभ बुझेलनि हुनका। एहि जीवन लेल किछुओ कयल जा सकैत अछि। तकरबाद बहुत सहजतासँ ओहि कागज पर दसखत क' देने रहथि। लगलनि जया

बहुत प्रसन्न भ' उठली अछि। अजयकेँ सुन्दर लगलनि जयाक प्रसन्नता। जया अपन कोसा सनक आँखिसँ अजय दिस ताकि रहल छली।

जयाकेँ अपन बाँहिमे समेटने छला अजय। जया आब अजयक छाती पर जेना सुखसँ सूति रहल रहथि। हुनकर बहल नोर अजयक कमीजकेँ भिजौने छल। अजयकेँ लगलनि जे जयाक संग सम्बन्धमे नव ऊष्मा आबि रहल अछि। आनन्दक जाहि अनुभूतिसँ ओ परिचित भ' रहल छला से हुनका लेल अपूर्व छल। किछु कालक बाद जया ओरिया क' अजयक बाँहिसँ निकलली आ बेराबेरी हुनकर दुनू आँखि के चूमि लेलनि।

■■

ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि

शहर मे दंगाक आशंका रहै। मुदा ओकरा दुनूकेँ साइकिल सिखबाक धुनि सबार छलै। आश्वासन भेटल रहै जे सिखल भ' जेतै तँ नबका साइकिल भेटतै। शहर मे तनाओ बढ़ि रहल छलै। लोक सभ फुसुर-फुसुर गप्प करै। अफवाह उड़ियाइत छलै। ओ सभ जत' साइकिल सिख' जाय, ओत' मुसलमान सभक सघन बस्ती रहै।

असलमे ओहीठाम साइकिलो भेटैत रहै किराया पर। दू रुपैए घंटा। जहियाक' दू-चारि घंटाक किराया जमा भ' जाइ ओ दुनू साइकिल ल' लिअय। किराया पर साइकिल भेटै छै से बात ओकरा दुनूकेँ पहिने नइँ बूझल रहै। ई बात जसीम कहने छलै। जसीम अहमद जे ओकरे सभक किलास मे छल। वैह दुनूकेँ साइकिल मिस्त्रीक दोकान पर ल' गेल रहै। साइकिल मिस्त्रीक दोकान ओहि मैदानक सटले रहै जत' साइकिल सिखल जा सकैत छल। जसीमे मिस्त्रीसँ ओकरा दुनूक परिचय करौने रहै– 'चचा, ई सुधीर आ रमेश हमरे साथ पढ़ै हय। साइकिल सिखनाइ एकदम्मे जरूरी हो गेल हय एकरा दुनूकेँ। हम जामिन लै छिअ'! कउनो दिक्कत नइँ होत'। दू गो साइकिल निकाल दहू।'

तकर बादसँ ओ दुनू जखन आबय साइकिल एकदम तैयार रहै। साइकिल लिअय आ गुड़कबैत मैदानमे चलि जाय। सिखल करय। चलब' आबि गेल रहै। मुदा एखन रेंग क' ओहि पर चढ़ल नहि होइ। उतरि नहि सकय। चढ़बा-उतरबाक लेल ऊँच जगहक खोज कर' पड़ै। एहि काज लेल मैदान मे बनल मंचक सीढ़ी उपयुक्त छल। ओ दुनू सीढ़ी पर पयर राखि चढ़ि जाय साइकिल पर। चलाब' लागय। हैंडिल सम्हार' आबि गेल रहै। पूरा नियंत्रण नहि भेल रहै। मोड़ै मे कने दिक्कत होइ। मुदा ओ सभ लगन सँ साइकिल सिखबा मे लागल रहय।

सुधीर आ रमेश मिडिल स्कूल मे पढ़ैत छल। अगिला वर्षसँ हाइस्कूल मे जायत, से सोचि उत्साहित भ' उठय। दुनूक डेरा सटले रहै। दोस्ती तहियेसँ रहै जहिया 'ओनियन'क अर्थ नहि बुझल रहै। अंग्रेजीक बहुतरास शब्द आबि गेल छलै। मुदा 'ओनियन'क अर्थ नहि पढ़ने रहय। पढ़नहुँ छल तँ मन मे नहि बसल छलै। एक दिन रमेशक मामा आयल रहथिन तँ सनेश मे दू सय टाका देलथिन।

एत्ते रुपैया ओकरा तहिया धरि कियो नहि देने रहै। एहि रुपैयाकेँ ओ अपना हिसाबें खर्च क' सकैए से सोचि प्रसन्न भेल। लगले सुधीरक ओहिठाम पहुँचल रहय। रुपैयाक मादे कहलकै। दुनू संगी योजना बनब' लागल छल जे एहि रुपैयाकेँ कोना खर्च कयल जाय। सुधीर कहलकै– 'चल गुपचुप खायल जाय।'

रमेशकेँ गुपचुप खेबाक मन नहि भेलै। गुपचुप बहुत खेने रहय। ओ कोनो नब वस्तु खाय चाहैत छल। बाजल. 'नहि, चल भारत कैफे। ओत' डोसा खायल जाय।' दुनू संगी लगले विदा भ' गेल रहय। भारत कैफे मे पहुँचल तँ देबाल पर टाँगल तख्ती पढ़िक' सुधीर कहि देलकै, ओनियन डोसा। जखन बेरा आनिक' देलकै तँ देखलक जे डोसा मे पुष्ट सँ काँच पियाजु भरल छै। पिआजु खायल नहि भेलै दुनूकेँ। खाली डोसाक पपड़ी निकालि क' खा लेने रहय। साँभर आ नारिकेरिक चटनी संग। तहिये अर्थ बुझलक जे ओनियन माने पिआजु होइ छै।

ओकरा दुनूकेँ साइकिल जल्दी सिखि लेबाक रहै। हाइस्कूल जेबाक लेल साइकिल भेटबाक बात छलै। नबका साइकिल पर हाइस्कूल जायत से सोचि दुनू उत्साह मे रहय। एहि उत्साहमे शहरमे दंगाक आशंका कखनहुँक' झंझटि मे द' दैक। लोक सभ बजै जे मुसलमान सभ हथियार जमा क' मस्जिद मे रखने अछि। हिन्दुओ सभ पूरा तैयारी क' रहल अछि। कसमसा रहल अछि। एहि बेर दंगा भेलै, तँ बड़ लोक मरतै। बहुत दिन धरि कर्फ्यू लागल रहि सकैत छै। ओ सभ कर्फ्यू पहिनहुँ देखने छल। सभक घरसँ बाहर निकलनाइ बंद भ' जाइक। घूमब-फिरब बंद। सौदा-सुलुफ बंद। कैफे, सर्कस सभ बंद। तै परसँ साइकिल सिखब छूटि जेतै से सोचि ओ दुनू आर खिन्न भ' जाय। दंगा आ कर्फ्यूक प्रति तामस उपजि जाइ।

ओहि दिन जखन ओ दुनू साइकिल सिखबाक लेल विदा भेल तँ सुधीरक पित्ती श्याम बाबू टोकि देलथिन. 'कत' चललह तों सभ। शहरक हालति ठीक नहि छै। बेसी घूमल-फिरल नहि करह एखन।'

सुधीरकेँ नहि नीक लगलै टोकनाइ। उत्साह मे बाधा बुझेलै। अपन प्रयोजन व्यक्त केलक पित्ती लग– 'साइकिल सिखै लेल जाइ छी दुनू गोटे। आब त' चलब' आबि गेल अछि। कनिये दिन मे नीक जकाँ चलाओल भ' जायत।'

श्याम बाबूकेँ साइकिल सिखबासँ कोनो मतलब नहि छलनि। कहलथिन– 'किछु दिन सिखब छोड़ि दहक। मैदानक चारूकात मुसलमान सभक बस्ती छै।'

सुधीर आ रमेश कनेकालक लेल चुप्प भ' गेल। फेर रमेश उत्तर देलक,–'त'

की भेलै कका! मुसलमान सभ अनेरे हमरा सभक किए कोनो हानि करत।'

श्याम बाबू आँखि गुड़ारिक' रमेश दिस तकलथिन। मुदा ओकरा किछु नहि कहि सुधीरकेँ कहलथिन— 'तों सभ एखन नेना छह। मुसलमान सभकेँ नहि चिन्हैत छहक। छोटोछिन बात पर ओ सभ बबाल मचा दै छै। मारि पीट पर उतारू भ' जाइत अछि।'

ओकरा दुनूकेँ एहि बात पर विश्वास नहि भेलै। सुधीर पित्तीकेँ कहलकै. 'हमरा सभक कैकटा संगी मुसलमान अछि। कहाँ ककरो अनेरे बबाल मचबैत देखै छिऐ। ओहो सभ त' हमरे सभक जकाँ अछि।'

श्याम बाबू भड़कि गेल छला। हुनकर स्वरमे क्रोध भरि गेलनि। कहलथिन— 'तों सभ त' बाते बुझबाक चेष्टा नहि करैत छह। अनेरे गेंग नइ जोती। मुसलमान सभक खून गरम होइ छै। ओ सभ मुरगा-मुरगी खाइए। गाय खाइए। पिआजु-लहसुन खाइत अछि। की-की ने खाइए। एहन अभक्ष्य सभ खेलासँ खून गरम भैए जेतै। स्वभाव एकदम हिंसक भ' जाइत छै। कनियों मे मारि पीट कर' लगैत अछि। ककरो जान लेब ओकरा सभक बामा हाथक खेल छै।'

सुधीर आ रमेशकेँ श्याम बाबूक बात पर हँसी लगलै। मुदा हँसल नहि। —'अनेरे कका आर भड़कि जेता।' ओ दुनू सोचलक। मुदा रमेश कहलकनि— 'मुरगा-मुरगी त' सभ खाइत अछि कका! लोक कहै छै जे मुसलमानसँ बेसी त' हिन्दूये मुरगा-मुरगी खाय लागल अछि।'

श्याम बाबू आर बिगड़ि गेला। पूरा-पूरी क्रोध मे आबि गेल रहथि। कहलथिन. 'तोरा सभकेँ बुझायब कठिन अछि। अरे, हिन्दूसँ ओकरा सभकेँ घृणा छै। हिन्दूकेँ काफिर कहै छै मुसलमान सभ। तेँ योजना बनाक' हिन्दूकेँ खतम कर' चाहैत अछि एहि देशसँ। तखन इहो देश अपन भ' जेतै। हिन्दुस्तान पाकिस्तान भ' जायत।'

आब सुधीर आ रमेशकेँ श्याम बाबूक बात बुझबा जोगर नहि रहि गेल छल। ओ दुनू बकर-बकर हुनकर मुँह ताक' लागल। एना तकैत देखि श्याम बाबू आर भड़कि गेला। पयर पटकैत ओत'सँ विदा भ' गेला। एम्हर ओ दुनू सेहो मैदान दिस साइकिल सिख' विदा भेल।

सुधीर आ रमेश जखन मैदान लग पहुँचल तँ चारि बाजि गेल रहै। ओकरा सभकेँ अफसोस भेलै जे श्याम बाबू दुआरे कने लेट भ' गेलै। साइकिलवला

दुनूकेँ अबैत देखि खुशी व्यक्त केलक— 'आबै जा। दू गो साइकिल एकदम फिट राखने छिअ'।' हाँहि-हाँहि दूटा साइकिलकेँ पोछि-पाछि आगू मे ठाढ़ क' देलकै। सुधीर कने ध्यानसँ ओकरा देखलक। ओकरा चेहरा पर प्रसन्नता रहै। नीक मिस्त्री मे ओकर गणना कयल जाइत छलै। हरदम मरम्मतिक काज ओकरा ओहिठाम चलिते रहै। चारि-पाँच गोटे खटैत रहैत छल। मिस्त्री तखन हँसिते पुछलकै— 'अब केतना दिन लगतहू सड़क पर निकालै मे?'

'थोड़े दिन आर लगतै, चचा! एखन अपनेसँ चढ़ल-उतरल नहि होइ छै। कोनो ऊँच जगह ताक' पड़ै छै।' रमेश उत्तर देने रहै। मिस्त्री फेर हँसल। हँसब ओकर आदति रहै। जेहने मिस्त्री तेहने लोक। सभ ओकर प्रशंसा करै। अलाउद्दीन नाम रहै ओकर।

साइकिल ल' क' जखन दुनू मैदानमे आयल तँ सूर्य दछिनबारि कात चल गेल रहय। दू घंटा मे अन्हार भ' जेतै ओ सभ सोचलक। एखन रौद बाँकी रहै। जाड़मासक कारणें मुदा कमजोर भ' गेल छल। मैदान मे बैसल लोक सभ विदा हुअ' लागल रहय। तैयो किछु छौंड़ा सभ एक कात गुल्ली-डंटा खेला रहल छल। एक दिस क्रिकेट से जमल रहै। मैदान तत्ते पैघ रहै जे ओकरा सभकेँ साइकिल चलबै लेल तैयो पर्याप्त जगह भेटलै। दुनू मंच लगक सीढ़ी पर पयर राखिक' साइकिल पर चढ़ल। साइकिल चलबैत किछु कालक बाद रमेश मैदानक एक कात लागल झाड़ी दिस चल गेल। दू झाड़ीक बीच सँ साइकिल मोड़िक' निकलबाक कोशिश केलक। मुदा नहि भेलै, खसि पड़ल। देह मे झाड़ी गड़ि गेलै। रमेशकेँ देखि सुधीर सेहो कोशिश कर' लागल रहय। पहिल बेर निकाल' चाहलक तँ धुंइ सँ खसल। मुदा लगले उठिक' ठाढ़ भ' गेल रहय। मंचक सीढ़ी पर जाक' फेर साइकिल पर चढ़ल। ओकरा जिद लागि गेल रहै। झाड़ीक बीचसँ साइकिल निकालिए कें मानत। ओ बेर-बेर प्रयास कर' लागल। दू-तीन बेर खसल। प्रयास मुदा जारी रखलक। लगले ठाढ़ भ' जाय। झाड़ी देह मे गड़बो करै। आखिरकार झाड़ीक बीचसँ साइकिल निकालिए लेलक। तकरबाद नहि खसल। ओकरा चेहरा पर प्रसन्नता रहै। रमेशो शाबासी देलकै। मुदा ओकरा अपने साहस नहि भेलै। ओ फेर झाड़ी दिस नहि गेल।

साइकिल चलेबा मे दुनू मस्त रहय। सुधीर एक-दू बेर सीढ़ी पर पयर राखि उतरि चुकल छल। कनेकाल सुस्ताक' फेर ओहिना साइकिल चलब' लागय।

एही मे अकस्मात् एक आदमी ओकर साइकिलक आगू आबि गेलै। ओ माथ पर काठक बकसा रखने रहय। लुंगी आ कुर्त्ता पहिरने रहय। सुधीर ओकर पाछू मे छल। सुधीर देखलक ओ आदमी धीरे-धीरे चलि रहल रहय। साइत माथ परक बकसा भारी रहै। सुधीरक साइकिल मे घंटी नहि रहै। ओहि आदमीकेँ हटेबाक लेल घंटी नहि बजा सकैत छल। ओकरा सामनेसँ नहि हटैत देखि ओ घबड़ा गेल। हैंडिल मोड़िक' बगल सँ निकलल पार नहि लगलै। एकदम्मे साइकिलक अगिला पहिया ओहि आदमीकेँ ठोकर मारि देलकै। ओ सम्हरि नहि सकल। खसि पड़ल। माथ परक बक्सा सेहो खसि पड़लै। ओहि मे राखल कैंची सभ छिड़िया गेल। बिना कीलक कैंची सभ। कैंची सभ मैदान मे पसरि गेलै। ओ आदमी उठिक' ठाढ़ भेल आ सुधीर के दू थापड़ मारलकै।

धीरे-धीरे किछु लोक ओत' जुटि गेल। ओहि मे बेसी युवक छल। ओ सभ सुधीरकेँ घेरि लेलकै। सुधीरकेँ भेलै जे ई सभ लगपासेक मोहल्लाक लोक सभ छी। रमेश सेहो ताबत् साइकिल ल' क' ओत' आबि गेल छल। ओ युवक सभकेँ बुझेबाक चेष्टा केलक। मुदा एकटा युवक सुधीरक कालर पकड़ि धक्का दिअ' लगलै। ओकर आँखि मे ज्वाला रहै। मुदा लगले ओ आदमी ओहि युवककेँ रोकलकै– 'छोड़ दहू लड़िका हइ। जानबूझ के थोड़बे मारलकै धक्का। गलती इन्साने से होइ हय। हम दू थप्पड़ मार देले छिअइ। सजा मिल गेलै एकरा।' ओ सुधीरक कालर ओहि युवकक हाथसँ छोड़ा देलकै। सुधीरकेँ जान मे जान अयलै। ओ सहटिक' रमेश लग चल गेल।

फेर ओ आदमी ओकरा दुनूकेँ कहलकै– 'सुन' बबुआ! अब जल्दी तूँ लोग मैदान से निकस जा। अन्धेरा हो रहल हय।' कहिक' ओ कैंची सभकेँ उठाक' बक्सा मे राख' लागल। ओ आदमी कैंचीक मिस्त्री छल। कैंचीकेँ जोड़बाक काज करय। ओकरा कैंची सभकेँ उठबैत देखि सुधीर आ रमेश सेहो ओकर सहायता कर' लगलै। मारितेरास कैंची रहै। सभकेँ काठक बक्सा मे रखलक तीनू मीलिक'। बक्सा भरि गेलै। दुनू फेर बक्सा उठाक' ओहि आदमीक माथ पर रखलक। ओ विदा भेल। आनो लोक सभ क्रमशः चलि देलक। मैदान मे आब अन्हार पसर' लागल रहै। ओ दुनू जल्दी-जल्दी साइकिल ल' मैदान सँ बाहर आबि गेल। साइकिलकेँ मिस्त्री लग ठाढ़ क' देलक आ पाइ द' डेरा दिस विदा भ' गेल।

पाछू सँ मिस्त्रीक स्वर सुनाइ देलकै। ओ पूछि रहल छलै– 'अब कहिया अयब' साइकिल सिख'?' ओ दुनू जेना सुननहि नहि हुअय, आगू बढ़ैत चल गेल।

डेराक रस्ता मे रमेश आ सुधीर चुपचाप चलैत रहल। कनियेकाल पहिने घटल घटना दुनूक मनकेँ छेकने छलै। रमेश थोड़ेक कालक बाद मौन भंग केलक। कहलकै– 'साइकिल सिखब किछु दिन छोड़ि देल जाय।'

सुधीर ओकरा दिस तकलक। फेर कनीकालक बाद बाजल– 'आ स्कूल जायब?' दुनू फेर चुप्प भ' गेल।

डेरा लग पहुँचल तँ रमेश सुधीरकेँ कहलकै– 'गुपचुप खेना बहुत दिन भ' गेल। चल, सरदारजीक दोकान मे गुपचुप खायल जाय।' दुनू दोस झटकल सरदार जोगिन्दर सिंहक दोकान दिस विदा भ' गेल।

■■

डैडीगाम

डूबैत सूर्यक लाली पोखरिमे पसरल रहय। फेकन अपन दरबज्जा पर रहथि। दूरे सँ सभटा देखि रहल छला। हुनका चकविदोर लागल रहनि। सैह, एतेक पैघ लोक। एतेक नामी डॉक्टर। एतेक रुपैया अरजैवला। यश-प्रतिष्ठा पबैवला। रस्ता मे फेकल धनेशरी फूलसँ अपन जेबी भरैए! फेकनकेँ अपन आ डा. रघुवंशक नेनपन मोन पड़ैत छनि। पोखरि मे एक संग चुभकब मोन पड़ैत छनि। जाठि लगक माटि कोड़ब मोन पड़ैत छनि। रघुवंशकेँ जाठि मे माटि लेपब नीक लागनि। दुनू गोटे बेसीकाल ई खेल खेलाथि। पोखरि मे जखन पानि घटै, दूनू जाठि लग हेलक' चल जाथि। फेकन जाठि लगक माटि कोड़िक' रघुवंशके देथिन। रघुवंश जाठि मे माटि लेपथि। हुनका माटि कोड़ल नहि होनि। माटि लेल ओ फेकन केँ कहथि। फेकन पानि मे डूबि क' माटि आनथि। पोखरिक जाठि गाबिस माटिक दुलेबसँ सुन्दर लागय। अलगल जाठि माटि सुखेलाक बाद रौद मे चमकय। माटि सुखा जाय। रघुवंशकेँ अबैत-जाइत जाठि देखब नीक लागनि।

सूर्यक लाली पोखरिक पानि मे एकपेरिया सन बनौने रहय। डॉक्टर रघुवंश घर दिस जा रहल छला। चलैत-चलैत अकास दिस नजरि गेलनि। देखलनि जे एक हाँज चिड़ै उड़ल जा रहल अछि। सभटा चिड़ै एक पतियानी मे छल। एक लय मे पाँखि हिलबैत उड़ल जा रहल छल। चिड़ै सभ एकदम उज्जर रहय। कोन चिड़ै थिक? ओ सोचलनि। हुनका भेलनि जे ओ चिड़ै सभकेँ नहि चिन्हैत छथि।

रघुवंशकेँ मुदा सभ चिन्हैत छलनि। ओ गाम मे मंदिर बनेबा लेल आयल छला। सीताराम मंदिर। सभकेँ बूझल छै जे रघुवंशके बड़ रुपैया छनि। लंदन मे खूब कमायल छथि। भरि जीवन लंदने मे रहला। कतेको लोक लागल अछि मंदिर निर्माण योजना मे। रघुवंशक जेठ बेटा विशेष रूपें लागल अछि। इंजीनियर अछि। कम्प्यूटर पर मंदिरक डिजाइन बना क' अनने अछि। दूटा बेटा छनि रघुवंशकेँ। उज्जर-उज्जर अंग्रेज सन।

चिड़ैक संबंध मे सोचैत रघुवंश धनेशरी गाछ लग पहुँचि गेल छला। धनेशरीक गाछ पोखरिक महार पर रहय। रस्ताक कात मे। धनेशरीक गाछ रघुवंशक पितामहीक रोपल छलनि। गाछ आब बूढ़ झुनकुट भ' गेल रहय। मुदा

एखनो फुलायब नहि छोड़ने छल। गाछक तर मे फूल झरैत रहैत छल। किछु फूल मुदा पोखरिक पानि मे सेहो चल जाय। तरे-तरे पोखरिक पानि माटिकेँ कटने जा रहल छल। पोखरिक कटाओ धनेशरीक गाछ लग पहुँचि गेल छल। रस्ता बाँचल रहय। गाछ रस्ताकेँ बचौने रहय। रघुवंशक पैर तर किछु गुजगुज कर' लगलनि। जेना कोनो मोट मखमल पर पैर पड़ि गेल होनि। पैर हटा क' तकलनि। धनेशरी फूलक ढेरी रहैक। कोनो धियापूता खेला क' छोड़ि देने छल। रघुवंशकेँ नहि रहल गेलनि। ओ बैसि गेला। बैसि क' एक आँजुर फूल अपन हाथ मे लेलनि। छोट-छोट टुनमुनिया घौंदायल फूल...। उज्जर... उज्जर...। फूलक स्पर्श सँ हुनकर तरहत्थी मे गुदगुदी लाग' लगलनि। ओ आँजुर मे फूल सभकेँ घुमाब'-फिराब' लगला। फेर दुनू तरहत्थी सटाक' फूलक गुदगुदीक सुख लेलनि। आँजुरकेँ अपन नाक लग ल' गेला। जोर सँ फूलक सुगंधि अपन नाक मे भरलनि। फेर फूल फेकल नहि भेलनि। सभटा फूल अपन जेबी मे राखि लेलनि। घर दिस विदा भ' गेला। फेकन दरबज्जा पर बैसल सभटा देखि रहल छला।

फेकन के बाबू वेदानंद झा मोन पड़ि गेलथिन। रघुवंशक एकवाली बाप। राजक तहसीलदार वेदानंद झा। आइ सँ साठि-सत्तरि वर्ष पूर्व जिनकर अजब रोआब छल। एकदम गोरा पलटन सन रोआब। लगबो करथिन गोरे पलटन सन। फेकन के कने-कने मोन छनि। बेसी बात त' अपन बाउ सँ सुनने छथि। करिया चमकैत घोड़ा पर जखन वेदानंद बाबू उज्जर दपदप कपड़ा पहीरि क' निकलथिन तँ लोकक आँखि उपरे नहि होइ। हुनका सँ कियो नजरि मिलाक' गप्प नहि क' सकल तहिया। ककरो कनियो गलती पर एहन सजाय देथिन जे जिनगी भरि मोन रहै।

ओहि अमल मे वेदानंद झा सँ नजरि मिला क' कियो गप्प नहि क' सकल। गप्प केलक तँ एक्के गोटा। हुनकर जमाय शोभित झा। फेकन के बाउ सुनबथिन खिस्सा। एक दिन सभटा खेरहा कहने रहथिन। शोभित झा अपन कनियाक विदागरी चाहैत छला। ससुर-जमाय मे सोझा-सोझी गप्प नहि होनि।

बीच मे कियो माध्यम रहबे करय। ससुर-जमाय मे ओहि दिन मुदा सोझा-सोझी गप्प भ' गेलनि। से खूबे भ' गेलनि।

–'सुनै छी ओझा बुचनीक विदागरी चाहैत छथि?'

–'हँ, हमर माय असगरूआ अछि।'

–'माय तँ पहिनहुँ असगरूआ छलथिन।'

—'आब पुतहु भेलै ओकरा।'

—'तँ कहथु ने मायक सेवा लेल बहिकिरनी राख' चाहैत छथि।'

—'एहि मे बहिकिरनीक तँ कोनो गप्पे नहि छै। मायकेँ अपन समाँग भेलै। पुतहु लग मे रहय तकर सेहंता तँ हेबे करतै।'

—'एखन बुचनीक बयसे कतेक भेल अछि। पन्द्रहम तँ चढ़बे कयल अछि। ओ कोना आश्रम सम्हारि सकतनि।'

—'तँ बियाहे-दुरागमन किऐ करौलथिन?'

बाबू वेदानंद झाक आँखि लाल भ' गेल रहनि। लाल आँखि सँ जमाय दिस तकलनि। जमाय पर कोनो असरि नहि भेलनि तकर। ओ ओहिना दृढ़ भेल ठाढ़ रहला। वेदानंद झा किछु बजला नहि तकर बाद। चोट्टे घूरि क' अंदर मे माय लग जा क' बैसि गेला। माय कें बूझल रहनि। ककरो पर तामस भेला पर आब ओ कखनोकाल हुनका लग आबि क' बैसि रहैत छलथिन। कनीकालक बाद माय टोकलथिन।

—'किछु भेलैए की बच्चा?'

—'अरे की हेतै? ओझा बड़ उद्धत छथि'। कहि क' वेदानंद झा चुप्प भ' गेला।' मायो एखन किछु कहब उचित नहि बुझलनि।

फेकन केँ अपन बाउ सिंहेश्वर लोहार सेहो मोन पड़ैत छथिन। बापक बल पर भूखल कहियो नहि सुतला। मुदा नीक-निकुत लेल जी लोभाइत रहलनि। नीक कपड़ा-लत्ता देह पर नहि अयलनि कहियो। पहिल अंगा जे जीवन मे पहिरलनि से रघुवंशक पुरान हाफ शर्ट रहय। देह मे फिट नहि भेलनि। कने खिआयल-मिआयल रहथि। मुदा आइ फेकन केँ एहि सभ तरहक कोनो दुःख नहि छनि। दूटा बेटा कमाइ छनि। एकटा तँ सरकारी नोकरी मे छनि। तेसर गामक चौक पर लोहा-लक्कड़क एकटा दोकान खोलि लेने अछि। 'विश्वकर्मा हार्डवेयर' पैघ सन साइनबोर्ड लगौने अछि। घर पर भाथी नहि चलैत छनि। के चलाओत भाथी? अपना आब शक्क नहि रहलनि। बहुत दम चाही कलेजा मे भाथी चलेबाक लेल। बाप कें तँ बुढ़ारी धरि कलेजा मे दम रहलनि। कुड़हरि, खुरपी कोदारि, टेंगारी, बँसुला, कचिया हाँसू, सरौता सभ किछु बनाबथि। हुनकर हुनर के लोहा मानय लोक। भरि जीवन लोहे संग रहला। बेटो केँ अपन हुनर देने गेला। मुदा फेकन बाद मे ई काज छोड़ि देलनि। कोनो जरूरतो नहि रहि गेल

छलनि। बाजारक चला-चलती मे आब के फेकन लोहारक पघरिया आ खुरपी पुछितय? ताहि पर सँ बाजारक दाम सँ फेकन कोना मुकाबिला करितथि? तेँ घाटाक बिजनेस छोड़ि देलनि। मालक घर मे एखनहुँ पुरना भाथी फेकल पड़ल अछि। आब तँ संजय, हुनकर बेटा, दरभंगा जाइए आ थोक भाव सँ सभ वस्तु ल' अबैए। दोकान मे बेचैए। काँटी सँ ल' क' तराजू धरि सभटा रखने अछि। जे चाहब से भेटि जायत।

फेकन केँ आब कोनो काज कमाइ लेल नहि कर' पड़ैत छनि। तैयो बैसल तँ नहिये रहैत छथि। पाँच बीघा खेत छनि। कीनने छथि बेटा सभक अमलदारी मे। कोला-कोली मे। ताहि मे लागल रहैत छथि। बेटा सभ केँ ई खेती-तेती पसिन्न नहि छनि। जंजाल बुझाइत छनि। कीनियो देने छथिन बापेक जिद्द पर। फेकन केँ ई जंजाल नीक लगैत छनि। आइ दस बरस सँ खेती-बाड़ीक जंजाल बेसाहने छथि। अकाल, बाढ़ि आ जन-मजदूर सँ तबाह रहितो ओहि मे लागल रहैत छथि। पम्पिंग सेट आ ट्रैक्टर दरबज्जा पर छनि। ट्रैक्टर सँ भाड़ा सेहो कमा लैत छथि। पम्पिंग सेट सेहो बैसल नहि रहैत छनि। खुदरा खर्च लेल बेटा सभ लग हाथ पसार' नहि पड़ैत छनि। घुमा-फिरा' क' बेटे-पुतहु-पोता मे लगबैत छथि। धीया-पुता लेल देसी गाय पोसने छथि। रौदी मड़रक बेटा कैलास ताक-हेर क' दैत छनि। मुदा ओहो बम्बई जेबा लेल आफन तोड़ने अछि। फेकन रोकने छथि ओकरा। अपन खेतक अन्न आ गायक दूध लेल बेसाहने छथि सभटा। बुझैत छथि जे खेतक अन्न आब भारी पड़ि रहलनि अछि। जाबत जीबैत छथि ताबते धरि ई सभ चलि सकतनि। परोक्ष भेला पर अन्नो लेल संजय सेहो बाजार जायत। जाइते अछि एखनो शहरुआ कमउआ बेटा। गाम सँ अन्न नहि ल' जाय चाहैत अछि। झंझटि बुझाइत छै ओहि मे। तैयो फेकन दुनू बेटा केँ समय-समय पर चाउर, दालि पठबैत रहैत छथिन। जे किछु दरमाहा बाँचि जाइ। मुदा बेटा सभ केँ अपन खेतक अन्न तेहन मेंही नहि बुझाइ छनि।

बाबू वेदानंद झाक तामस नामी रहनि। जमाय पर भेल तामस कहियो कम नहि भेलनि। तकर पराभव रघुवंशक बहीन बुचनी केँ सेहो भोग' पड़लै। नैहरक मुँह देखब सेहन्ता भ' गेलै। रघुवंश तहिया बारह बरखक रहथि। बहीन हुनका सँ तीन बरखक जेठ रहथिन। बहीन आ बहनोइ संग भेल बापक व्यवहार सँ ओ मर्माहत भ' गेल रहथि। समय बीतैत चल गेल, मुदा रघुवंशक हृदय केँ

चिर्रीचोंत क' गेल। जखन गाम सँ शहर अयला तँ समय बदललनि। शहरो कोना अयला से आइयो की बिसरल छथि। एक तरहें पड़ा कें अयला। बलजोरी क' क' अयला। पढ़बाक ब्याजें अयला। माय जिद नहि ठानितथिन तँ की आबि सकितथि? एक दिस मायक जिद। दोसर दिस पितामहीक जिद। पितामही एकदम्मे अड़ि गेल रहथिन। सत्याग्रह क' देलथिन जे रघू शहर नहि जयता। अंग्रेजी नहि पढ़ता। शहर मे सभ क्रिस्तान भ' जाइत छै। एक्केटा पौत्र से क्रिस्तान भ' जायत। पितामहीक नैहर स्वदेशी-विलेंती मे स्वदेशी रहनि। तकर गौरव हुनका अन्त धरि रहलनि। ई फराक बात जे ओ गौरव बिका गेल रहनि। महराज अपना मे मिलेबाक लेल हुनकर बेटा कें तहसिलदारी देने रहथिन। परिवारे विलेंती भ' गेल। मुदा पितामही अपना कें स्वदेशी बुझैत रहली। ओ अपन पौत्र कें आँखिक सोझाँ राख' चाहैत छली। चाहैत छली जे ओ संस्कृत पढ़य। जेना हुनकर पति पढ़लथिन। पूरा धर्मशास्त्र जीह पर रहनि। पहिने पतिया नहि कटथिन। बाद मे काट' लागल रहथिन। आस्था-पात घटि गेल रहनि। कहथिन परम्परा कें रखबाक अछि तँ नीचो काज कर' पड़त।

मुदा परम्पराक निर्वाह नहि भ' सकलनि। बेटा लेल तहसिलदारीक एबज मे परम्परा बिका गेल रहनि। बूढ़ाक कोंढ़ मे ई बात गड़ल रहलनि। ई टीस आर बढ़ि जानि जखन स्त्रीक नैहर छूटि जेबाक बात मोन पड़नि। रघुवंशक पितामहीक नैहरक लोक हुनका त्यागि देने रहनि। बारल भ' गेल छली। घूरिक' कहियो माय-बापक मुँह नहि देखलनि। ओ चाहैत छली जे घर मे पुरना दिन घुरि आबय। कम सँ कम हुनकर मृत्यु पौत्रक सानिध्य मे होनि। मरबाक काल पौत्र लग मे रहत तँ स्वर्गक संभावना रहत। बूझल छलनि जे पौत्रक सानिध्य मे मृत्यु भेला पर स्वर्गक व्यवस्था धर्म मे छै। जाति चल गेल तँ कम सँ कम धर्म तँ बाँचि जाय। पितामही धर्म बचेबाक व्योंत मे छली।

रघुवंश कें होइत छलनि जे एहिठाम सँ नहि पड़ायब तँ बताह भ' जायब। ओ संस्कृत एकदम्मे नहि पढ़' चाहैत छला। ओ अंग्रेजी पढ़' चाहैत छला। दुनिया देख' चाहैत छला। हुनका भागब सभ सँ पहिने जरूरी लगलनि। पड़ेलाक बाद की करब से बाद मे फुरेलनि। एही संग सभ कें मनेबाक जिद्द अयलनि। पितामही मुदा काशीक नाम पर मानलथिन। काशी विश्वनाथ लग रहि पढ़त से सोचि पितामही सहमति द' देलथिन। मोनक कोन मे एक टा आकांक्षा टिमटिमेलनि। कहीं मोक्षे ने लिखल हुअय। रघुए काशीक डोरी लगा देथि। ओकरे कर्मे मोक्ष भ'

जाय। आश्चर्य, पितामही काशी मे मुइली। काशी मे मुइली से तँ सभ देखलक। मुदा मोक्ष भेलनि की नहि से के देखलक अछि?

रघुवंश काशी मे डाक्टरी पढ़लनि। लंदन एफ.आर.सी.एस. कर' चल गेला। तकरबाद ओहीठाम हेबर्ड हास्पीटल मे लागि गेला। पितामही मरि गेल रहथिन। हुनका लंदन जाइत नहि देखलथिन। नहि देखलथिन जे ओ गामे नहि छोड़लनि समुद्र लंघन सेहो क' लेलनि। रघुवंश कें पितामही बहुधा मोन पड़थिन। काशी मे हुनकर मृत्यु मोन पड़नि। मणिकर्णिकाघाट पर तेसर दिन रहनि। पितामही परम कष्ट मे रहथिन। रघुवंश लगे मे रहथि। पितामहीक कण्ठ मे कफ आबि गेल रहनि। घरघरी बढ़ि गेल रहनि। एक बेर बड़ आयास सँ बजली पितामही. 'रघ्घू ...आब बड़ कष्ट अछि।'

—'की कहै छी, दाइजी! कथीक कष्ट अछि? की होइए?'

—'रघ्घू...हमरा छोड़ि दिय'। हमरा किए पकड़ने छी?'

—'दाइजी, हम अहाँकें कहाँ पकड़ने छी? हम तँ कात मे बैसल छी।'

—'नहि यौ, अहाँ हमरा ठकै छी। अहाँ हमरा पकड़ने छी। हमरा छोड़ि दिअ' बाउ... बाउ ने...।'

रघुवंश कें पितामहीक ओ कातर आँखि मोन पड़ैत छनि। चेहरा पर पसरल वेदना मोन पड़ैत छनि। मोन पड़ैत छनि पितामहीक अंतिम वार्त्ता...।

—'रघ्घू... हम हुनकर अपराधी छियनि। एकटा चन्द्रहार लेल हुनका सकपंज क' देलियनि। मोन कचोटैए रघ्घू...।'

बाद मे पितामहीक मुँह मे गंगाजल सँ पहिने अपन मायक नाम रहनि। माय जिनका स्वदेशी-विलेंतीक कारणें घुरि क' नहि देखि सकली कहियो। रघुवंश कें होइत छनि जे दाइजी बहुत औना क' मुइली। माय-बाप, पति सभ हुनका अंत धरि घेरने रहलथिन।

रघुवंश कें दाइजीक कनकन हाथ मोन पड़ैत छनि। एकाएक पितामही बाइ मे आबि गेल रहथिन। रघुवंश कें गसिया क' पकड़ि लेलथिन। जेना कोनो ठंढा लोहा रघुवंशक पहुँचा कें पकड़ि लेने होनि। रघुवंश ओहि स्पर्श मे मृत्युक भयानकता भोगने रहथि। ओ सोचने रहथि ओहिकाल जे ई ओ दाइजी कहाँ छथि जिनकर हाथ उष्मा सँ भरल रहय। अंत मे ओ दाइजी सँ मुक्तिक लेल व्याकुल होइत गेल रहथि। मुदा दाइजी कहाँ छोड़लथिन रघुवंशक हाथ...। अंत मे बहुत आयास सँ ओहि कठोर बंधन सँ रघुवंश कें छोड़ाओल गेल रहय। पहुँचा पर सँ

जखन पितामहीक हाथ हटलनि तँ रघुवंश केँ जीवनक अनुभव भेलनि। ओ काँपि रहल छला। बड़ीकाल धरि कँपकँपी छुटैत रहलनि।

से दाइजी आब बेसीकाल स्मृति केँ छेकने रहैत छलथिन। हुनक ओ कनकन हाथ मोन पड़नि। मृत्यु मोन पड़नि।

क्रमशः रघुवंशक मोन मे गाम भरैत गेलनि। लंदन मरैत गेलनि। मोन मे एकटा इच्छा हुलुक-बुलुक कर' लगलनि। मरितहुँ जँ गामे मे। इच्छा भेलनि तँ ओकरा संभव बनायब सोच' लगला। ओ गाम जेबाक निर्णय केलनि। मुदा जा क' करता की? की कहथिन लोक केँ। मरै लेल अयलहुँ अछि? आ जँ लोक पुछनि. 'अँय यौ? रहलहुँ भरि जीवन लंदन मे। कमेलहुँ-खटेलहुँ लंदन मे। माय-बाप केँ आगियो दै लेल नहि आबि सकलहुँ।' तँ की जबाब देथिन गामक लोक केँ। लोक जँ पुछनि जे एतेक दिन पर एत' रहबाक लेल किऐ अयलहुँ? माय-बाप चल गेला। घर-आँगन ढनमना गेल। आब तँ दस बरस सँ, जहिया सँ बाबू मुइला, घर मे ताला लागल अछि। ...तखन की कहथिन? ई सभटा प्रश्न रघुवंश केँ मथि रहल छलनि। मुदा रघुवंश केँ इच्छा जनमि गेल रहनि। ओ जड़ि जमबैत चल गेल रहनि। जड़ि जमाक' भकरार होइत गेलनि। रघुवंश अपन कनियाँ सँ गप्प केलनि। गप्प बेसीकाल अंग्रेजी मे होइत छलनि। कखनो क' मैथिलियो मे। कोनो विशेष क्षण मे। बेसीकाल उल्लास मे। हँसी-मजाक मे। गंभीर विचारक गप्प तँ अंग्रजिये टा मे होइत छलनि। तैयो ई बात छल जे कनियाँ मैथिली बेसी बजैत छलथिन। बेटा सभ नहिऐ जकाँ मैथिली बजैत छलनि। आपस मे दुनू बेकती निर्णय केलनि जे गाम जेता। कनियाँ सेहो संग जेथिन।

रघुवंश एहि विचार मे लागल रहला जे कोनो पैघ काज गाम जा क' कयल जाय। तखने हुनका मंदिर बनेबाक बात मोन मे आयल रहनि। सीताराम मंदिर। ओ जनैत रहथि जे मंदिरक नाम पर गामक लोक प्रसन्न हैत। धार्मिक आ आस्तिक बूझत। मंदिरक माध्यमे फेर सँ अपन एकटा समाज बना लेब। कतेक केँ रोजगार भेटि जेतै। गामक सम्पत्ति सेहो मंदिरक नाम पर ट्रस्ट बना क' सुरक्षित भ' सकैए। मंदिरक माध्यमे आन सामाजिक काज सेहो क' सकब। अपन एहि निर्णय सँ ओ परिवार केँ अवगत करौलनि। दुनू बेटा संग जेबाक इच्छा व्यक्त केलथिन। जेठ बेटा केँ मंदिर बनेबाक विचार पसिन्न भेलनि। हुनकर विचार रहनि जे भारतक लोक मंदिर-मस्जिद सँ बहुत प्रेम करैत अछि। तेँ मंदिर बनायब सभ

सँ नीक रहत। छोटका बेटा केँ लोक पसिन्न रहनि। भारतक संबंध मे बहुतो किताब पढ़ने रहथि। मिथिलाक संबंध मे फराक सँ बेसी ज्ञान नहि रहनि। खाली एतबे बूझल रहनि जे ओहिठामक लोक बहुत गप्पी होइत अछि। ओ गप्प सुन' चाहैत रहथि। लोक कोना सुनबै छै गप्प! आ गप्प लड़बै छै कोना? ई कोना संभव होइत छै? ओ देख' चाहैत छला। सुन' चाहैत छला। हुनका सूचना तकनीकक अध्ययन छलनि। सूचना तकनीक मे निपुणता प्राप्त केने रहथि। रघुवंशक बेटी राजनीतिक अर्थशास्त्र पढ़ने छली। एकटा दक्षिण भारतीय सँ बियाह केने रहथि। ओ चाटर्ड एकाउन्टेंट छला। दुनू कमाथि फूट-फूट। ओ लोकनि भारत जयबा लेल तैयार नहि रहथि। कहलथिन जे संभव नहि अछि। एखन छुट्टी नहि होयत। अंततः रघुवंशक आग्रह पर एहि बातक लेल तैयार भेल रहथि जे मूर्तिस्थापन काल मे उपस्थित रहता। असल मे रघुवंशक बेटी केँ भारत मे समय बितायब कठिन बुझेलनि। ताहू मे गाम मे। मिथिलाक गामक संबंध मे अपन बाप सँ ओ जे सुनने छली तकरा हिसाब सँ ओ घर सँ बाहर नहि निकलि सकैत छली। घरे मे बंद रह' पड़तनि। ककरा सँ गप्प करती? की गप्प करती? कोना समय बितौती! ओ खाली तीन दिन लेल जायब गछलनि। असल मे रघुवंश केँ जखन बेटा सभ गाम जेबाक लेल उत्सुक भेलनि तँ एकटा आर इच्छा मोन मे जागि गेलनि। बेटियो-जमाय जँ चलितय। एही इच्छाक कारणें ओ विशेष प्रयास केलनि आ तीन दिन लेल बेटी-जमाय केँ गाम अयबा पर सहमत केने छला। आब रघुवंश प्रसन्न रहथि। हुनका ई विश्वास हुअ' लागल छलनि जे गाम मे मरबाक इच्छा पूर्ण भ' सकैत अछि। एक संतुष्टिदायक जीवनक अंत। ओ रोमांचित रहथि।

जखन रघुवंशक परिवार गाम जेबाक निश्चय केलक तँ तकर तैयारी लेल मैथिली पढ़ब आवश्यक बुझलक। दुनू बेटा एहि लेल बेसी उत्सुक रहथि। रघुवंश दुनू बेकती केँ सेहो एहि मे रुचि उत्पन्न भ' गेल रहनि। भाषाक संग समाज केँ फेर सँ जनबाक बेगरता अनुभव कर' लगला। रघुवंश केँ एहि लेल सत्यदेव मोन पड़लथिन। सत्यदेव लंदनक राममंदिर मे पुजेगरी छला। मैथिली मे एम.ए. रहथि। कतहु नोकरी नहि भेलनि। गड़ लागि गेलनि तँ लंदन आबि गेला। मंदिर मे पुजेगरीक काज भेटि गेलनि। वस्तुतः पुजेगरीक नोकरी मादे बुझिऐ क' ओ लंदन आयल रहथि। हुनकर एकटा सम्बन्धिक लंदन मे इस्कोनक एक कृष्ण मंदिर मे पुजेगरी रहथि। ओ शास्त्री धरि संस्कृत पढ़ने छला। सत्यदेव पहिने हुनके लग

किछु दिन रहि पुजेगरीक काज सिखलनि। किछु-किछु तँ पहिनहुँ सँ अबिते रहनि। बच्चे सँ पूजा-पाठ देखैत छला। सम्बन्धीक ट्रेनिंग सँ एकदम निष्णात भ' गेल रहथि। सत्यदेव करैत तँ छला पूजा-पाठ। मुदा अपन पिता जकाँ ओ नहि लागल रहथि। पूजा हुनकर आजीविका मात्र छलनि।

रघुवंश सत्यदेव केँ मैथिली पढ़ाब' लेल कहलथिन तँ ओ प्रसन्न भेला। हर्ष सँ सभ केँ मैथिली सिखब' लगला। सभ मोन सँ सिख' लागल। रघुवंशक दुनू बेटा केँ देवनागरी लिपि नहि अबैत रहनि। पहिने तँ दुनू केँ देवनागरी लिपि सिखै मे बेस दिन लगलनि। तखन भाषा सिख' लगला। क्रमशः घर मे मैथिली पोथी आब' लगलनि। किछु पोथी सत्यदेव लग रहनि, किछु ओ लंदन मे जोगाड़ केलनि। बेसी पोथी सभ भारत सँ मँगबा देलथिन। सभ केँ मैथिली पढ़ब आ बाजब नीक लाग' लगलनि, आपस मे गप्प हुअ' लगलनि।

–'मम्मी! आइ की भानस हेतै? भात बनाउ।'

–'भात संग की खायब? कथी के तीमन?'

–'आलू-पतकोबी के तीमन।' छोटका बेटा माय सँ कहथि। रघुवंश सुनि क' प्रसन्न होथि। खूब हँसी चौल हुअय। कखनो कोनो शब्द पर घमर्थन शुरू भ' जाय। ओ लोकनि मैथिली सिखबाक लेल आ मिथिला केँ जनबाक लेल बहुत रास पोथी पढ़लनि। जँ-जँ पोथी पढ़थि, शब्दक चयन आ ओकर संदर्भ संग प्रयोगक ओझरी बढ़ल जाय। तथापि परिवार, लोक-वेद, सम्बन्ध, प्रेम, वातावरण आ सत्यक अजगुत संसार सोझाँ मे आबि रहल छलनि। पोखरि, धार, छहर, आमक कलम, गाछी, मारिते रास अजगुत-अद्भुत गाछ-वृक्ष, फूल-पात, मंदिर, पर्व-त्योहार, कृषि व्यवस्था आ ओहि सँ पलायन, शहर मे रहनिहार मैथिल मनुक्खक विस्थापन दंश, नागरीकरण आ मनुक्खक प्रकृति-प्रवृत्तिक संग एकटा नव आ चमत्कारपूर्ण समाज उभरि क' लग आबि गेलनि। एकदम लग...। माणिक, रघुवंशक छोटका बेटा अपन डैडी सँ एक दिन पुछलनि– 'डैडी, मिथिलाक गाम मे लोक किये एहन निराश सन रहैए? एत्ते गरीबी किये छै ओहिठाम?' रघुवंश बुझेबाक चेष्टा केलथिन। परम्परा आ सत्ता केँ दोष देलथिन। लोकक आलस्य आ संतोषी जीवनक तथ्य रखलथिन। आगू बढ़बाक इच्छाक अभाव आ उद्यमशीलताक तारतम्य बुझौलथिन। कहलथिन जे अपना ओहिठाम गरीबी केँ ग्लैमराइज करबाक परम्परा रहल अछि। समृद्धि आ उद्यमक विरुद्ध वातावरण सेहो बनाओल जाइत रहल अछि। बहुत पैघ फाँक बनि गेल छै।

एहि सभ गप्प सँ सभक उत्सुकता भारत जेबाक लेल आर बढ़ैत गेलनि। एकटा रहस्यमय वातावरण जेना अपना दिस खींचि रहल छलनि। मैथिली पोथी सभ आइ धरिक अनावृत्त रहस्य-रोमांच सँ एकदम्मे फराक बुझेलनि रघुवंशक परिवार केँ। एहि सभ मे एक वर्ष बीति गेल रहय। रघुवंश एहि समयक उपयोग गाम जेबाक व्योंत मे केने रहथि। अपन योजना फेकन आ जीवछ केँ लिखने रहथिन। गाम अयबाक कार्यक्रम, मंदिर बनेबाक योजना सभटा विस्तार सँ लिखलथिन। बेसी बात ओ रामधनक बेटा जीवछ केँ जनौने रहथिन। जीवछ गामक स्कूल मे मास्टर रहथि। समाज मे प्रतिष्ठा रहनि। ओ बुझनुक लोक मानल जाथि। रघुवंशक घर-आँगन, खेत-पथार सभक जिम्मा बहुत पहिनहि सँ हुनके पर रहनि। रघुवंशक संग हुनका पत्र-व्यवहार छलनि। घरक जीर्णोद्धार आ मंदिर निर्माणक सभ स्थानीय व्यवस्था हुनके जिम्मा देलथिन रघुवंश। लंदन सँ पाइ पठबथिन। सभ व्यवस्था ठीक भ' गेल। आ एक दिन रघुवंश सपरिवार गाम पहुँचि गेल रहथि।

रघुवंश गाम अयला तँ हुनका अद्भुत निचेनीक अनुभव हुअ' लगलनि। हरेक वस्तु, बात-विचार मे रस आब' लगलनि। पोखरि, इनार, गाछी, कलम, धार सभ एकदम नव लगनि। सभक प्रति एक लगाओक अनुभव करथि।

लोक सभक गप, आवेश-पातीसँ मोन हुलसल-फुलसल लगनि। गाम जेना हुनका एक्के बेर गसिया क' पकड़ि लेने छल। जँ-जँ गाम मे समय बीतल गेलनि तँ-तँ रघुवंश गाम सँ सटैत गेला। मंदिरक निर्माण योजना चलि रहल छल। सभटा भार जेठ बेटा सुब्रत आ जीवछ पर छल। रघुवंश एकदम अपना मोने जीबि रहल छला। छोटका बेटा माणिक लोक सभ सँ खूब गप्प क' रहल छला। मैथिली पोथीक खोज करथि ओ। कोन नब पोथी सभ निकलल अछि एहि बीच मे। ककरो सँ पोथी सभ पर गप्प कर' चाहथि। बुझ' चाहथि सभटा बात। फेकनक छोटका बेटा संजय हुनकर दोस बनि गेल छल। गामक चौक पर ओकरे हार्डवेयर दोकान पर माणिकक अड्डा जमै। जीवछक जेठका बेटा सुरेश, भोल झाक खिसक्कड़ बेटा दयाशंकर, जोगी कामतिक बेटा आनन्द, रामखेलावनक भातिज बच्चू सभ माणिकक संगी भ' गेल रहनि। सभ पढ़ल-लिखल रहय। कियो विज्ञान पढ़ने रहय, कियो कॉमर्स। कियो सोझे बी.ए. पास रहय।

सभ बेरोजगार। चौक पर समय काटैवला। सभ केँ माणिक नीक लगै। माणिकक गप्प पसिन्न पड़ै। लंदनक गप्प-सप्प सुनि चकबिदोर लागै। मुदा मैथिली

पोथी पर गप्प करबाक लेल कियो तैयार नहि रहय। कियो किछु पढ़नहुँ रहय तँ माणिकक जिज्ञासा शान्त नहि क' पाबय।

एक दिन सभ एकटा मोट सनक लोक केँ पकड़ि क' अनलक। सभ सुनने रहय ओहि विशाल देहयष्टिवला लोकक बारे मे। बड़का विद्वान छथि। शेक्सपीयर कहैत छलनि लोक हुनका। शेक्सपीयरक ओथेलो आ हेमलेट जीह पर छलनि। जरूर ओ मैथिली पोथी पर गप क' सकैत छथि। मुदा शेक्सपीयर साहेब लगले टन्न सँ रहि गेला। हरिमोहन झाक 'कन्यादान' आ तंत्रनाथ झाक 'कीचक-बध' सँ आगू नहि बढ़ि सकला। तैयो माणिक खोदि-खोदि क' हुनका सँ गप्प केलनि।

ओ सभ साहित्य पर गप्प करबाक लेल एक टा दोसर विद्वान दयानंद ठाकुरक नाम लेलक। ठाकुरजी स्थानीय कॉलेज मे मैथिली पढ़बैत छला। संस्कृतक नीक ज्ञान रहनि। ओ अयला तँ माणिक के ज्योतिरीश्वरक 'वर्ण रत्नाकर' आ कविशेखर बद्रीनाथ झाक 'एकावली परिणय'क बात कहलथिन। मधुपजीक 'राधा विरह'क साहित्यिक विवेचन प्रस्तुत केलनि। माणिक केँ ई सभ बात नीक लगलनि, मुदा संतोष नहि भेलनि। ओ अजुका लोकक बारे मे सुन' चाहैत छला। जान' चाहैत छला जे गाम-घरक एहि दुःस्थितिक की सभ कारण मैथिली साहित्य मे आयल अछि। साहित्यक केहेन प्रभाव समाज पर पड़ल अछि। ई इलाका किएक एतेक पछुआयल अछि। मुदा एहि सभक कोनो उत्तर नहि भेटनि। सभ एहि लेल नेता सभ केँ दोष दैत छल। माणिक केँ भेल रहनि जे नेता सभ एहि इलाका केँ लूटि लेलक अछि। मुदा लोक सभ किए एतेक चुप अछि? किए लूट' दैत छै? ओ साहित्य सँ आब समाज दिस बढ़ि रहल छला। चमरटोली मे जा क', मुसहरटोली मे जा क', मलहटोली मे, कुजड़ा सभक घर मे, बभनटोली मे घूम' लगला। लोक सभ सँ गप्प करथि। माणिक केँ हुअ' लगलनि जे समाज मे बहुत बात सभ छै। एहन-एहन बात सभ जे भरिसक साहित्य मे नहि आयल अछि। हुनकर मोन खिन्न हुअ' लगलनि। एम्हर सुब्रत मनोयोगपूर्वक मंदिर बनेबाक व्योंत क' रहल छला। एहि क्रम मे हुनका नेता, व्यापारी, अफसर सभ सँ सम्पर्क बनि रहल छलनि। ओ देखि रहल छला जे लंदन, न्यूयार्क लेल बहुत श्रद्धा छै लोकक मोन मे। यूरोपक शहर आ देश सभ चकविदोर लगौने अछि सभकेँ। अपना ओहिठामक व्यवस्था सँ सभ एकदम असंतुष्ट अछि। लॉ एण्ड ऑर्डर सँ त्रस्त अछि। जीवन असुरक्षित मानैत अछि। बेसी लोक पुछनि सुब्रत सँ. 'लंदन मे कय बजे राति धरि लोक घुमैत-फिरैत रहैए? कते बजे धरि दोकान खुजल रहैत छै? लॉ एण्ड आर्डरक

समस्या छै की नहि? सुब्रत सभक जिज्ञासा शान्त करथि। व्यवस्थाक गप्प कहथि। अपराधक गप्प कहथि। अपराध कत' नहि छै। मुदा सरकारक व्यवस्था कड़गर छै। व्यवस्था बिना हस्तक्षेपक काज करैत छै। समय पर कार्रवाई होइ छै। अपराधी केँ दण्ड भेटैत छै। सुब्रत अपन मत राखथि।

गामक चौक पर मंदिर आ रघुवंश परिवारक गप्प पसरल रहय। जखने कियो चारि गोटा एकठाम बैसय, चर्चा शुरू भ' जाय।

—'रघुवंश बाबू पोखरि-धार, बाधे-बोन मे किएक बौआइत रहैत छथि? छोटका-बड़का सभ सँ किए एतेक आबेस सँ गप्प करैत छथि? कियो अपन जिज्ञासा राखि दिअय। ककरो कहब रहै जे— 'एतेक दिन पर गाम आबि क' बुढ़बा बताह भेल अछि। कत्ते बढ़ियाँ लंदन मे रहैत रहय। कोन कुकुरमाछी कटलकै जे गाम आबि गेल। गाम मे आबि क' सीताराम मंदिर... ई मंदिर बनि क' की हेतै? के एकर व्यवस्था देखत? अपने सभ त' एत' रहता नहि। किएक रहता? लंदन सन जगह छोड़ि क' एहि उजाड़ गाम मे कोन सुख छै?' कतेक गोटा केँ एहि मे बहुत पेंच सभ देखानि।

—'अरे, अहाँ नहि बुझै छियै भाइ! बुढ़बा बड़ चरबर-चलाक अछि। आब ओ एहीठाम रहत। बेटो सभ एहीठाम रहतै। लंदन मे आब समय ठीक नहि रहलै। भारतीय सभ संग भेदभाव कयल जाइत छै। भारतीय पर आक्रमण बढ़ि रहलैये। कारी-गोरक झगड़ा ओत' पसरि रहल छै। एहना मे बुधियारी केलनि जे डेली-खोंगी ल' क' गाम चल अयला। एहीठाम आब अपन बिजनेस पसारता। रुपैयाक कोनो कमी छनि? भरि जीवन रुपैये अरजने छथि ने।'

एक दिन सभ माणिक केँ घेरने रहय। आबेस सँ अपना लग बैसौने रहय।

—'की बाउ, मंदिर बनि जायत तखन की करब अहाँ सभ? आर कत्ते दिन गाम मे रहब?'

—'मंदिर बनि जायत तँ मूर्त्तिस्थापनक बाद हमसभ लंदन चल जायब।' माणिक सोझे जवाब देने रहथिन। मुखियाजीक बालक घनश्याम पूछि देने रहथिन,

—'माणिक बाबू खाली मंदिर बनेबाक लेल अहाँक डैडी किएक अयला एत'? मंदिर के कोन छै, लंदने मे बना लितथि।' माणिक कनेकाल चुप्प रहला। फेर कहलथिन. 'ई बात तँ अहाँ केँ डैडी सँ पुछक चाही। हम की कहि सकैत छी? हमरा सभकेँ तँ फैसला सुनौलनि। हमरा सभकेँ संग अयबा लेल नहि

कहलनि। हमही सभ निर्णय केलहुँ जे आयब। हमसभ डैडीक गाम देख' चाहैत रही।' एक गोटे तखने पूछि देने रहथि– 'डैडीक गाम मे की सभ देखलहुँ? केहेन लागल?' माणिक कने हँसल रहथि। बजला. 'बहुत अजगुत लागल। पोथी सभ सँ एकदम भिन्न। जते हम जनैत छलहुँ पहिने सँ, से एकर आगू किछु नहि अछि। अद्‌भुत अछि सभ...।'

–'केहेन अद्‌भुत?' एकगोटा बीच मे टिपलक। माणिक गंभीर भ' गेला।

–'सभ किछुक अछैत किछु नहि। कतेक समृद्धि, मुदा कतेक गरीबी। कते दुःख अछि एहिठाम। मुदा लोक दुःखे मे कत्ते प्रसन्न रहैए। जीवनक कतेक चहल-पहल अछि। लोक कते अपस्याँत रहैए। तैयो दू साँझक बुतात कहाँ भेटि पबैत छै? लोक सभ लगैए जेना गरीबी के नियति मानि लेने हुअय। हमरा होइ छल जे एहिठाम बहुत लोक रहैत हैत। मेला लागल हेतै। लेकिन से बात नहि छै। घरक बेसी समाँग तँ शहरे धेने अछि।'

–'अहूँक डैडी तँ पड़ा क' चले गेला। एत' कहाँ रहला। सभटा सम्पत्ति, घर-आँगन छोड़ि देलनि। ओ तँ गाम मे जीवन निर्वाह क' सकैत छला। तैयो चल गेला।' माणिक एहि बातक कोनो जवाब नहि देलनि। ओ अपन डैडीक सम्बन्ध मे किछु नहि बाज' चाहैत छला। डैडीक बात डैडी जानथि। ओ अकस्मात पूछि देने रहथि– 'अहाँ सभ गाम मे किए छी? अहाँ सभक जीवन निर्वाह भ' रहल अछि की?' एक व्यक्ति पकठोस सन जवाब देलनि– 'जीवन-निर्वाह होइते अछि की? नहि तँ गाम मे किए छी। भागि गेल रहितहुँ।' सभ हँसल रहय। तखने माणिक पुछने रहथि– 'की अहाँ सभ संतुष्ट छी अपन जीवन सँ। धनीक होइ तकर इच्छा नहि होइत अछि? जे चाही से खर्च करी। जे चाही से पहिरी-ओढ़ी। जे चाही से खाइ। जत' चाही, घूमि-फीरि सकी। से इच्छा तँ होइते हैत। आ की नहि?' सभ कने काल लेल चुप्प भ' गेल रहय। एक गोटे बजला एहि पर– 'इच्छा किएक नहि हैत। मुदा इच्छे भ' क' की? डाँड़ मे जखन सामर्थ नहि अछि तखन इच्छे की? असल मे हमरा सभ केँ जेबीक हिसाब सँ इच्छा होइए। इच्छा आ मोन केँ हमसभ बान्हि क' रखने छी। दुनू साँझ पानि भरबै छियनि। बाइ ढील भेल रहैत छनि मोन आ इच्छा दुनू के।' कहि क' ओ हँसल। माणिक केँ मुदा हँसी नहि लगलनि। ओ फेर पूछि देलनि– 'जेबीक वजन किए नहि बढ़ब' चाहैत छी अहाँ सभ? जेबी भारी रहत तँ नब-नब इच्छाक जन्म हैत। मोन बेग सँ दौड़त। दुनिया मे कत्ते सुख छै, सभक भोग करब।' एहि पर एक गोटे कहलथिन– 'औ माणिक

बाबू! अहूँ सभ हमरा लोकनिक जेबी भरिगर करबाक व्योंत कहाँ करैत छी? गामो अयलहुँ अछि तँ मंदिर बनब'। जेबी तँ आर हल्लुके होयत मंदिर मे। कने जेबी भरिगर करबाक व्यवस्था करू ने। देखियै हमहूँ सभ जे दुनिया मे कत्ते सुख छै।' एहि बात पर माणिक गंभीर भ' गेला। कनेकालक बाद कहलथिन. 'अहाँ सभ मंदिरक योजना सँ प्रसन्न नहि छी की? सौंसे गाम तँ लगैये खूब प्रसन्न अछि।' एहि पर ओ युवक लगले उत्तर देलथिन– 'कने विचारि क' देखियौ माणिक बाबू, कतेकरास मंदिर तँ अछिये चारूकात। तै पर फेर एक नव मंदिर बनि क' की होयत? ओहो तँ एक टा 'लाइबिलीटीये' भ' जायत। एहि सँ बरू अहाँ सभ अस्पताल बनबितहुँ। स्कूल खोलि दितहुँ। कॉलेजक निर्माण करितहुँ। दुनिया मे एक सँ एक ज्ञानक प्रचार-प्रसार भ' रहल छै। ओकरे शिक्षण-प्रशिक्षणक व्यवस्था करितहुँ। लोक केँ कत्ते उपकार होइतै।' युवकक गप्प सुनि माणिक गंभीर भ' गेल रहथि। फेर कहलथिन. 'बात तँ अहाँ ठीके कहैत छी। डैडी परसू मंदिर निर्माण लेल सभाक आयोजन केनहि छथि। अहूँ सभ के बुझले अछि। सभा मे गाम भरिक लोक जूटत। ओत' अहाँ सभ अपन बात राखि सकैत छी।' कहि क' माणिक उठिक' ठाढ़ भ' गेला। मुखियाजीक बालक घनश्याम कहलथिन. 'माणिक बाबू, एहि मे अहाँ केँ सहयोग कर' पड़त।' माणिक किछु उत्तर नहि देलथिन। मुस्कुरेला आ सभ सँ हाथ मिला क' विदा भ' गेला।

संस्कृत पाठशालाक मैदान मे पूरा गाम जुटल छल। लग-पासक आन गामक लोक सभ सेहो आबि गेल छला। रघुवंश एहि लेल सभ केँ सूचना पठौने रहथि। दू मास सँ एहि सभाक आयोजन लेल ओ अपस्याँत रहथि। बूढ़, जुआन सभ तरहक लोक सँ सभा गनगन क' रहल रहय। रघुवंश विस्तार सँ अपन बात सभा मे रखने रहथि। सीताराम मंदिर बनेबाक योजना, मंदिर व्यवस्था लेल ट्रस्ट बनेबाक बात। आन-आन सामाजिक कार्य ट्रस्टक माध्यम सँ करबाक इच्छा।

–'हमर सपना अछि जे एत' भव्य सीताराम मंदिर बनय। एहन मंदिर जकरा देख' दूर-दूर सँ लोक आबय। पूजा-अर्चना करय। मुदा हम अहाँ लोकनिक सहमतिक बिना ई काज नहि कर' चाहैत छी। अहाँ सभ सहमति देब तँ हम एहि काज के एक वर्ष मे पूर्ण क' देब।' कहि क' रघुवंश चारू दिस तकलनि। किछु गोटय बेरा-बेरी एहि काज मे समर्थन देबाक अपील सभ लोक सँ केलनि– 'रघुवंश बाबूक इच्छा एकदम स्वागत योग्य अछि। एहि सम्पूर्ण इलाका मे एकोटा सीताराम मंदिर नहि अछि। हमरा सभ जी-जान सँ एहि पुण्य काज मे हिनकर सहयोग

करब। मंदिर-निर्माण मे ककरो की आपत्ति भ' सकैत छै।' एहि पर एक युवक ठाढ़ भ' क' बाज' लगला— 'हमरा सभ केँ मुदा आपत्ति अछि। मंदिरक निर्माण सँ हमरा सभ केँ कोन उपकार होयत? कतेको मंदिर तँ चारूकात अछिये। रघुवंश बाबू डाक्टर छथि। सुनै छी लंदन मे बेस यश अर्जित केने छथि। रुपैया छनि। हमर अनुरोध होयत जे ओ अस्पताल किएक ने बनबैत छथि। एहि इलाका मे नीक अस्पताल नहि अछि। सुविधा-सम्पन्न अस्पतालक एत' कतेक जरूरत छै से अहाँ सभ केँ नीक जकाँ बूझल अछि।' एहि प्रस्ताव पर बड़का घोंघाउज शुरू भ' गेल रहय। कनेककाल विभिन्न वक्ता अपन-अपन बात राख' लगला। कियो मंदिरक निर्माणक समर्थन मे रहथि तँ कियो अस्पतालक। सभा मे स्पष्टतया दू दल बनि गेल छल। एही बीच मे फेकन ठाढ़ भ' क' सभ केँ चुप्प रहबाक अनुरोध केलनि। फेर कहलथिन— 'रघुवंश बाबू हमर नेनपनक संगी छथि। हमरा नेने सँ बड़ मानैत छथि। ओही अधिकार सँ हम अनुरोध करबनि जे सीताराम मंदिर नहि बनाबथु। मिथिला मे सीताराम मंदिर बनेबाक परंपरा नहि रहल अछि। कतहु अछियो तँ से मारबाड़ी सभक बनाओल वा जमींदार सभक ठाकुरबाड़ीक रूप मे। युवक लोकनि ठीक कहैत छथि। एहि गाम मे अस्पताल बनय। रघुवंश बाबू अस्पताले बनाबथु।' फेकनक एहि बात सँ युवक लोकनि केँ बल भेटलनि। ओ लोकनि रघुवंश केँ अस्पताल लेल सभ प्रकारक सहयोग करबाक वचन देलनि। अंत मे रघुवंश ठाढ़ भ' घोषणा केलनि जे ओ गाम मे अस्पताल बनौता। ओ गद्‌गद् स्वरें कहलनि— 'हम लंदन सँ मंदिर बनेबाक निआर क' क' चलल छलहुँ। सभ योजना एकदम तैयार छल। ईंटा, बालु, सीमेंट, छड़, सभ आवश्यक सामग्रीक ब्योंत भ' गेल रहय। हमर लंगोटिया फेकनक विचार भेलनि जे एहि लेल गामक सहमति लेल जाय। हमरा हिनकर बात महत्त्वपूर्ण लागल। हम गामक बैसार लेल सभ केँ सूचित कयलहुँ। गौंआ सभ खास क' कय युवक लोकनिक विचार आयल अछि जे मंदिरक बदला अस्पताल बनय। हम सहमत छी। अस्पताले बनत आब।' सभा मे प्रसन्नता पसरि गेल। किछु लोकक मोन अवश्य छोट भेलनि। ओ सभ कने उत्तेजितो भेला, मुदा बेसी लोकक अस्पताल प्रति झुकाओ देखि चुप्प रहि गेला।

अस्पतालक योजना मे रघुवंश दुनू बेटा आ गामक किछु युवक लोकनि संग विचार-विमर्श केलनि। विमर्शक बाद सुब्रत कम्प्यूटर पर अस्पतालक डिजाइन बनौलनि। रघुवंशक दुनू बेटा सभ टा भार अपन उपर ल' लेने रहथि। गामक लोक संग मीलि क'

काज करबा मे दुनू केँ अपूर्व सुख भेटि रहल छलनि। सभटा व्यवस्था एकदम पक्का भ' गेल। रघुवंशक बेटी-जमाय लिखलथिन जे ओ सभ शीघ्रे पहुँचि रहल छथि। अस्पताल निर्माणक खबरि सुनि ओ सभ उत्साहित भेल रहथि। अन्ततः गाम मे अस्पतालक शिलान्यास खूब धूमधाम सँ सम्पन्न भेल। शिलान्यासक अवसर पर रघुवंशक बेटी-जमाय संग सम्पूर्ण परिवार उपस्थित छल। गौंवे सभ नहि, इलाकाक अधिकांश लोक थहाथही क' रहल रहय। शिलान्यासेक संग भवन निर्माण कार्य सेहो जोर-शोर सँ चल' लागल। दुनू बेटा संग हुनकर मित्रमंडली हरदम मोस्तैद रहैत छल। इलाकाक जन-मजदूर सभ, राज-रेजा अस्पतालक निर्माण मे लागि गेल। पीह-पाह मच' लागल।

एक राति रघुवंश सूत' लेल गेला तँ अपन कनियाँ सँ कहलनि— 'एकटा बात कहू। गाम-घर तँ जीबाक लेल होइ छै। मरबाक लेल नहि। हम तँ अनेरे मरबाक बात सोचलहुँ। हमरा सभ केँ तँ खूब जीबाक अछि एखन।' कनियाँक चेहरा पर प्रसन्नता एकदम भकरार भ' आयल। ओ अपन पति मे जीबाक नव उत्साह सँ गद्‌गद् रहथि। कहलथिन. 'हमहूँ एकटा बात कहैत छी। अस्पतालक काज चलिये रहल अछि। सुब्रत आ माणिक सभटा भार उठा लेने छथि। अपने सभ चलू किछु दिन लेल एत' सँ निकलि चली।' कनियाँक बात पर रघुवंश हुनकर मुँह दिस ताक' लगला। पुछलथिन— 'कत' जाय चाहैत छी अहाँ?'

—'अहाँक सासुर।' कनियाँ मुसकुराइत बजली।

—'आ अहाँक नैहर नहि? दुनू हँस' लागल रहथि।

■■

राग

ओहि दिन बकरीद रहै। गणेश्वर बाबू मुजफ्फर साहेबक संग हुनकर डेरा गेल रहथि। मुजफ्फर साहेब कुरबानी देने छला। सभ बरख दैत छथि। फेर बाँटि-कूटि क' खाइत छथि। आने बरख जकाँ एहू बेर गणेश्वर बाबू मुजफ्फर साहेबक संग हुनके स्कूटर पर गेल रहथि हुनका ओहिठाम। मुजफ्फर साहेब गणेश्वर बाबू केँ डेरा पर आबि ल' जाइत छलथिन। फेर पहुँचाइयो दैत छलथिन। नोकरी मे गणेश्वर बाबू मुजफ्फर साहेब सँ सीनियर रहथि। तकर रूआबो रहैत छनि तैयो दूनूक बीच संवाद बढ़ैत गेल छल। दूनू मे खूब पटय लगलनि। सम्बन्ध मजगूत होइत गेलनि। सम्बन्ध मजगूत हेबाक कारण छल। से कारण ऑफिस छल। मुदा ऑफिसेटा नहि छल। किछु आरो छल।

गणेश्वर बाबू ओ मुजफ्फर साहेब एक इलाकाक रहथि। तिरहुतिया रहथि। मुजफ्फर साहेबक अब्बा फिरंगी जमानामे रजिस्ट्री ऑफिसक रजिस्ट्रार भेल रहथि। आजादीक बाद धरि रहला। गणेश्वर बाबूक पिता दरभंगा राजमे ड्योढ़ी सुपरिन्टेंडेंट रहथि। महराजक परोक्ष भेला पर मुदा नोकरी छोड़ि देलनि। गामे रहय लगला।

मुजफ्फर साहेवक स्कूटर पर चढ़ि क' गणेश्वर बाबू गपक मनःस्थिति मे आबि गेल छला। एहि मनःस्थिति मे अयबाक कारण मासु छल। मुदा मासुएटा नहि छल। किछु आरो छल।

मुजफ्फर साहेब हेलमेट पहिरने छला। स्कूटर पर गणेश्वर बाबूक गप सुनबा मे हुनका असुविधा होनि। तैयो गप मे एतबा संग तँ दैये देथि जे गणेश्वर बाबूक उत्साह भंग नहि होनि। पाछूमे बैसल गणेश्वर बाबू किछु ने किछु बतियाइत रहथि। बजैत रहथि। मुजफ्फर साहेब टेक धेने रहथिन। धा बेर मे तँ जूमिये जाथि। गपक ताल-मात्रा तँ ओ जनिते रहथि। मुदा एक बेर गणेश्वर बाबूक कोनो बात नहि सूनि सकलथिन तँ पूछि देलथिन– 'की बोलिलियै सर?'

–'कहलहुँ जे मैथिली मे गपक बड़ छटा छैक।'

मुजफ्फर साहेब केँ गप बुझबा मे तँ अयलनि मुदा छटा नहि बुझलथिन। बजला– 'गप बाजिबे नफीस होइ छै। पर ई छटा के की मतलब?'

कनेकाल लेल गणेश्वर बाबू अकचकेला मुदा लगले सम्हरि गेला।

कहलथिन. 'छटा छियै चार्म। चार्म बुझलियै ने?'

मुजफ्फर साहेब हुंकारी भरलनि। मुदा किछु बजला नहि। ओ जेना किछु सोचय लागल रहथि।

गणेश्वर बाबू अपन प्रवाहमे रहथि। जोशमे छला। गप लेल उताहुल रहथि। स्कूटर पर से सम्भव नहि लगलनि। ओही मिजाज मे मुदा मुजफ्फर साहेबक डेरा पहुँचि गेला। डेरा पहुँचला पर पाँती जोड़ि, मुजफ्फर साहेबक बेटा-बेटी गणेश्वर बाबू के नमस्ते केलकनि। दूटा बेटा आ एकटा बेटी। सभ एकदम अनुशासित रहय। लगैत रहय जेना सभ हुनके प्रतीक्षा मे करेकमान मोस्तैद अछि। ड्राइंग रूम मे आबि सोफा पर बैसला गणेश्वर बाबू। चारू दिस नजरि घुमौलनि। परूँका सँ एहि बेर कोनो खास परिवर्त्तन नहि भेल रहैक। सभ किछु ओहिना अनामिते छल। मक्का-मदीनाक चित्र। मुजफ्फर साहेबक अब्बा ओ अम्मीक फोटो। काठक बनल खेलौना सभ। सिक्की, पथिया, मौनी, हाथी आ मयूर। रेशमी कपड़ामे लपेटल कुरानशरीफ। नमाज पढ़बा कालक पटिया। करघाक बूनल पर्दा ओ मेजपोश। अपन-अपन स्थान पर राखल। एकदम व्यवस्थित। गणेश्वर बाबूकेँ लगलनि जे कोठलीमे राखल कोनो वस्तुकेँ कनियो एम्हर-ओम्हर नहि कयल जा सकैत अछि। कोनो परिवर्त्तन कएला सँ जेना भारी मोश्किल भ' जेतै।

मुजफ्फर साहेब एहि बीच मे भीतर सँ भ' आएल रहथि। आबि क' बैसैत कहलथिन– 'अच्छा, ई छटा के बदला रौनक नइ हो सकै छै?' गणेश्वर बाबूकेँ खुशी भेलनि। मुजफ्फर साहेब गपक ताग धेनहि छथि। कहलथिन– 'औ मुजफ्फर साहेब भ' की नहि सकै छै। रौनक घरमे होइ छै। चेहरा पर होइ छै। गपमे मुदा छटा हेतैक।' कहि क' हँसला गणेश्वर बाबू। मुजफ्फर साहेबकेँ सेहो हँसी लगलनि। गणेश्वर बाबू आगू बढ़ला। कहलथिन– 'औ, एकटा बात बुझलियै। अहाँक सिरहर-सलामी तँ हमर चिनबार धरि पहुँचल अछि। चिनबार बुझैत छियैक ने?'

मुजफ्फर साहेब केँ बूझल छलनि। लगले उत्तर देलथिन– 'अहाँ सब के कुलदेवी जहाँ रहै छथ घर मे, ऊ जग्गह के चिनबार कहल जाइ छै।'

गणेश्वर बाबू प्रसन्न रहबे करथि। आरो प्रसन्न भेला। कहलथिन– 'औ, अहाँक बदना हथहर बनि बैसल अछि। अदद सँ हौसला धरि अंगेजने छी हम सभ। दूनू गोटे केँ अफसोस आ अंदेशा एके रंग होइये।' कहि गणेश्वर बाबू

मुजफ्फर साहेब दिस गहिकी नजरि सँ तकलनि। मुजफ्फर साहेब जोर सँ हँसला। हँसिते कहलथिन– 'सर, अब थइ-थइ हो गेलइ।' एहि बात पर दूनू गोटे जोर सँ ठहक्का लगौलनि। एत्ते जोरसँ ठहक्का लगौलनि जे भाइ सभ सँ छोट मुजफ्फर साहेबक बेटी केबाड़ लग आबि क' मुलुर-मुलुर ताकय लागल। फेर लगले पड़ायल।

अजुका दिन मासुक भोज खाइ छथि गणेश्वर बाबू। आब वर्ष मे दूइये दिन मासु खाइ छथि। मुजफ्फर साहेबक ओहिठाम बकरीद दिन ओ अपना ओहिठाम दुर्गापूजाक अष्टमी कें। हुनकर कहब छनि जे की कुरबानी आ की बलिप्रदान। खेबा मे तँ ओएह लज्जति आ कि स्वाद। दुनूठाम अश-अश क' उठैत छथि ओ। अकसक भ' जाइत छथि। बरखक बाँकी दिन ओही दू दिनक रसमे बितबैत छथि। आगू मे ठाढ़ होइ छनि तँ खाली मासुक दाम। कतय सँ शुरू भेल आ कतय पहुँचि गेल। हाट हो कि बजार एके भाओ। आब तँ मासुओ पाबनि-तिहारक वस्तु भ' गेल। पाबनि-तिहार मे तँ भाओ सहजहिं अकास ठेकि जाइये।

आब तँ मुजफ्फर साहेब सेहो गणेश्वर बाबूक ओहिठाम अष्टमीकें नोथारी होइत छथि। मुदा पहिले-पहिल खूबे नाकर-नूकर कयने रहथि। गणेश्वर बाबू जखन जोर देलथिन जे आबैये पड़त तँ ओ अपन बाध्यता प्रकट कयने रहथिन– 'बात ई छै सर जे जिबह तँ नइ होत। बिना जिबह के खाइ मे मजहबी तौर पर दिक्कत अइ।'

एहि बात पर गणेश्वर बाबू हुनका बुझेबाक कोशिश केने रहथि।

–'अरे मुजफ्फर साहेब, जिबह आ बलि की? दूनू तँ वधे थिक। बात केवल तरीकाक छैक। झटका सँ मारू कि धीरे सँ, की फर्क पड़ै छै? वध तँ दूनू सँ होइ छै। अइ तरीका सँ की ओइ तरीका सँ। खाइ मे तँ कोनो फर्क नहि पड़ै छै। सभ तँ हाथे सँ मुँह मे धरैए। ई सभ छोड़ू। खेबा मे की मजहब? असल बात तँ स्वाद होइ छै। कहल जाइ छै जे 'जिह्वा जानय छन्द, रस।'

गणेश्वर बाबूक बात पर मुजफ्फर साहेब थोड़ेकाल मौन रहल रहथि। फेर मुसकुरेला। मुदा बजला नहि किछु। गणेश्वर बाबूक ओहिठाम गेला आ खेबो कयलनि मासु। मुजफ्फर साहेबक ओहिठाम गणेश्वर बाबू पहिल बेर सिरका मे डूबल पियाजु खेने रहथि तँ दाँत झनझना गेल रहनि– 'इह बड़ अम्मत छै औ।'

–'अम्मत?' मुजफ्फर साहेब हुनका दिस प्रश्न भरल आँखि सँ देखने रहथिन।

–'खट्टा' गणेश्वर बाबूक मुँह एखनो घोंकचल छलनि। मुजफ्फर साहेब मुसकी दैत कहलथिन– 'गोश्त के साथ ई पाचक होइ छै।'

झोरगर मासु सँ भुजलाहा मासु दिस बढ़ैत गणेश्वर बाबू कें टोकि क' मुजफ्फर साहेब सिरका मे डूबल पियाजु खेबाक आग्रह कयने रहथिन। उत्तरार्द्ध धरि अबैत-अबैत गणेश्वर बाबू पुष्टसँ मासु खा लैत छला। झोरगर आ भुजलाहा दूनू। ही भरि खेलाक बाद हुनका पचबाक डर शुरू होइत छलनि। मासु कब्ज छियै। कब्ज करै छै। ओ सोचय लागथि। ओएह समय होइत छल जखन मुजफ्फर साहेब हुनका फेर सँ सिरकामे डूबल पियाजु खेबाक आग्रह करथिन। एतय धरि अबैत-अबैत गणेश्वर बाबूकें ओहिमे स्वाद आबय लगैत छलनि। एहि बातक भरोस सेहो रहैत छलनि जे आगू मे 'मधुरेण समापयेत' बहुत दूर नहि अछि।

आब तँ मुजफ्फर साहेबक ओहिठाम ठाठ सँ भोजन क' लैत छथि गणेश्वर बाबू। से बात अहमद ओहिठाम पहिले-पहिल खेबा काल नहि भेल रहनि। भीतर मे तहिया बहुत डर रहनि। आशंका छलनि। हुनका सुनल छलनि जे मुसलमान सभ मलेच्छ होइत अछि। भानस करबा काल सभ बस्तुजात कें अइंठ क' दैत अछि। गोमांसक दूइयोटा बूटी मासु मे देने बिना ओ सभ खाइये नहि सकै अछि। हिन्दू सभ कें भ्रष्ट करबा मे ओकरा सभकें बड़ मोन लगैत छै। एहिमे इयार-दोस्तक कोनो रोच नहि रखैत अछि। ई सभटा बात अहमद ओहिठाम खेलाक बाद खतम भ' गेल रहनि। खाइ मे मुदा बड़ पराभव भेलनि। शुरू मे तँ हाथे ने उठनि। कनियें-कनियें खोंटि क' खाथि। आदंक रहनि जे कहीं रद्द ने भ' जाय। मुदा अहमद हुनका भोजन मे प्रवृत्त क' लेने रहथि। ओ खाइत काल बातचीतक छटा एहन अपनौने रहथि जे गणेश्वर बाबू बूझियो जाथि आ सोझे-सोझ हुनका बाजहु ने पड़नि। अहमद फारबिसगंज लगक एकटा गामक रहथि। बहुतो बरख सँ हुनका संग गणेश्वर बाबूक भेट नहि भेलनि अछि। मुदा अहमद हुनका अक्सर मोन पड़ैत रहैत छथिन।

अड़ाँचीक बुकनी छिटल सेबइ खाइत गणेश्वर बाबू फेर सँ अपन लय मे आबि गेल रहथि। बाजिद अली शाहक खीसा सुनबय लागल रहथि– 'एकटा बात

बुझलहुँ मुजफ्फर साहेब। गजब नबाव रहथि बाजिद अली शाह। एक मोन घी मे छानल एकटा कचौड़ी खाइत छला। जखन फिरंगी सभ हुनका गिरफ्तार केलक तँ जहल मे ध' देलकनि। थोड़े दिन तँ एक मन घी मे एकटा कचौड़ी छनबा क' हुनका देलक मुदा कनियें दिनमे बम बाजि गेलैक। सोचलक जे घी कम क' देबैक तँ बुझथिन थोड़े। तेँ बीसे सेर घी मे एकटा कचौड़ी छानि क' परसि देलकनि। मुदा अलबत्त रे नबाव। एक कर मुँह मे देलनि ओ आ कि थूकड़ि देलथिन। कहलथिन जे कुस्वाद लगैत अछि। कोनो लज्जति नहि छै।'

मुजफ्फर साहेब हँसला। कहलथिन– 'अरे ऊ तँ नवाब रहथ सर। लजीज खाना खाइके आदत रहन।'

गणेश्वर बाबू सुर मे रहथि। बजला. 'मुदा जनै छी। भनसियो सभ अलबत्त रहय। एक सँ एक इलमबला। एकटा भनसिया तँ शर्त्त केने रहनि नवाबक संग, जे जखन ओ कहतनि तखने खाय पड़तनि। नहि तँ स्वाद खराब भ' जेतै। एक बेर नवाब कोनो काजमे बाझल रहथि। भनसिया तीन बेर आबि क' कहलकनि मुदा खेबाक लेल नहि उठि सकलथिन। भनसिया नोकरी छोड़ि क' चल गेल।

एहि बात पर मुजफ्फर साहेब सेहो जोश मे अएला। कहलथिन– 'अरे कतना खानसामा तँ खाना सूंघ के कह देत सर, जे कोन-कोन मसाला डालल हय। कतना आँच पर पकाबल हय। कहाँ आँच लरम कि तेज होला से खाना के जायका गड़बड़ हो गेल। जनली सर, एह मुलुक मे खाना, गाना ओ नाच-रंग के लोग दिवाना छै।'

गाना ओ नाच-रंग पर गणेश्वर बाबूकेँ फेर बाजिद अली शाह मोन पड़लथिन। जोशमे अयला। कहलथिन– 'औ मुजफ्फर साहेब! एहन भोगीश्वर बाजिद अली शाह जे नाच करथि औ। अपने कृष्ण बनथि आ गोपी सभक संग रास रचाबथि। कथक करथि।'

गणेश्वर बाबूक एहि गप पर मुजफ्फर साहेब जोर सँ हँसला। हँसिते कहलथिन– 'सर, बाजिद अली शाह रसिया रहथ। इल्मदां रहथ। हुनरमंद तँ रहबे करथ। ऊ तंगदिल कैसे हो सकत रहथ।'

गणेश्वर बाबूकेँ सेहो मुजफ्फर साहेबक बात पर हँसी लगलनि। ओ घूरती मे फेर मुजफ्फर साहेबक स्कूटर पर ओहिना किछु ने किछु बतियाइत घुरला।

हुनकर गप मे आलाप ओहिना रहय। आलाप रहबाक कारण बकरीद छल। मुदा बकरीदेटा नहि छल। किछु आरो छल।

■■

लेमन आइसक्रीम

बबलू बहुत दिनपर गाम गेल रहय। घुरिक' आयल तँ कहलक. 'पापा, गाम मे त' अहाँके बहुत लोक चिन्हैए!' हम चौंकलहुँ। ई की कहि रहल अछि? गामक लोक हमरा किए नहि चिन्हत? गामसँ हमर सम्बन्ध टूटि तँ नहि गेल अछि। एखनो गाममे बहुत लोक जीवित छथि जे हमर नेनपन देखने छथि। कोरा-काँख लेने छथि। गामक लोक कोनो काज सँ पटना अबैत अछि तँ भेंट-घाँट होइत अछि। हुनकालोकनि सँ गामक हाल-चाल बुझैत छी। अखबार मे बाढ़िक समाचार देखैत छी तँ हमरो चिन्ता होइए। बबलू सँ पुछलिऐ. 'से की? की कहै छलह लोक सभ?' हम सविस्तर सभटा सुन' चाहैत छलहुँ। उत्कंठित भ' उठल रही। मुदा बबलूकेँ सविस्तर सुनएबामे जेना कोनो रुचि नहि छलै। बाजल. 'बहुतो लोक अहाँक हाल-चाल पुछै छल।' कहिक' फेर चुप्प भ' गेल। ओकर चुप्पी हमरा खराब लागल। कखनो क' जरूरतो भरि गप ई सभ नहि कर' चाहैत अछि। अद्‌भुत भ' गेलै अछि। एतेक संक्षिप्त कतहु गप हो। जेना प्री-पेड मोबाइल पर बात क' रहल हो! एक-एक शब्दपर पाइ कटि रहल होइ!

बबलू एक मासक छुट्टीमे आयल रहय। बहुत दिनपर भेटल रहै छुट्टी। मुम्बैक ओबेराय शेरेटन होटलमे एसिस्टेंट मैनेजर अछि। मैनेजमेंटक कोर्सक बाद ई दोसर होटल छै। एक बरख दिल्लीमे रहय। मौर्या क्लार्कमे। मुदा एहू जॉबसँ संतुष्ट नहि अछि ओ। आर आगू बढ़' चाहैत अछि। से तेजीसँ बढ़' चाहैत अछि। चाहैत अछि जे आमदनी आर बढ़य। ताहि लेल पब्लिक केटरिंगक विशेष कोर्स करबाक निआरमे अछि। तकरा बाद शेफ भ' सकत ओ। कहैत अछि जे अमेरिकामे दू वर्षक कोर्स क' लेत तँ आर नीक जॉब भेटि जयतै। तैं अमेरिका जएबाक व्योंतमे अछि। एक वर्षमे चल जाएत। हमरा लग पटना अएना एक सप्ताह भेलै तँ एक दिन कहलिऐ. 'बबलू, बीचमे सप्ताह भरिक लेल गाम स' भ' आबह। सभस' भेंट-घाँट भ' जेतह। नूनूकाकी बड़ दुखीत छथि। हुनको देख लेबहुन।' ओ गाम जएबाक लेल तैयार भ' गेल। कहलक. 'बेस, काल्हि चल जाइ छी।' हमरा खुशी भेल। कहलिऐ. 'भिनसर सात चालीस मे झंझारपुरक बस छै। शाही तिरुपति। ओही स' चल जाह। डेढ़-दू बजे तक पहुँचि जेबह। गाम फोन क' दहक।'

—'फोन क' दै छिऐ। मुदा सप्ताह भरि गाम मे की करब?' ओ पूछि देलक।

—'किए? सौंसे गाम घुमबह-फिरबह। कतेको लोकसभ स' भेंट हेतह। गाममे गमैया चीज-वस्तु खेबह। नब-नब स्वाद! तोहर होटल स' एकदम कन्ट्रास्ट।' हम बबलूकेँ उत्साहित करबा लेल कहलिऐ।

मुदा बबलू उत्साहित नहि भेल। कहलक. 'एक दिनक बाद गाममे रहब निरर्थक लाग' लगै छै। भेंट-घाँट भ' गेल बस...। खेनाइ-पीनाइ की? ने बिजली, ने पंखा! रातिमे लालटेनक रोशनीमे घाम-चुबैत खेनाइ केहेन नीक लगतै?'

—'कोनो दोस-महिम नइ छह तोहर गाममे? कियो संगी नइ छह, जकरा स' गप क' सकह? जकरा संग घूमि-फीरि सकह। नेनामे जाह गाम त' कतेक त' तोरा संग रहै छलह!' हम तैयो ओकरा गामक प्रवास लेल रुचि जगएबाक प्रयास कएलहुँ। मुदा ओ सोझे जूआ पटकि देलक— 'कियो गाममे रहै छै? जँ कियो-कहियोक संगी भेटियो गेल त' ओकरा स' गप्प नइ क' सकै छी।'

—'से किए?' हम पुछलिऐ।

—'कोनो काजक गप नइ करत। एहन गप-सप जकर कोनो मतलब नइ। एकदम बोर टाइप के। पाँचो मिनट बितौनाइ मुश्किल।' ओकर चेहरासँ वितृष्णा टपक' लागल रहै। हम आब की कहितिऐ? कहलिऐ. 'ठीक छै। जतबा दिन मोन हुअ' रहि क' चल अबियह।' बबलू आब टी.भी.क स्वीच ऑन क' लेने रहए। स्क्रीन पर संजीवकपूरक 'खाना-खजाना' कार्यक्रम चलि रहल छलै। ओ ओहिमे रमि गेल।

मीराक मृत्युक बाद सँ हमरा अपने हाथ सँ भानस-भात कर' पड़ैत अछि। मीराक मृत्युक आब अट्ठारह वर्ष भेलनि। एहि अट्ठारह वर्षमे एहन अवसर कम्मे आयल जे हमर माँ अथवा बबलूक नानी भानस क' क' हमरा सभकेँ खुऔने होथि। माँ तँ बेर-कुबेरमे आबिक' सम्हारियो दैत छल, मुदा मीराक माँ चाहियो क' से नहि क' पबैत छली। एक तँ पतिकेँ ओ नहि छोड़ि सकैत छली, दोसर मीराक स्मृति हुनका हमरालोकनिक संग नहि रह' देनि। दू-चारि दिन रहथि, कि कोनो दिन कान' लागथि। किछु दिन बबलू आ छाया नाना-नानीक लग रहल। मुदा पढ़बा-लिखबाक लेल ओकरा सभकेँ हमरा लग रहब जरूरी भ' गेलै। हमरा धिया-पूताकेँ खएबा-पीबाक मादे मीराक जागरूकता मोन पड़' लागल रहए। हम अपनेसँ बनाक' दुनूकेँ खुआएब शुरू कएलहुँ। बादमे नोकर रखबाक योग्यतो

प्राप्त भेल, मुदा ताबत दुनूकेँ अपनेसँ बनाक' खुआएब नीक लाग' लागल। जहियाधरि दुनू भाइ-बहीन हमरा संग रहल, भानस करब भार नहि लागए। जखन छाया सासुर चल गेल आ बबलू पढ़बाक लेल दिल्ली, तँ असगरक भानस अबूह लाग' लागल। मुदा ताबत तक अपने सँ भानस करब बाध्यता भ' गेल रहए। आन कियो हमर स्वास्थ्यकेँ दृष्टिमे राखि अन्न-तीमन बनएबामे सफल नहि भ' सकल। एखन धरि चारिटा भनसिया किछु दिन रहि जा चुकला अछि। डाइबिटीज तँ नहि भेल अछि, मुदा हाइ ब्लडप्रेशर भ' गेल अछि। ओना तँ ब्लडप्रेशर यदि नियंत्रणमे रहए तँ ठीक, लेकिन अनियंत्रित भेल तँ कतेको खतरनाक बीमारी सभकें हकारिक' ल' आनि सकैत अछि। रोज एक गोली खाइत छी तँ प्रेशर काबूमे रहैए। नोन-चीनी-तेल-मसल्ला कम खाइत छी। पटनामे कम चीनीवला रसगुल्ला कत' भेटैत छै, से हमरा बूझल अछि। मॉर्निंग वाक करैत छी। रिटायरमेंटक आब तीन बरख रहि गेल अछि।

हम नोकरीमे आबि गेल रही, तखन बाबूजी पटनामे मकान बनौलनि। ओहि मकानमे हमरा दुनू भाइ लेल दू कोठलीक फ्लैटक फूट-फूट व्यवस्था क' देलनि। दुनूक आवास फूट, खएनाइ-पीनाइ फूट। बाबूजी आ माँ फराक फ्लैटमे रहथि। हमर दुनू बहीन अबैत-जाइत रहथिन। जाबत धरि माँ केँ सक्क रहलनि, ओ बाबूजी आ अपना लेल फूटे भानस-भात करथि। समय नीके जकाँ गुदस्त भ' रहल रहए। छायाक जन्म भेलनि, तकर बाद बबलूक। छाया दस वर्षक रहथि आ बबलू सात वर्षक, जखन बड़का दुर्घटना भ' गेल। हीटर सँ करेंट लगलाक कारणे मीराक अकस्मात् मृत्यु भ' गेलनि। हम डेरापर नहि रही। धिया-पूता स्कूल गेल छल। अएलहुँ तँ ने ओ नगरी, ने ओ ठाम। सब किछु समाप्त छल। पहाड़ टूटि पड़ल। मीराकेँ बचएबाक लेल किछुओ ने क' सकलहुँ। से मोन के बेचैन करैत रहल। अपनाकेँ कतबो बुझाबी, बेचैनी कम नहि होअए। किछु दिन धरि अपनाकेँ लोक सभसँ नुकबैत रहलहुँ। मोनक बेचैनी कम करबाक लेल अपनाकेँ छाया ओ बबलूक ताकूतीमे लगबैत गेलहुँ।

मीराकेँ गाम बेसी पसिन्न रहनि। ओ अक्सरहाँ गामक चर्च कएल करथि। लोकसभक संस्मरण सुनाबथि। आबेस-पातक गप करथि। ओ चाहथि जे हमरा लोकनि सभ छुट्टीमे गाम जाइ। ओत' समय बिताबी। हुनका गामक लोक बीच नीक लगनि। मुदा से सम्भव नहि भ' पाबए। घरो-आंगनकेँ व्यवस्थित राखब कठिन होइत गेल। अन्ततः गामक घर बाढ़िमे खसि पड़ल। ओहि डीहपर

फेर घर नहि बनि सकल। मीराकेँ ओ घर खसलासँ दुख भेलनि। ओ जाबत जीवित रहली, गाममे घर बनएबाक लेल बेर-बेर टोकैत रहली। हमरो मोनमे ओ घर बसल रहए। ओहि घर संग हमर नेनपन ओ युवावस्थाक बहुतो स्मृति जुड़ल रहए। घरक कोठलीमे मीराक संग कतेको राति बितौने रही। मुदा ओ घर फेर सँ नहि बनि सकल। ओना कहियो क' गाम गेलापर हमरा सभकेँ कोनो असुविधा नहि होअए। लालकका ओ नूनू ककाक घर रहनि। जहिया कहियो जाइ, ई बोध नहि भेल जे अपन घरमे नहि छी।

मीराकेँ गाम नीक लगबाक कारण रहनि। जहिया गाम जाथि, घरमे मेला लागल रहए। टोल-पड़ोसक सभ स्त्रीगण जेना उनटि क' हुनका सँ भेंट कर' आबथि। ओहो जाबत गाम मे रहथि, सभक आँगन बुलै लेल जएबे करथि। एक बेर कहलनि– 'अपने सभ अहाँक रिटायरक बाद गाममे नइ रहि सकै छी की? हमरा होइए गाममे रहितहुँ!'

–'गाममे रहल हएत? दू-चारि दिन लेल बड़ बेस, मुदा बेसी दिन रहब कोना सम्भव एहत?' हम कहलियनि। ओ चोट्टे कहलनि– 'किए नइ रहल हएत? हमरा शहरमे कोनो लसि नइ लगैए। बेसी लोक मतलबी अछि। केबल काज स' काज। स्वार्थक आगाँ किछु नहि।' हम हुनका खिसिअएबाक लेल कहलियनि– 'आ गाम कोनो स्वर्ग छै की? दू-चारि दिन लेल जाइ छी त' नीक लगैए। ओहीठाम रह' लागब त' बुझबै, कियो घुरियो क' नइ ताकत!' ओ खिसिअएली जरूर, मुदा स्वर संयते रखलनि। बजली. 'कतबो खराब भेल होउ, मुदा गाम मे जे स्नेह-प्रेम छै, से शहर मे कत' पाबी। एत' त' सभ अपने मे टर्र। जाबत धरि प्रशंसा करैत रहियौ ठीक, नइ त' आएब-जाएब बन्द। हमरदम कोंढ़ कपैत रहैए। कोनो अनट-बिनट ने बजा जाए। सभटा झाँपि-तोपिक' गप्प करू। गाममे से सभ कहाँ छै? झगड़ो होइ छै त' फेर मिलान भ' जाइ छै। जेना किछु भेले नहि हो। एत' त' लोक गीरह बान्हि लै छै।'

ओहि दिन हमरा शहरक आवश्यकता ओ उपयोगिता पर एक पेघ सनक भाषण दिअ' पड़ल रहय, जाहिमे कोनो जरूरते-नागहानी डाकदर-बैद आ अस्पताल उपलब्ध होएबाक बात सेहो सम्मिलित छल। मीरा चुप्प तँ भ' गेलि रहथि, मुदा हुनकर चुप्पी हमर तर्कसँ संतुष्टिक नहि छल।

बबलू थोड़ेक काल टी.भी. देखलाक बाद लेमन आइसक्रीम बनएबामे भीड़ि गेल रहय। कहलक. 'ई आइसक्रीम ओकर होटलक स्पेशल आइसक्रीम होइ

छै। ओहिमे अंडाक जर्दी (पियरका भाग), चीनी पीसिक', क्रीम ओ नेबोक रस मिलाओल जाइ छै। एहि आइसक्रीम के बनेबाक लेल फ्रिज के न्यूनतम तापमान पर सेट कर' पड़ै छै। अंडाक पियरका भाग के इलेक्ट्रिक बीटर स' गाढ़ ओ हल्लुक हेबा धरि फेंटल जाइ छै। नेबोक रस ओहिमे द' क' मिलाओल जाइ छै। क्रीम के गाढ़ हेबाक धरि फेंट' पड़ै छै। तकर बाद क्रीम के अंडामे द' क' नीक जकाँ मिलाओल जाइत छैक। तकरा ब्रेड टिन मे ध' क' फ्रिजर मे एक घंटाक लेल छोड़ि देल जाइ छै। फेर फ्रिज सँ निकालिक' नीक जकाँ चम्मच स' मिलाओल जाइ छै। तकर बाद फ्रिजर मे दू घंटा धरि राख' पड़ै छै। अन्तमे स्लाइस सन काटिक' परसल जा सकै अछि।' ई सभ कहिक' आइसक्रीम तैयार क' फ्रिजमे राखि देलकै। आब ओकर होटलक स्पेशल आइसक्रीम दू घंटाक बाद निकालिक' खाएल जा सकैत अछि। हम आब चिखबे टा करब। ई सभ चीज बेसी नहि खा सकैत छी। बबलू जहिया कहियो कोनो वस्तु बनबैए तँ ओकर इच्छा रहैत छै जे हम ओकर स्वाद ली। मुदा हमरा तेल-मसल्ला-क्रीम-घी खएबामे कोंढ़ कपैत रहैए। दुख द' देबाक डर होइत अछि। खास क' कोलेस्ट्रॉल बढ़बाक आशंका हरदम परेशान करैत अछि। इहो सभ कारण अछि आब चाहियो क' आनठाम किछु खा-पीबि नहि सकैत छी। अपने सँ बनाक' खाएब सभसँ सुरक्षित लगैए। भानस-भातक मामलामे एकदम एकहत्थू भ' गेल छी। स्वपाकी बनि गेलाक कारणे आब तँ अनकर बनाओल चीज-वस्तु नीको नहि लगैत अछि। हमर जीहक स्वाद जेना बदलि गेल अछि। मुदा बबलूक उत्साह कम करबाक साहसो हमरा मे नहि रहि गेल अछि। माएक परोक्ष भेला पर ई दुनू भाइ-बहीन हमरा सँ तेना ने सटि गेल जे एकरा सभक मोनक विरुद्ध किछु कएल पार नहि लगैत अछि। स्वभाविक अछि जे यदि बबलू कहियो किछु बनबैत अछि तँ हम ओहि वस्तुक स्वाद लैत छी आ ओकर प्रशंसो करैत छी। ओ बहुधा होटलक प्रबन्ध ओ गेस्ट सभक स्वागत-सत्कार पर अनेक संस्मरण सेहो सुनबैत रहैत अछि। गेस्ट सभकेँ प्रसन्न राखि कोना पाइ बनाओल जाइत अछि, तकर व्यावसायिक युक्ति सभ विस्तार सँ सुनबैत अछि। एहि सभकाल मे ओकर प्री-पेड मोबाइलबला कंजूसी घोसड़ि जाइत छै।

बबलूक होटलक गप पर हमरा अपन नेनपनक गप सेहो मोन पड़ैत अछि। घरमे माँ जहिया कोनो तीमन-तरकारी एहन बनाबथि जे हमरा पसिन्न पड़ए तँ हम कहिऐ जे आइ तरकारी एकदम होटल सनक बनलैक अछि। हमरा लेल ताहि दिन नीक भोजनक मापदण्ड होटले रहए। माँ एहि होटलवला गप पर हमरा बाद मे

खिसियबैत रहैत छली। एहि सभ बातक स्मरण क' हमरा हँसी लागल। हँसी एहि कारणे जे नेनामे जे होटल हमरा लोभबैत रहैत छल, से बबलूक माध्यम सँ घरे मे आबि गेल अछि।

मीराकेँ मुदा होटल पसिन्न नहि रहनि। कहियो धिया-पूता होटल जएबाक जिद्द करए तँ ओ बिखिन्न भ' जाथि। कहि उठथिन, 'तों सभ अनेरे पाइ खर्च करएबाक लेल उताहुल छेँ! जे वस्तु खेबाक मोन होउ, कह हमहीं बना दै छियौ। हमरा सन होटलवला की बनाओत।' ओ राशि-राशिक जलखै ओ भोजन बनाएब जनितो रहथि। मुदा से सभटा मैथिल रीति सँ। हुनका भानस-भातमे प्रयोग पसिन्न नहि रहनि। आन प्रान्तक चीज-वस्तु बनएबामे तँ हुनका कोनो रुचि नहि छलनि। मुदा जखन धिया-पूता हुनकर बात नहि माननि तँ मोन मारिक' हुनको होटल जाइए पड़नि। होटल मे बैसिक' ओ ओतुक्का चीज-वस्तुक छिद्रान्वेषण कएल करथि। मीराकेँ तँ वस्तुतः पुरुषक खेनाइ बनौनाइयो पसिन्न नहि रहनि। अक्सरहाँ ओकर खिधांश पर उतरि जाथि। बहुतो दिन धरि हमरा घरमे बाबाक श्राद्ध मे लालकका द्वारा बनाओल इरहरक चर्चा होइत रहैत छल। एहि द्वारे नहि जे ओ एकदम अभिनव स्वादक बनल रहए। चर्चा एहि बातक होइत छल जे लालकका ओहिमे टमाटर द' देने रहथिन। ओ मासुओ मे टमाटर देथिन, जकर कौचर्य स्त्रीगण सभ गाममे कएल करथि। मुदा लालकका तँ राज मे भनसिया रहल रहथि। ओ महाराजक संग सौंसे देश मे घूमल-फिरल रहथि। महराजकेँ कतेको तरहक व्यंजन बनाक' खुअबथिन। हुनकर हाथक हुनर सभ मानए। ओ भोज-भातमे बड़ टोप-टहंकारसँ कोनो विशेष व्यंजन बनाबथि। ओकर नामो फराक तरहक रहै, जेना-तिकड़म, फरोंश आदि। भोजैत सभ नामे सूनिक' बूझि जाथि जे ई तीमन मोहनबाबू बनौलनि अछि। लालकका सेहो अपन बनाओल व्यंजनक प्रशंसा सुनबाक लेल पाँतीमे घूमथि। लोक हुनकर बनाओल व्यंजनक प्रशंसा विशेष रूपें करय। मुदा घरक स्त्रीगण सभ लेल धन्न सन। ओ सभ लालककाक बनाओल तीमनकेँ दुसबाक लेल कोनो-ने-कोनो अवसर तकैत रहथि। एहि मादे बहुतो दिन धरि हुनकालोकनिक बीच कनफुसकी चलैत रहए।

बबलू फ्रिज सँ निकालिक' लेमन आइसक्रीम प्लेटमे लेने आएल। एकटा प्लेट हमरा देलक आ एकटा अपना लग रखलक। चम्मच सँ एक खण्ड आइसक्रीम मुँहमे रखैत कहलक. 'पापा, गाममे मारितेरास स्त्रीगण सभ सेहो भेंट कर' आएल रहथि'।'

—'के सभ रहथि? तों ककरो चिन्हैत छलह कि नहि?' हम पुछलिऐ।

पूछिक' एक छोटसन आइसक्रीमक खण्ड मुँहमे रखलहुँ। ओ कहलक– 'गामबाली मैंया आ छोटकी बाबी के त' हम चिन्हैत रहियनि। जिनका नइ चिन्हैत रहियनि से सभ कहलनि जे हम बाबी हएब त' काकी हएब। दू-तीन गोटे दीदी हएब सेहो कहलनि। हँ, अहाँके जे नेनामे डूबै स' बचौने छला पड़ोसिया महेन्द्र कामति, हुनकर स्त्री ओ पुतहु सेहो आएल रहथि। सभ हमरा नेना जकाँ बुझब' लगैत छली।' हमर मुँहक आइसक्रीम घुलि गेल रहए। चम्मच सँ आइसक्रीमक दोसर पैघ सनक खण्ड कटैत पुछलिऐ. 'की कहैत रहथुन ओ सभ? की बुझबैत रहथुन? पुछिक' हम आइसक्रीम मुँहमे रखलहुँ। बबलू कहलक– 'ओ सभ माँक चर्चा बेर-बेर करथि। कहैत रहथि जे अहाँक माए कमे बएसमे चल गेली। कोनो सुख-भोग नइ भेलनि। अहाँक पापा के सेहो बड़ तकलीफ सह' पड़लनि अछि। दोसर बियाहो नइ केलनि। अहाँ दुनू भाइ-बहीनि के पोसि-पासि क' एतेकटा बनौलनि। पढ़ौलनि-लिखौलनि। अहाँ सभ के आब अपन बापक ताकूती करबाक चाही। हुनका प्रसन्न रखबाक चाही। आब ओ बूढ़ भ' रहल छथि।' बबलूक गप सूनि हम गह्वरित भ' गेलहुँ। मुदा चेहरापर कोनो ताहि तरहक भाव नहि आब' देलिऐ। कहलिऐ– 'जकर सभक नाम तोँ कहलह, से सभ करीब-करीब नेने स' हमरा जनैत रहली अछि। स्वाभाविक रूपें सभ के हमरा प्रति ममत्व छनि। सभक आबेस हम पौने छी। तोहर माँ के सेहो ओ सभ बहुत मानैत रहथिन। गाममे लोक सभ, खासक' स्त्रीगण एहिना अधिकारपूर्वक बजैत छथि। जे मोनमे रहैत छनि, एकदम सहज रूपें बाजि जाइत छथि।'

देखलहुँ हमर गप पर बबलू मुसकुराए लागल अछि। ओ मुसकुराइते कहलक. 'पापा, एकटा बात अछि। गाममे अहाँक लॉबिंग बहुत तगड़ा अछि।' बबलूक गप सुनि हम दोसर बेर चौंकलहुँ। 'ई की कहि रहल अछि? एहि बेर ओकरा चेहरापर गौर कएलहुँ। कोनो अन्यथा भाव नहि बुझाएल। ओ आइसक्रीमक स्वाद लेबामे मग्न रहए। मुदा हम आइसक्रीमक तेसर खण्ड नहि खा सकलहुँ। लागल, खाएब तँ दाँत कोत भ' जाएत।

■■

उमकी

प्रकाशकेँ बनारसमे अपन घर रहै। से घर पुश्तैनी रहै। ओकर घर हमरा देखल छल। प्रकाश आ हम स्कूलक संगी। कालेज धरि संग नहि रहि सकलहुँ। स्कूलक बादे फराक भ' गेलहुँ। ओ बनारसे मे रहल। पढ़लक-लिखलक। ओ अपन पुश्तैनी सोना-चानीक दोकान चलबैत छल। हम बिहार आबि गेलहुँ। प्रकाशसँ फराक भेलाक दस बरखक बाद बनारस गेल रही। ओकरा ओहिठाम पहुँचलहुँ तँ प्रकाश घर पर नहि भेटल। प्रकाशक बाबूकेँ अपन परिचय देलियनि। लगले चीन्हि गेला। दस बरखक अन्तराल हमर देह-दशामे परिवर्त्तन अनने रहए। मुदा एत्ते परिवर्त्तन नहि भेल रहए जे प्रकाशक बाबू नहि चीन्हि सकितथि। मोन पड़ल हमरा जे स्कूलक दिनमे ओ हमरा सभकेँ गायक उधोष्ण दूध पिआओल करथि। ताहि दिनमे स्कूल भिनसर सात बजे सँ भेल करए। हम साढ़े छओ धरि प्रकाशक ओहिठाम पहुँचि जाइ। ताबत प्रकाशक बाबू दूध दुहबाक उपक्रम शुरू क' दैत रहथि। दूटा गिलास ओहिठाम राखल रहैत छलै। बाल्टीमे दूध दूहि क' दू गिलास ओहिसँ निकालि ओ हमरा सभकेँ पीबाक लेल देथि। हमरा सभ दूध पीबी आ ठोर मे लागल दूधक फेनकेँ पोछि स्कूल लेल विदा भ' जाइ।

प्रकाशक बाबू कहलनि जे प्रकाश दोकान पर अछि। ओकर दोकान घरसँ थोड़ेक हटि क' रहै। दोकान हमरा देखल छल। प्रकाशक बाबू कहलनि जे आब हुनका दोकान पर बैसब पार नहि लगैत छनि। प्रकाशे दोकान सम्हारैत अछि। ओ हमर कुशल-क्षेम पुछलनि। पढ़ाइक बाद की करैत छी से पुछलनि। हम प्रकाश सँ भेंट लेल उताहुल रही। हुनकर प्रश्नक जवाब जल्दी-जल्दी देबाक कोशिश कएलहुँ। कहलियनि– 'पढ़ाइक बाद सरकारी नोकरी मे छी। पुलिस विभाग मे छी। भभुआमे। बनारस सँ कम्मे दूर छै। एखन एसगरे रहै छी। परिवार के संग राखब शुरू नहि केलहुँ अछि। बाबूजी आ माँ घर पर रहै छथि, गाममे। सभ ठीक छथि।' ओ धिया-पूताक मादे पुछलनि। हमरा लाज भेल। लजाइते कहलियनि. 'एखन कोनो संतान नहि भेल अछि। तेसरा साल बियाहे भेल अछि।' प्रकाशक बाबू अकस्मात् कहि उठला. 'हे, बेसी दिन बैचलर नहि रहू। परिवार के संग राखू। घर परिवारे सँ बनैत छै। पुरुषक लेल घरक जिम्मेदारी जरूरी होइ छै।' ओ आरो बहुत

किछु कह' चाहैत छला जेना। बहुत किछु हमरा सँ जान' चाहैत छला। मुदा हमरा एहि जिम्मेदारीवला गपमे कोनो रुचि नहि छल। ई सभ गप बूढ़-बुढ़ानुसक गप्प बुझाएल। हम प्रकाश सँ भेंट लेल सेहो उत्कंठित रही। उठैत कहलियनि. 'प्रकाश सँ भेंट क' अबै छी। बहुत दिन भ' गेल ओकरा देखना।' कहैत हम विदा भ' गेल रही। प्रकाशक बाबू बैसल रहला। हुनकर आँखिपर मोटका शीशावला चश्मा रहनि। हमरा लागल चश्माक भीतर सँ ओ हमरा सभक नेनपन मोन पाड़' लागल छथि।

प्रकाशक दोकानपर अएलहुँ तँ ओकरा सँ भेंट भेल। हमरा देखिक' ओ बहुत प्रसन्न भेल रहय। आश्चर्य आ प्रसन्नता सँ ओ हमरा भरि पाँजक' पकड़ि लेलक। दुनू गोटे दस बरखक बाद एक-दोसराकेँ देखि रहल छलहुँ। एक-दोसराकेँ छूबि रहल छलहुँ। कनेकाल लेल बिसरि गेलहुँ जे ई दोकान थिक। एत' ग्राहक सभ बैसल अछि। स्थितिक ज्ञान एक-दोसराकेँ फराक क' देलक। ओ हमरा आलिंगन सँ मुक्त करैत कहलक– 'थोड़ेक कालमे फ्री भ' जाइ छी त' गप-सप हेतै।' हम एक कात मे बैसि गेलहुँ। बैसि क' प्रकाशक ग्राहक सभ दिस ध्यान देलहुँ। एकटा पुरुष आ दूटा स्त्री रहए। हम अनुमान कएलहुँ जे दूटा स्त्रीमे एक ओहि पुरुषक घरवाली थिकै। प्रकाश ओहि ग्राहक सभकेँ लॉकेट लागल सोनाक चेन बेचबापर बिर्त्त रहय। ओ मारिते रास डिब्बा सभ निकालि चेनक पथार लगौने छल। ओ भिन्न-भिन्न तरहक चेनमे भिन्न-भिन्न तरहक लॉकेट लगा ओहि तीनूकेँ, खास क' ओहि पुरुषक घरबालीकेँ देखा रहल छल। ओ चेन देखाबए, फेर ओकर दाम कहय। ओ ओहि पुरुषक घरबालीकेँ लॉकेट लागल सोनाक चेन पहीरिक' अएनामे देखबाक लेल प्रेरित करैत रहए– 'हे, ई लिअह! एकरा पहीरि क' देखिअउ। लिअ, ई अएना लिअ! अएनामे देखिअउ।' ओहि पुरुषक घरबालीकेँ आगू मे पसरल लॉकेट लागल सोनाक चेन सभ चकविदोर लगौने छलै। ओ निश्चय नहि क' पाबि रहल छल जे पहिने ककरा पहीरिक' देखी। ततमती ओकर चेहरापर देखार छल। हम ओकरा दिस कने ध्यानसँ देखलहुँ। वयस बेसी नहि रहै। बीस-बाइस सँ बेसी नहिये। कने पिंडश्याम रंगवाली ओहि स्त्रीक आँखि बड़ कटगर रहै। ओहि कटगर आँखि मे पातर काजरक रेख आँखिकेँ चोखगर बनौने छल। हमरा भेल जँ आँखिक कोरपर आंगुर फेरल जेतै तँ खपसँ कटि जेतै। ओहि सुन्दर स्त्रीकेँ देखिक' हमरा अपन वयस मोन पड़ल। तखन हम पुरुष दिस ध्यान

देलहुँ। ओ समाने वयसक बूझि पड़ल। दोसर स्त्री तीस सँ कम नहि रहए।

हो-न-हो ई पुरुषक भाउज वा जेठ बहीनि हेतै। हम सोचलहुँ। तखने हमरा अपन किशोरावस्था मोन पड़ल। बनारसमे बीतल किशोरावस्था। विश्वनाथ गलीमे पतियानीमे सजल-धजल चूड़ीक दोकान मोन पड़ल। दोकानपर चूड़ी पहिरबैत कतेको लोक मोन पड़ला। ओहिमे सँ किछु गोटे हमर परिचित भ' गेल रहथि। हमरा बेसीकाल गाम-घर सँ बनारस आएल लोक संग सिनूर-टिकुली-चूड़ीक दोकानपर जाए पड़ए। चूड़ी पहिरबाक आ किनबाक बहुतो स्मृति हमर संग छल। चूड़ीक ओ विक्रेता सभ चूड़ी पहिरबैमे एकदम एक्सपर्ट रहथि। कतबो सटल काँचक चूड़ी पहिरबथिन, चूड़ी नहि फूटै। ओहि दिनमे सटल-सटल चूड़ी पहिरबाक फैसन रहै। एहनामे पहिरबै काल काँचक चूड़ी फुटबाक सम्भावना बेसी रहल करै। तैं काँच गड़बाक सेहो। जे चूड़ी फूटि जाइ से दोकानदारक नोकसान होइ। मलहमपट्टी लेल 'फर्स्ट एड बाक्स' से राख' पड़ै। गाहकि भरकि जाइ। तैं दोकानदार सभ एक्सपर्ट लोककेँ दोकानपर राखए। ओ सभ चूड़ी बेचबामे लुरिगर नहि रहथि मुदा पहिरबैमे हुनकर विशेषज्ञता हुनकालोकनिक नोकरी पक्का कएने रहए। पक्के नहि कएने रहए, नीक दरमाहा सेहो दिअबैत छल। आ जँ किओ पहिरबैक संग बेचबो मे लुरिगर रहथि तँ बजारमे हुनकर भाओ बेसी भ' जाइन। ओ एक दोकान छोड़ि बेसी दरमाहा भेटला पर दोसरो-तेसरो दोकान ध' लेथि। एहने एकटा लोक मोहनभाइ हमरा सभक बगलगीर रहथि। दरभंगा लगक गाम माधोपुरक रहथि ओ। देखबा-सुनबा मे सुन्दर। साइत ई हुनक अतिरिक्त गुण रहनि। ओ कने सजि-धजिक' सेहो रहथि। धोती-कुर्त्ता पहिरथि। धोती मेंही सूतक रहैत छल। कुर्त्ता बेसीकाल कैम्ब्रिकक। जाड़मे ओ रंगीन स्वेटर पहिरथि। नील रंगक स्वेटर हुनकर देहपर बेस शोभए। हमरा पसिन्न पड़ए। सभ दिन गमकौआ पीयर्स साबुन लगबथि ओ। अपन दोमहलाक खिड़की सँ हम हुनका अपन आंगनमे नहाइत देखी। ओ आ हुनकर सौभाग्य हमरा खूब आकर्षित करए ताहि दिन। हमरा मोन होअए जे हुनका सँ पुछियनि. 'मोहनभाइ, कतेक स्त्रीगणकेँ एखन धरि चूड़ी पहिरौने हएब अहाँ? पहिरबै काल कोना पहिरबै छिऐ जे चूड़ी फूटै नहि छै? अहाँक मोन कखनो चंचल नहि होइत अछि?' स्वाभाविक छल जे ओहि समय हम मोहन भाइसँ ई सभ नहि पुछि सकैत छलहुँ। नहिये पुछि सकलहुँ।

प्रकाश ओहि पुरुषक घरबालीक ततमती बूझि गेल छल। एकटा सुन्दर

लॉकेटवला भरिगर चेन उठौलक आ ओहि स्त्रीकेँ पहिर' लेल कहलकै– 'हे लिअ, एकरा पहीरि क' देखिअउ!'

–'एकर दाम त' बड़ हेतै?' ओ स्त्री एक क्षण लेल हिचकिचाएल।

–'नहि! बड़ दाम नहि छै। अहाँ पहीरिक' देखिअउ। बेसी दाम बुझाए त' नहि लेब।' प्रकाश ओहि स्त्रीकेँ आश्वस्त करबाक कोशिश कएलक। ओ स्त्री चेन पहीरिक' देखलक। मुदा अएनामे अपन छवि देखबामे लाज भ' गेलै जेना। ओ फेर हिचकिचाएल। हमरा भेल जे हम ओहि स्त्रीकेँ कहिऐ– 'की हेतै? कीनि सकी वा नहि, एक बेर पहीरिक' त' देखिअउ।' मुदा से कहि नहि सकलिऐ। मुदा प्रकाश कत' चुक'बला छल। अएना उठाक' ओहि स्त्रीकेँ देलकै। फेर कहलकै– 'लिअ अएना! देखिअउ एहिमे। केहेन लगै अछि अहाँक देहपर!' हमरा भेल प्रकाश अंगविशेषक नाम नहि कहि सकल।

हमरा दसमा किलासक घटना मोन पड़ल। हम सभ स्कूलक रस्तामे रही। आगू सँ एकटा छौंड़ी आबि रहल छल। सलबार-कुरता पहिरने। चुनरी छातीपर रखने। अकस्मात् हमरा की फुरल की नहि। प्रकाशसँ कहलिऐ– 'जँ तूँ एहि छौंड़ी के पकड़ि ले त' भारत कैफे मे स्पेशल मशाल डोसा!' प्रकाश हमरा दिस तकलक। फेर पुछलक– 'पक्का?'

–'एकदम पक्का।' ओ आगू बढ़ल आ पकड़ि लेलकै। छौंड़ी एकदम्मे हड़बड़ा गेल। प्रकाश दोसरे क्षण छोड़ि देलकै। फेर हम सभ आगू बढ़ि गेलहुँ। एकबेर हमर पएर जेना थरथराएल। छौंड़ी आब चिकरत। हम सभ पिटएलहुँ। मुदा ओ किछु नहि बाजल। सोझे चलैत चल गेल। घूरिक' तकलहुँ, छौंड़ी मूड़ी झुकौने अपन रस्ता धएने जा रहल छल। जानमे जान आएल। निसांस छोड़ने रही। दुनू गोटे एक-दोसराकेँ देखने रही। प्रकाश घमंड सँ भरल मुसकुरा रहल छल। हम बाजल रही– 'साला! दूटा स्पेशल मशाल डोसा माने चौबीस रुपैया।' हम सभ हँसल रही। हँसिते स्कूल पहुँचल रही।

प्रकाश दिस तकलहुँ हम। ओ मुड़ी झुकौने रहय। ओ स्त्री चेनकेँ निहारबाक लेल अएना नहि लेने छल। अपन पति दिस पूरा-पूरी घूमि गेल छल। घूमिकेँ पुछने रहए– 'ई कीनि लिऐ?'

हमरा भेल जे ओ पुछितए– 'हे यौ! देखिअउ केहेन लगै छै?' ओ पुरुष कने काल देखितए आ फेर कहि उठितए– 'कीनि लिअ। बड़ दीब लगैए।' मुदा

ओ पुरुष से नहि कहलकै। ओ प्रकाश सँ पुछलकै– 'कत्ते दाम छै एकर?'

प्रकाश ताबत मूड़ी उठा लेने छल। एक नजरि ओहि स्त्री दिस तकलक आ बाजल– 'सात हजार छओ सए।'

ओ पुरुष अपन घरबालीकेँ कहलक– 'एहि चेनक दाम बेसी छै। ई चेन नहि कीनू।'

ओ स्त्री चेन उतार' लागल। प्रकाश ओहि पुरुषकेँ पुछलकै– 'अहाँ कत्ते खर्च क' सकै छी एहि चेन लेल?' ओ पुरुष कनेकाल चुप्प रहल। फेर बाजल– 'सात हजार। ओहिसँ बेसी नहि। ओतबे अनने छी। तकर बाद खाली किराया बचत।'

प्रकाश लगले बाजल– 'चलू, ल' लिअ! अहूँ की मोन राखब। दस बरखपर हमर दोस आएल अछि।' ओ हमरा दिस तकलक। ओकर आँखिमे उत्साह भरल छलै। फेर, जाबत ओ पुरुष किछु बाजए, ओ अपन सहकर्मीकेँ कहलकै. 'हिनकासँ सात हजार ल' लिअ आ चेन द' दिऔन।'

ताबत ओ स्त्री चेन गर्दनि सँ उतारि चुकल छल। प्रकाश चेनकेँ अपन हाथमे लेलक आ अपन सहकर्मीकेँ दैत कहलकै– 'लिअ, एकरा डिब्बामे द' दिऔन!' कहिक' ओ उठि गेल। फेर हमरा कहलक– 'चलह घर पर चली। तोरा भौजीसँ भेंट करबै छियह। तोँ त' हुनका देखनहुँ ने छहुन।' हम देखलहुँ जे ओ पुरुष रुपैया निकालि प्रकाशक सहकर्मीकेँ द' रहल छल। हम दुनू गोटे विदा भ' गेल रही।

रस्तामे पुछलियै– 'घाटा त' ने लगलह?' प्रकाश एहि पर हँसल रहय। बाजल– 'घाटा कत्तौ लागय। बड़ बेसी त' मजदूरी मे कने खोंच लागल।' प्रकाशक घर पर अएलहुँ तँ ओ सोझे हमरा अपन बेडरूम मे ल' गेल। अपन घरबालीकेँ बजौलक। हमरा सँ परिचय करौलक– 'इएह छथुन तोहर भौजी! नीलम नाम छनि हिनकर। एकरा चिन्हलिऐ? दिनेश!'

नीलम भौजीक मुँह एकदम भकरार भ' गेलनि। ओ हमरा चिन्हैत छली। हमरा बारेमे प्रकाश हुनका कहने छलनि। हमरा ई बात बड़ नीक लागल। प्रकाशक बियाह हमर परोक्षमे भेल रहै। हम ओकर बियाहमे सम्मिलित नहि भ' सकल रही। मुदा परिचयक अभाव हमरा एको क्षण लेल नहि खटकल। प्रकाश बाजल तखन. 'हम तोरा बारे मे हिनका सभ किछु कहने छियनि। ई तोरा नीक जकाँ चिन्हैत छथुन।' हमरा खुशी तँ भेल मुदा संगहि आशंका सेहो घेरि लेलक। की

सभ हमरा सम्बन्धमे कहि देने छनि? स्कूलक दिनमे तँ हम सभ बहुतोरास बदमासी कएल करी, सेहो सभ तँ ने कहि देलकनि? प्रकाश मुसकुरा रहल छल। नीलम भौजी सेहो मुसकी छोड़ैत रहथि। एहि भौजीकेँ देखबा लेल हमरा बहुत मोन लागल छल। बूझल रहय, प्रकाश बियाह सँ पूर्व हिनका देखिक' बताह भ' गेल रहय। हरिश्चन्द्र कालेजक वार्षिकोत्सवमे हुनका नाच करैत देखने रहय। एक्कहि नजरिमे जकरा प्रेम कहैत छै, सएह भेल रहै ओकरा। नीलम भौजी कुशल नर्तकी छली। नर्तकीए सन हुनक देहयष्टि रहनि। हम हुनका भरिपोख देखलहुँ। गोर दपदप, एकदम सोंटल देह रहनि हुनकर। देहमे कत्तहु आवश्यकता सँ बेसी मासु नहि। हुनकर भव्य व्यक्तित्व एकदम्मे हमर मोनकेँ छापि लेलक। हम नीलम भौजीक रूपजालमे जेना फँसिक' छटपटा उठलहुँ। एहन रुपवती स्त्रीक अपना प्रति धारणा बुझबाक लेल सेहो हम विकल भ' उठलहुँ। नीलम भौजी ओहिना मुसकुरा रहल छली। हुनकर मुसकी एकदम बदमासी भरल हमरा बुझाएल। हमर आशंका प्रबल होइत गेल। नहि रहल गेल तँ पूछि देलिऐ– 'की सभ कहि देलहुन तोँ भौजी के! की सोचैत हेती हमरा बारेमे।' एहि बातपर प्रकाश ठठाक' हँसल। हँसिते घरबालीकेँ पुछलकै. 'की? की सोचै छी अहाँ एकरा बारे मे! केहन लोक अछि ई?'

नीलम भौजी ओहिना मुसकुराइत बजली– 'से ई अपन कनियाँ के संग अनितथि तखन ने नीक रहितै। हिनका की कहबनि। हिनकर गप-सप त' हिनकर कनिया के कहितियनि।'

हमरा रहल नहि गेल। नीलम भौजीसँ पूछि बैसलहुँ– 'से की यै भौजी! की सभ कहितियनि हमर कनिया के? हम त' सभटा गप हुनका पहिनहि कहि देने छियनि।' ई बात बाजि हम अपन छाती चौड़ा करबाक कोशिश कएने रही। इम्प्रेशन नीक बनएबाक़ लेल हम सफ्फा फूसि बाजल रही। हमर बियाहक तीनो बरख नहि पूरल रहय। ओहि अवधि मे भेंटक अवसर कमे भेटल छल। बियाहक बादे नोकरी भ' गेल। उर्मिलाकेँ संग राखब सम्भव नहि रहए। माए-बाबूजी रहथि। दुरागमनक लगले बाद अपना संग ल' जएबाक बात बजबाक साधंस नहि भेल। नब नोकरी रहए। छुट्टी भेटबामे से मुश्किल। गामक वातावरण हमरा सभकेँ उन्मुक्त भ' जीबाक अवसर नहि दिअए। दिनमे तँ भेंट-घाँट मुश्किले रहए, रातियोक' भेंट होअए तँ गप्पसँ बेसी निन्न नीक लागए। उर्मिला हमर निन्न सँ तंग

भ' जाथि। निन्नक शिकायत करथि– 'अहाँके त' हरदम ओंघीए लागल रहै अछि। भभुआ मे निन्न नहि होइत अछि की?' हमरा गाममे ठीके हरदम निन्न लागल रहए। पता नहि गाममे कोन निशां रहै जे हम हरदम सुतले रह' चाही। मुदा उर्मिलाकेँ कहि दियनि– 'भभुआमे त' भरि राति तारा गनैत रहि जाइ छी।'

कहि क' हम हँसी। ओ विकल भ' जाथि। बाजि उठथि– 'त' हमरा किए नहि ल' चलै छी?' हम किछु जवाब नहि द' पाबी। उर्मिला तकर बाद किछु नहि कहथि। मुदा नीलम भौजी हमरा बकसि देबाक मूडमे नहि छली। कहलनि– 'आर जे गप कहने होइयनि, मुदा नाटकमे मौगीक पार्ट खेलाइबला गप नहि कहने होएबनि।' कहिक' ओ भभाक' हँसली। हमरा भेल पूनिमक रातिमे सिंगरहारक फूल झहरि रहल अछि। भौजीक बातपर प्रकाशो ठहक्का लगौलक। हमरो रहल नहि गेल। हँसी लागि गेल।

भेल ई रहै जे नाटकमे हीरोइनक पार्ट खेलाइबला पुरुष अकस्मात् दुखीत पड़ि गेला। नाटकक आब तीनिए दिन बाँकी रहि गेल रहै। हम ओहि समय नौमा किलासमे पढ़ैत रही। नाटकक सौंसे रिहर्सल देखने करी। तैं सभ हमरे ओहि पार्ट लेल उपयुक्त बुझलक। हमरा मौगीक पार्ट करबामे लाज भ' रहल छल। हम नाकर-नुकर कर' लगलहुँ। मुदा सभ सीनियर मीलि हमरा मना लेलनि। हीरोइनक मेकप कालमे सेहो हम पड़ाएल घूरी। अन्ततः मेकप कएल गेल आ कपड़ा-लत्ता पहीरिक' तैयार भेलहुँ तँ लागल सभक आँखि हमरे पर टीकि गेल छै। हमरा कोनादन लाग' लागल रहए। खास क' अखबारी कागजसँ नोकगरसँ बनल छाती हमरा बेचैन क' देने रहए। ओकरा हम बरदास्त नहि क' पाबि रहल छलहुँ। हम गओं सँ बाथरूममे गेलहुँ आ नोककेँ थकुचि देलिऐ। चुपचाप बाहर आबि एम्हर-ओम्हर घुम' लगलहुँ। कतहु संचमंच भ' बैसि नहि पाबी। लोक सभ हमरा नजरिपर चढ़ौनहि रहय। माइक्रोफोनबला तँ जेना हमरापर लट्टू भ' गेल रहए। कहए जे– 'आउ, हमरा लग बैसू। दू-तीन बेर कहलक तँ हम डाइरेक्टरसाहेब लग ओकर शिकायत क' देने रही। डाइरेक्टरसाहेब ओहि माइक्रोफोनबलाकेँ कोनो दशा बाँकी नहि रखलथिन। नाटक हम कोना-की कएलहुँ, आब किछु मोन नहि अछि। मुदा दर्शक खूब प्रशंसा केने रहय।

ई सभटा गप्प प्रकाशकेँ बूझल रहै। प्रकाश नीलम भौजीकेँ सेहो ई गप्प कहि देने रहय। हम भौजी दिस तकलहुँ आ कहलियनि– 'अहाँ त' बड़ बुधियारि छी यै भौजी। ठीके, ई गप हम एखन धरि अपन कनियाँकेँ नहि कहने छियनि।' हम दोसर बेर फूसि के सत्त बनएबाक कोशिश कएलहुँ।

ई गप की, कोनो गप नहि कहने रहियनि। हमर इच्छा खाली भौजीक प्रशंसा करबाक छल। हम लगातार नीलम भौजीकेँ प्रभावित करबाक चेष्टा क' रहल रही। से हम किएक क' रहल रही से बूझब एकदम सहज नहि छल। भौजी मुदा जोरसँ हँसल रहथि। फेर सिंगरहार झड़ल रहय। प्रकाश हुनकर संग देलकनि। अकस्मात् प्रकाश बाजि उठल— 'मुदा तों अपन कनियाँ के दालमण्डीबला गप सेहो नहि कहने हेबहुन। दालमण्डीमे ओ दलाल हमरा सभ के की कहने रहय?'

हमरा मोन पड़ल। हम दुनू गोटे छोट आ आसान रस्ता दुआरे दालमण्डी द' क' स्कूल जाइ। बनारसक दालमण्डी मे दालि नहि बिकाइ। वेश्या सभक निवास रहै। शुरू मे ओम्हर द' क' जएबामे डर होअए। मुदा डरपर कौतुहल काबू पाबि लेने रहए। अन्तमे हमरा सभकेँ वेश्या सभकेँ देखब नीक लाग' लागल रहय। प्रकाश कने बेसिये चंचल भ' उठए ओहि गलीमे। एम्हर-ओम्हर, ऊपर-नीचाँ बेसी ताकल करय। कखनो कोनो वेश्या के देखि क' भरि रस्ता ओकरे मादे बतिआए। दालमण्डी सँ पहिने धोबि सभक गली रहै। कपड़ाक मोटा सभ चारूभर राखल रहैत छल। गदहा सभ एम्हर-ओम्हर बौआइत रहै छल। धोबि सभक गलीक बाद वेश्या सभक गली शुरू भ' जाइ। बीचमे गुड्डी ओ लटाइ सभक दोकान रहै। रंग-बिरंगक गुड्डी दोकानमे टांगल रहैत छल। सीसाक बुकनी मिलाक' डोरापर मज्झा चढ़ाओल से बिकाए। तकर बाद नर्तकी सभक गली शुरू भ' जाइ। भोर तँ नहि; स्कूल सँ घुरतीमे कोठापरसँ गीत सभ सुनाए। 'नदी नारे ना जाओ श्याम पैंया पड़ूँ' अथवा 'पान खाये सैंया हमार।' एहि तरहक कतेको गीतक बोल सुनी। गीतक संग घुँघरूक आवाज सुनी। घुँघरुक आवाज आ गीतक बोल दूर धरि हमर सभक कानकेँ छेकने रहए। प्रकाशकेँ तँ साइत बादो धरि छेकने रहलै।

एक दिन हम आ प्रकाश दालमण्डी द' क' जाइत रही तँ अकस्मात् ओ ठमकिक' ठाढ़ भ' गेल। हमरो ठहर' पड़ल। दोमहलापर एकटा वेश्या ठाढ़ि रहै। नीचामे दूटा पुरुष रहए। नीचाबला पुरुष पाँचटा आंगुर देखा क' इशारा क' रहल छल। दोमहलापर ठाढ़ि वेश्या दसटा आंगुर देखबैत रहै। हम दुनू गोटे ठाढ़ भ' क' ई इशाराबाजी देख' लगलहुँ। तावत् एक गोटे, जकरा बेसीकाल ओहिमे घूमैत देखने रहिऐ, आएल आ प्रकाशकेँ कहलकै— 'का देखत हउअ! कमरमे ताकत चाही एहि वदे। जा रस्ता नाप'। लड़िकाही मे सहक' जनि!' हम आ प्रकाश ओहि दलालक गप सुनि ओहिठामसँ पड़ाएल रही। पाछू सँ ठहक्का सुनाइ दैत रहल छल। तकर बाद हमरा सभकेँ दोमहला आ गलीक बीच होइत इशाराबाजीकेँ देखबाक साधंश नहि भेल।

गप-सपक बाद नीलम भौजी बड़ आबेस सँ जलखै करौने रहथि। अपने हाथ स' बनाक' मारिते रास वस्तु अनने रहथि। हुनकर आबेस आ सुरुचिक सेहो हम प्रशंसक भ' गेल रही। प्रकाशकेँ कहलिऐ— 'भौजी के देखि क' तोहर पसिन्नक हम लोहा मानैत छियहु। मानि गेलियौ तोरा। एकदम बीछिक' ल' अनलहुन हिनका।'

प्रकाश एहि बातपर खुलिक' हँसल रहय। नीलम भौजी सेहो मोहक मुसकी छोड़ने छली। हम हुनकासँ चौल कएलहुँ— 'की यै भौजी! प्रकाश के नाच देखबै छिऐ की नहि? अहाँक नृत्यक प्रशंसामे त' प्रकाश तीन-तीन फुलस्केप साइजक चिट्ठी लिखल करय। एकदम दिवाना बना देने रहिऐ ओकरा। एखनो असरि एकोरत्ती कम नहि भेलैए।' नीलम भौजी हँसल रहथि। जेना जलतरंग बाजल रहय। बजलीह— 'अहाँक संगी त' ओहिना हर घड़ी नचबैते रहै छथि। फूट सँ नाच की देखेबनि।'

एहिपर हम सभ मीलिक' खूब हँसल रही। खूब रमन-चमन भेल रहै। नीलम भौजी जहिना रूपवती, तहिना बुद्धिमती सेहो रहथि। हमरा खूब पसिन्न पड़ली। प्रकाशक भाग्य ईर्ष्या करबा जोगर रहै। बेस रातिक' हम प्रकाशक घरपरसँ घुरल रही। भौजी मुदा हमर मोनकेँ छेकने रहली।

ओही रातुक परात हम आ प्रकाश रिक्शापर बनारस घूमि रहल छलहुँ। प्रकाश अपन कनियाँ संग बीतल पाँच बरखक जीवन हमरा समक्ष राखि रहल छल। एक-एक दिन के रिपोर्टिंग खूब विन्यास सँ क' रहल छल। भौजी संगे कत्त'-कत्त' गेल, की सभ केलक से सभ पूरा रस ल' क' सुना रहल छल। बुझा रहल रहय जेना ओ अपन रसमय जिनगीक सभटा उमंग हमरा पर ढारि दिअ' चाहैत अछि। ओकर मौज-मस्तीक एक-एकटा खेरहा सुनि क' हम अपन मित्रक प्रति जेना बेसिए ईर्ष्यालु भेल जाइत रही। अकस्मात् प्रकाश कहलक— 'एकटा बात बुझलह! एतबे दिनमे तोहर भौजी संग भरिपोख प्रेम क' लेने छी। आब नीलम मरियो जेती त' हमरा दुख नहि हएत!'

--'अँए...?'

■■

मनसूबा

बिपिन बाबू दुनू बेकती नई दिल्ली स्टेशन पर उतरला। बेटा प्लेटफार्म पर ठाढ़ रहथिन। दुनूकेँ प्रसन्नता भेलनि। बहुतो दिनसँ विचारैत रहथि जे दिल्ली जाय बेटा के देखी। ओकरा संग किछु समय बिताबी। मोनक गप फैल सँ कहियैक। मुदा से संभव नहि होइत रहनि। कोनो ने कोनो बाधा आबि जाय। प्रोग्राम गड़बड़ा जाय। एहि बेर से नहि हुअ' देलथिन। असल मे दिल्ली पहुँचब आब जरुरियो भ' गेल रहनि। आब एहि यात्रा के बेसी दिन टारल नहि जा सकैत छल।

दिल्ली त' बिपिन बाबू कतेको बेर एहि जित्ता-जिनगी मे आयल रहथि। दस-बारह बेर त' अबस्से। मुदा एहि बेरुका आगमन विशिष्ट छल। विशिष्ट एहि कारणें जे अपन आँखिए बेटाक ऐश्वर्य देखबाक रहनि। वैभव भोगबाक रहनि। सभ माय-बाप के बेटाक लेल एक कल्पना रहैत छै। एक सपना रहै छै। बिपिन बाबूक बेटा रणजीत मल्टी नेशनल कम्पनी मे मार्केटिंग मैनेजर छला। कम्पनी दिस सँ सजल-धजल 'वेल फर्निश्ड फ्लैट' भेटल रहनि। गाड़ी भेटल छलनि। ई नोकरी तखने भेटि गेल रहनि जखन मैनेजमेंट इन्स्टीच्यूट मे पढ़िते रहथि। पढ़नाइ खतम भेलनि आ एम्हर नोकरी शुरू भ' गेलनि। वस्तुतः नोकरी पढ़ैते कालसँ शुरू भ' गेलनि। आब त' ई नोकरी बत्तीस मासक भ' गेल छनि। एहि बत्तीस मासमे खाली दू दिनक लेल मुजफ्फरपुर आबि सकल रहथि रणजीत। बिपिन बाबू मुजफ्फरपुर मे रहैत छला। ओ माड़ीपुर मे अपन मकान बना क' रहथि।

रणजीत भाइ में असगर छला। हुनकासँ जेठ बहीन रंजना डॉक्टर छली। पूर्णियाक एक डाक्टरेसँ हुनकर बियाह भेल रहनि। दुनू मीलिक' एक नर्सिंग होम चलबैत रहथि पूर्णिये मे। बिपिन बाबू मुजफ्फरपुरक कालेज मे अंग्रेजीक प्रोफेसर रहथि। रिटायर हेबा मे एक वर्ष सात मास तेरह दिन एखन बाँकी रहनि। आब त' बहुतो दिन सँ अपन धर्मपत्नी रेखा देवीक संग मुजफ्फरपुरे मे रहि रहल छला। जहिया कहियो उद्वेग होनि बेटी के जा क' देखि-सुनि आबथि। ग्रीष्मावकाश, शीतावकास मे त' मास-मास दिनधरि छुट्टी होइन। बहुधा एहि छुट्टीमे ओ सभ बेटा-बेटी के देखबाक लेल, भेंट-घाँट लेल चल जाथि। बेटी-जमाय के नर्सिंग होमक व्यस्तता आ बेटाकेँ पढ़ाइ-लिखाइ फुर्सति नहि द' पाबय।

आब त' रणजीत सेहो नोकरी मे बहुत व्यस्त भ' गेल रहथि। जाबत

पढ़ैत-लिखैत रहथि कहियोकाल माय-बाप लग चलो आबथि। बहीनिसँ भेंट करबाक लेल पूर्णियों जाथि। गामो दिस घूमि-फीरि आबथि। मुदा आब से सम्भव नहि रहि गेल रहनि।

बिपिन बाबूक जेठ भाइ सिया बाबू मुइला त' तकर सूचना बाप रणजीत के मोबाइल पर देलथिन। ओ ओहि समय मसूरी मे रहथि। विजनेस मीटिंग चलि रहल रहनि। तैं मोबाइल लगातार 'स्वीच ऑफ' आ 'नाट रिचेबुल' घोखैत रहल। आखिरकार जखन सम्पर्क भेलनि त' बिपिन बाबू गह्वरित स्वर मे सूचना देलथिन,

—'रणजीत, बड़का भाइ नहि रहला। परसू हुनकर डेथ भ' गेलनि। चौदह के एकादशा हेतनि। गाम मे। 'यू आर एक्सपेक्टेड टू बी प्रजेन्ट इन द' विलेज आन दे ऑकेजन।'

—'ओह पापा! हमरा त' बैंगलोर जेबाक अछि। इम्पोर्टेन्ट मिटिंग छै। पन्द्रह तारीख केँ। 'आइ कान्ट एफोर्ड टू टेक लीव। इट्स आलमोस्ट इम्पासिबुल।' 'हम नहि पहुँचि सकब। बाद मे जल्दी आयब।' रणजीत कहिक' चुप भ' गेला। बेटाक उत्तर सँ बिपिन बाबूक करेज मे किछु कचकलनि। मुदा स्थिति के गमि चुपे रहला। कहलथिन— 'बेस, की करबै? सुनै छी बड़का भाइ मरैत काल अहाँक चर्चा केने रहथि। जीबितो मे जखन भेंट होथि, अहाँक बारे मे पूछथि। बहुत गौरव रहनि हुनका अहाँक सफलता पर।' कहैत बिपिन बाबूक कंठ बाझि गेलनि। आँखि मे नोर भरि अयलनि। रणजीत के बापक दुखक आभास भ' गेलनि। ओ बाप के सान्त्वना देब' लगला।

—'आइ नो योर सेन्टीमेंट, पापा। ककाजी हमरो बहुत प्रिय छला। बहुतोरास सुखद स्मृति अछि। बट आइ एम हेबीली इन्गेज्ड इन माइ जॉव। यू नो माइ पोजीशन। इच्छा रहितो हम पहुँचि नहि सकैत छी ककाजीक श्राद्धमे। यू ट्राइ टू अन्डरस्टैंड माइ सिचुएशन। प्लीज, पापा।'

बिपिन बाबू अपना के सम्हारलनि। कहलथिन— 'इट्स ओ.के.। यू परफौर्म योर ड्यूटी। वी विल मैनेज दी सिचुएशन। ठीक छै, फेर बाद मे फोन करब।' कहि बिपिन बाबू कनेक्शन काटि देलनि। मुदा वस्तुतः कनेक्शन कटलनि नहि। सिया बाबूक श्राद्ध मे रणजीतक अनुपस्थिति बिपिन बाबू स्वीकार नहि क' पाबि रहल छला। एहनो बेर मे रणजीत के अवकाश नहि हेतनि त' कोना काज चलतै? गाम मे कतेको लोक पूछत। अपना मे गप करत।

—'रणजीतकेँ नहि देखैत छियनि। ओ नहि अयला अछि की?'

—'एकटा पित्ती। तिनकर श्राद्धो मे नहि आबि सकला त' आन कोन काज मे अओता?'

—'ठीक छै। बड़का नोकरी छनि। खूब पाइ दैत छनि। जिम्मेदारी छनि। छुट्टीक अभाव रहैत हेतनि। मुदा बेगरता पड़ला पर जरूरते-नागहानी त' नोकरिहारा के छुट्टी भेटिते छैक।'

—'औ बाबू! असल मे बात मोनक छै। प्राथमिकता के छै। आब' चाहता त' ककरा ने छुट्टी भेटैत छै?'

—'छुट्टी मांगितथि त' की नहि भेटि सकैत रहनि? एहि सभ अवसर पर त' अयबाके चाही। लोक देखि क' अपन आँखि जुड़बितय। वाह, गामक नाम ऊँच केने छथि। मुदा...?' बिपिन बाबूक मोन खिन्न भ' गेल रहनि। जा क' बिछान पर पड़ि रहला। एम्हर-ओम्हर करौट फेर' लगला।

सिया बाबू हुनका सँ दस बरखक जेठ रहथिन। तीसरे क्लास मे पढ़ैत रहथि जखन बाप ट्रेन एक्सीडेंट मे मरि गेल रहथिन। बड़के भाइ पढ़ौलथिन-लिखौलथिन। एकदम बापक कर्त्तव्य केलथिन। मानबो बड़ करथिन। सिया बाबू गामेक स्कूल मे शिक्षक रहथि। नीक अध्यापक मे गणना होइन। गाम मे प्रतिष्ठित बूझल जाथि। बिपिन बाबू चन्सगर रहथि। मेट्रिक सँ ल' क' एम. ए. धरि कहियो सेकेण्ड डिविजन नहि भेलनि। सभ क्लास मे फर्स्ट केलनि। सिया बाबूक इच्छा रहनि जे बिपिन आइ.ए.एस. होथि। मुदा बिपिन बाबू प्राफेसर हुअ' चाहैत छला। प्रोफेसरी मे बड़ आराम रहैत छै। हुनका जीवनक सम्बन्धमे अपन कल्पना रहनि। पढ़बा-लिखबाक काज मे खूब मोन लगनि। ओ सिया बाबू के कहने रहथिन. 'बड़का भाइ, हम अहीं जकाँ शिक्षक बन' चाहैत छी। शिक्षा देबाक काज मे हमरा मोन लागत। ओ काज हम शान्ति आ प्रसन्नतासँ क' सकब। ओहि जॉव मे अपनो पढ़बा-लिखबाक समय भेटत। जीवन अपना हिसाबें बीता सकब।' सिया बाबूक इच्छा रहनि जे बिपिन बड़का हाकिम बनथि। ओ हुनका मादे बहुत सपना देखने रहथि। मुदा बिपिनक इच्छा जानि क' ओ अपन्न सहमति देलथिन।

—'ठीक छै। अहाँ जेह जीवन चाहैत छी सैह जीबू। शिक्षकक काज मे फुर्सतियो खूब रहैत छै। अपन इच्छित विकास सेहो लोक ओहि मे क' सकैए।' बिपिन बाबू एहि प्रकारें लेक्चरर भ' गेल रहथि। आब त' अपन कालेजक हेड छथि। मुदा अध्यापन छोड़ि आर किछु नहि क' सकला। गाम मे हुनकर तेजगरी आ प्रतिभाक खिस्सा सभ पसरल रहय। लोक गाहे-बगाहे तकर चर्च-वर्च सेहो

करय। एहि चर्च-वर्च मे मुदा ई भाव मिलल रहय जे जेहेन प्रतिभाशाली रहथि तेहेन किछु भ' नहि सकला। भरि जीवन प्रोफेसरी करैत रहि गेला।

रणजीत मुदा अठमे क्लास तक बापक संग रहि सकला। नाइंथ मे पटना आबि गेला। सेंट माइकल्स स्कूल मे। ओही स्कूल मे पढ़बाक इच्छा रहनि हुनक। जिद्द ध' लेलनि जे ओतहि पढ़ब। एडमीशन मे कोनो दिक्कत नहि भेलनि। रणजीत नेनेसँ प्रतिभाशाली छला। स्कूलेक होस्टल मे रह' लगला। प्लस टू धरि ओतहि पढ़लनि। तकरबाद इंजीनियरिंग मे खड़गपुर चल गेला। फेर मैनेजमेंटक पढ़ाइ मे अहमदाबाद। अहमदाबाद सँ नोकरी लेल दिल्ली।

दिल्ली मे स्टेशन सँ बाहर आबि क' रणजीत माय-बाप के कार मे बैसौलनि। अपने सँ ड्राइब क' कए डेरा अयला। डेरा दिल्लीक बसंतकुंज मे रहनि। भव्य आ प्रशस्त। बेडरूम, ड्राइंगरूम सभ सजल-धजल। किचेन से आधुनिक सभ व्यवस्थासँ परिपूर्ण। मुदा किचेनक कोनो उपयोग नहि होइत छल। बड्ड बेसी त' चाह-काफी छोड़ि ओहि मे किछु आन वस्तु एखन धरि बनले नहि छल। रणजीतक माय सभसँ पहिने किचेन जा क' देखलनि। फ्रीज राखल रहय। मिक्सी राखल रहय। गैस चुल्हा छल। माइक्रोओभेन छल। कुकिंग सेट, डाइनिंग सेट सभटा छल। मुदा सभ अपन उपयोगक प्रतीक्षा मे रहय। रेखा देवी के भेलनि जे चकचक करैत सभ बर्त्तन-बासन अपन उपयोग लेल तरसि रहल अछि। व्याकुल भेल सभ हुनका किचेन मे पैर रखिते जेना झौहरि कर' लागल। रेखादेवी के देखल नहि गेलनि। झटसँ मूड़ी घुमा लेलनि। मूड़ी घुमौलनि त' सामने मे रणजीतकेँ ठाढ़ देखलनि। कहलथिन. 'कहियो एहि किचेन मे भानस नहि बनलै अछि। आइ एहि मे हम भानस करब।' रणजीत कनेकाल चुप भ' गेला। फेर माय के पकड़ि क' ड्राइंग रूम मे अनलनि। सोफा पर बैसा क' कहलथिन. 'कोन काज छै भानस करबाक। जे अहाँ सभकेँ इच्छा हुअय टेलीफोन पर कहि दिअउ। एक घंटा मे चल आओत। जत्ते बजे कहबै, ठीक ओत्ते बजे पहुँचि जायत ल' क'। एकदम गरमा-गरम। निकालू आ खाउ। कोनो तरदुत नहि।' बिपिन बाबू सेहो बाथरूमसँ आबि क' सोफा पर बैसि गेल छला। माय-बेटाक गप सुनि रहल रहथि। रेखा देवीक मोन मुदा नहि मानलकनि। बेटा के फेर मनेबाक चेष्टा केलनि।

—'होटलक खेनाइ हमरा सभ के पचत? स्वादो एक्के रंगक होइत छै। किचेन मे त' जे मोन हैत, जेना मोन हैत, बनाएब आ खायब। अहाँ सभटा वस्तुजात मंगा दिअ'।' रणजीतकेँ मायक जिद नहि नीक लागि रहल छलनि।

अनेरे कोन काज छै भानस-भात करबाक। जखन एक टेलीफोन पर सचार लागि सकैत अछि त' ताहि लेल एतेक परिश्रम करबाक कोन प्रयोजन? मुदा जाबत मायसँ किछु कहथि ताबत बहीनि रंजनाक फोन आबि गेलनि। रंजना माँ-पापाक पहुँचबाक विषय मे पूछि रहल छलथिन। रणजीत कहलथिन 'हँ, पहुँचि गेल छथि। माँ एहिठाम भानस करबाक जिद्द धेने छथि। अनेरे मेहनति! लिअ' माँ सँ बात करू।' कहि क' मोबाइल माय के द' देलथिन। मोबाइल पर दुनू माय-बेटी गप केलनि। बेटीक गप पर माय कहलथिन– 'जिद्द हम नहि क' रहल छी। जिद्द त' ई धेने छथि। ठीक छै। सभ जेना एके पाठ पढ़ने छी।' कहि क' मोबाइल काटि देलथिन। रणजीत बजला– 'जखन अहाँ सभ एत' आयल छी त' आराम करू। घूमू-फीरू। जे मोन हुअय से करू। मुदा ई भानस-भात कथी लेल?' माय मुदा अखनो अड़ल छली। नहि रहल गेलनि। कने खोखिया क' बाज' लगली।

–'अहाँक घर मे सभटा इंतजाम अछि। चूल्हा अछि। बर्त्तन अछि। थाड़ी-बाटी अछि। खाली अन्न, तरकारी, दालि, तेल नहि अछि। भानस नहि होइत अछि। सभ सरंजाम तखन किएक रखने छी? जकर उपयोगे नहि तकर कोन जरूरत?' रणजीत मायक तामस के गमि लेने रहथि। वातावरण के हल्लुक करब जरूरी बुझेलनि। हँसि क' कहलथिन– 'माँ! अहाँके त' बुझले अछि। कोनो हम किनलहुँ अछि ई सभ? सभटा कम्पनी अपने मोने देलक अछि। हमरा एहि फ्लैट मे अयबासँ पूर्वे सभ किछु जुटा देल गेल।' एकटा गौरव-बोध रणजीतक चेहरा पर पसरि गेल छल। ओही जोश मे बजला– 'देलक अछि त' देलक अछि। हमरा एकर उपयोग नहि करबाक अछि। कइयो ने सकैत छी। जरूरत नहि अछि। फुर्सति नहि अछि। अहाँ सभ दू-चारि दिन लेल अयलहुँ अछि। कथी लेल भानस-भातक इंतजाम करब। जे मंगेबाक हो मंगाउ। खाउ आ आराम करू। भरि जीवन कत्ते भानस केलहुँ अहाँ। आब ई सभ छोड़ू। हमर आफिसोक बेर भेल जाइत अछि। टेलीफोन लग होटलक नम्बर लिखल अछि। फोन क' देबै।' कहि क' रणजीत उठि गेला। आइ भिनसुरका अखबारो नहि उनटौने रहथि। बाथरुम मे अखबार ओहिना राखल रहय। ओ बाथरूम मे ढुकि गेला।

बिपिन बाबू दुनू बेकती एक-दोसराक मुँह देखलनि। रेखा देवीक मुँह अनसोहाँत सन भेल छलनि। बिपिन बाबू से गमि लेलनि। नहुँएसँ कहलथिन, 'छोड़ू भानस-भातक चक्कर' कथी लेल जिद्द पकड़ने छी। अहूँ स्वस्थ नहिए रहैत छी। अनेरे टंट-घंट मे थाकि जायब। होटलसँ जे आओत से खा लै जायब।' रेखा

देवी बजलीह किछु नहि। मुदा ओ स्थिति के स्वीकार नहि क' पाबि रहल छली। ओहिना चुपचाप बैसल रहली। तखने दरबज्जाक घंटी बाजल। बिपिन बाबू दरबज्जा खोलि क' देखलनि। होटलक बेरा ठाढ़ छल। ओकर हाथ मे टिफिन रहै। डिब्बा सभ रहै। ओ बिपिन बाबू के नमस्कार केलक आ बाजल– 'नाश्ता, सर।' बिपिन बाबू बूझि गेला। बेराक हाथसँ डिब्बा सभ आ टिफिन ल' लेलनि। ल' जा क' किचेन मे राखि देलथिन। फेर केबाड़ बन्द कर' लगला त' रणजीतक स्वर सुनाइ देलकनि। रणजीत बाथरूमसँ निकलि गेल छला। बिपिन बाबू के पूछि रहल छलथिन– 'नाश्ता आबि गेल, पापा?' बिपिन बाबू स्वीकार मे मूड़ी हिलौलनि। बजला– 'हँ, आबि गेल अछि। किचेन मे राखि देने छी।'

–'नाश्ता मे आलूक पराठा आ दही हैत। जूस सेहो हैत। अहूँ सभ लेल कहि देने रहियैक। जल्दीसँ नहा-धो क' नाश्ता क' लैत जाउ। हम त' आब लगले निकलब।' कहि क' रणजीत तैयार हेबाक लेल बेडरूम मे चल गेल रहथि। तैयार भ' क' अयला त' हबड़-हबड़ नाश्ता कर' लगला। माय किचेनसँ आनि क' डाइनिंग टेबुल पर राखि देने रहथिन। लग मे बैसि क' खुआब' लगलथिन। रणजीत एकटा पराठा आ थोड़ेक दही लेलनि। फेर जूस पीलनि। माय पूछि देलथिन– 'लंच आफिसे मे करैत छी की डेरा अबैत छी?' रणजीत बिहुँसि देलथिन– 'डेरा किएक आयब? टाइम कहाँ भेटैत अछि। कहियो के त' आफिसो मे लंचक टाइम नहि भेटैत अछि। काजे करैत किछु खा लैत छी। जूस-तूस पीबि लैत छी। बेसी खायलो नहि होइत छै।' कहि क' रणजीत उठि गेला। फेर राति मे भेंट हैत। बजैत चल गेला। रेखा देवी मात्सर्यसँ भरि गेल छली। सैह, जलखै करबाक फुर्सति नहि छनि। दिनुका खेनाइ नहिएँ जकाँ। राति क' थाकल ठेहिआएल देह-मोनसँ की-कोना खाइत होयता? नहि, रणजीतक बियाह होयब आब एकदमे जरूरी भ' गेल छनि। कनियाँ औथीन त' खेनाइ-जलखै पर ध्यान देथिन। अपन हाथक स्वाद के हिस्सक लगौथिन। बहुए ने जीह के कन्ट्रोल करै छै। एहि बेर नहि मानबनि। कहुना गछेबे करबनि।

दुनू बेकती नहेलनि-धोलनि। फेर खेलनि-पीलनि। बिपिन बाबूकेँ भूख लागल रहनि। तीनटा पराठा खा लेलनि। जूस पीबाक मोन नहि भेलनि। रेखा देवीकेँ मुदा खायल नहि भेलनि। कहुना क' खोंटि क' एकटा पराठा खेलनि। बिपिन बाबू के कहलथिन-- 'नहि आब एना चल' बला नहि छै। ने खेबाक ठेकान ने रहबाक ठेकान। आब जल्दी बियाह भ' जाइ। कनिया औती त' सभटा

सम्हारती। हमरा बूते आब बेटा के सम्हारल नहि हैत। हमर त' कोनो बाते नहि मानैत छथि।' ओ कननमुँह भेल छली। आवेग बढ़ि रहल छलनि। बेटाक नेनपन मोन पड़' लगलनि। ओही सोह मे बाज' लगली– 'नेना मे रणजीत के बहुत दिन धरि हमरा बिना किछु ने कएल होइन। सभटा काज हमही करबै। हमरे हाथे खयता। हमरे पसित्र कयल कपड़ा पहिरता। मुदा आब त' जबान भ' गेल छथि। बहुते रुपैया कमाइ छथि। आब हमर कोन काज?' बिपिन बाबू देखलनि पत्नीक आँखि मे नोर हुलुक-बुलुक कर' लागल छनि। आब ई कनती। बुझाब' लगलथिन– 'अहूँ बताहि भेल छी। सभ घर मे एहिना होइ छै। माय के बाद पत्नी पुरुषक जिम्मेदारी ल' लैत छै। अहाँक आँचर ध' क' कोना रहता आब? आब त' अपन हिसाबसँ सोचैत छथि। जे मोन होइत छनि से करैत छथि। खाइ-पीयै छथि। पहिरै-ओढ़ै छथि। खर्च-बर्च करैत छथि। अपन दिमाग भेलनि। सख-सेहन्ता, जरूरत भेलनि। एही दिन लेल ने पोसने-पालने रहियनि? आब हिनकर फिकिर छोड़ि दिय'। रेखा देवी मुदा संयत नहि भेल छली। आर उत्तेजित भ' गेली।

–'कोना फिकिर छोड़ि दिय'। माय छियै, केना अपन आँखिए एक मात्र बेटा के बिलटैत देखू। कहियासँ ने कहैत छियनि डेरा पर नोकर राखू। भानस-भात क' देत। जेहेन नोकर ताकब तेहन भेटत। रुपैयाक कोनो कमी नहि अछि। आंग-समांग मे ताकूती करत। डेरा पर रहत। मुदा काने-बात नहि दैत छथि। सभटा अस्वीकार। नहि, नोकर समस्या उत्पन्न क' दैत छैक। बड़ संकट छै नोकर रखबा मे। ओकरा सँ काज लिअ' पड़ैत छै। ओकर सुविधा-असुविधाक ख्याल राख' पड़ैत छै। सुविधा छै त' असुविधो बड़ छै। अहीं कहू, समस्या त' कोनो व्यवस्था मे कने-मने होइत छै तेँ की लोक व्यवस्थे बन्द क' देत? देखियनु त' ई मैनेजर साहेब केहेन जिनगी बना लेने छथि। कथी लेल एतेक पढ़लनि-लिखलनि? किए एतेक पाइ कमा रहल छथि? अँए?' रेखा देवी बजने चल जा रहल छली। बिपिन बाबू आब उठि गेला। बूझल छलनि एहन मनःस्थिति मे रेखा कोनो तर्क स्वीकार नहि करती। वस्तुतः हुनका बुझेबाक लेल तर्को नहि छलनि हुनका लग। ओ त' समयक प्रवाह मे अपना के छोड़ि देने छला। ठाढ़ होइत कहलथिन– 'चलू उठू आब। बेसी सोचू नहि। अनेरे टैंशन हैत। ब्लड प्रेशर नहि बढ़ाउ। कनेक कालक बाद दिनुका खेनाइ लेल आर्डरो दिअ' पड़त। चलू, दिन मे की सभ खायब तकर प्लान बनाबी।' बाजि क' हँस' लगला बिपिन बाबू। रेखा देवी सेहो उठली।

बर्त्तन-बासन के जा क' किचेन मे राखि देलनि। बेटा कहने रहथिन. 'कोनो बर्त्तन-बासन के धोबाक काज नहि छै। लंच टाइम मे बेरा आओत त' सभटा धो क' राखि देत। होटलक बर्त्तन ल' जायत।' बिपिन बाबू आब चुरूट के कने खोंटि क' सुनगा लेने छला। चुरूटक कस लैत इतमीनानसँ बेडरुम दिस बढ़ि गेला। चुरुट पीबाक आदति हुनका प्रोफेसर भेलाक बादेसँ लागि गेल रहनि। एहि लेल विशेष व्यवस्था कयल करथि। आब त' बेटा दिल्ली सँ पठबैत रहैत छथिन।

कनेकाल दुनू बेकती आराम केलनि। कने नीन्न सेहो ल' लेलनि। आब एक बाजि गेल छल। मोन पड़लनि होटल मे लंच के आर्डर देबाक अछि। बिपिन बाबू पत्नीसँ पुछलनि– 'लंच मे की सभ खायब? हमरा त' बेसी भूख नहि अछि। हल्लुक-फल्लुक किछु खा लितहुँ। नहि खायब त' रणजीत औता त' फेर पूछ-ताछ कर' लगता। अहीं कहिअउ?' रेखा देवीक क्रोध खतम नहि भेल छलनि। कहलथिन– 'हमरा त' मसुरीक दालि-भात आ आलूक साना खेबाक इच्छा होइत अछि। हींग सँ छौंकल।' जोरसँ हँसला बिपिन बाबू। हँसैते बजला– 'लगैए एखन धरि अहाँ बिगड़ले छी। मसुरीक दालि आ आलूक साना होटल बला के बनाओल हेतै? जँ कहुना बनाइयो लेत त' अहाँ सन कोना हेतै। ओहेन स्वाद! होटले सन किछु कहिअउ।'

–'त' इडली आ साम्भर मंगबा लिअ'। रेखा देवी जेना पिण्ड छोड़ेलनि। बिपिन बाबूकेँ मुदा ई प्रस्ताव जँचि गेलनि। कहलथिन– 'वाह! एकदम ठीक कहलहुँ। सैह होइ लंच मे।' कहि क' होटल के टेलीफोन करबा लेल उठि गेला। रेखा देवी करौट फेरि क' झपकी लेबाक कोशिश कर' लगली।

राति आठ बजे रणजीत आफिससँ अयला त' बिपिन बाबू आ रेखा देबी टी.भी. देखि रहल छली। रणजीत अबिते घोषणा केलनि– 'माँ, आइ हम सभ अशोका होटल मे डिनर लेब। टेबुल बुक क' देने छियै। अहाँ सभ तैयार भ' जाउ। हमहूँ फ्रेश भ' जाइ छी।' कहि क' ओ बेडरूम मे चल गेला। दुनू बेकती सुनि क' मुदा बैसिले रहला। तुरन्त उठबाक कोनो इच्छा नहि भेलनि। बिपिन बाबू पत्नी दिस तकलनि। रेखा देवीक भीतर तैयार हेबाक कोनो उत्साह नहि छलनि। ओ ओहिना टी.भी. देखैत रहली। कनेकाल मे रणजीत फेर घूरि क' ड्राइंगरूम मे अयला। माय लग बैसि गेला। माय के आबेससँ पुछलथिन– 'माँ, भरि दिन की सभ केलहुँ। लंच मे की मंगबौने रही।' रेखा देवी प्रश्नक कोनो जवाब नहि

देलथिन। गम्भीर आँखिए बेटा दिस तकलनि आ कहलथिन– 'रणजीत, आब अहाँ बियाह क' लिअ'। बहुतो नीक-नीक लड़कीक फोटो आ परिचय-पात हम सभ अनने छी। देखि लिअ' आ जे पसिन्न पड़य, कहू हम सभ कथा स्थिर क' लैत छी। आब कोनो बहाना नहि चलत।' रणजीत हँसि देलनि। बजला– 'माँ, बियाहक इश्यू पर त' कत्ते बेर अहाँसँ गप्प भ' चुकल अछि। एखन बियाह करबाक कोनो मोन नहि अछि हमरा। मोन हैत त' कहब। एखन छोड़ू बियाहक गप्प। चलू तैयार होइ जाउ।' बिपिन बाबू के नहि रहल गेलनि। भेलनि जे, जे कहबाक छनि से कहि देल जाय। कहलथिन– 'रणजीत! हमरा सभ के समाजक लोक बड़ तंग क' रहल अछि। अहाँ बियाह योग्य भ' गेल छी। बढ़िया पद पर छी। बढ़िया कमा रहल छी। आब बियाह नहि करबाक कोनो कारण नहि अछि। बियाहोक एकटा बएस होइत छै। कत्ते दिन हम सभ कन्यागत सभ के टारैत रहबै। अहीं कहू?' रणजीत कनेकाल चुप्प रहला। फेर कहलथिन– 'पापा, बियाह त' हमरा करबाक अछि ने। एखन हम बियाह नहि क' सकैत छी। एकोरत्ती बियाहक मोन नहि अछि। कोन अगुताइ छै? फोटो सभ कथी लेल रखने छी। सभ के वापस क' दियौ।' कहि क' रणजीत उठि गेला। आब बिपिन बाबू तमसा गेल रहथि। कहलथिन– 'रणजीत, बैसू। आइ एहि बातक फैसला भ' जेबाक चाही जे अहाँ हमरा-सभक बात मानब की नहि? आफ्टरआल वी आर पार्ट आफ सोसाइटी। वी कान्ट इग्नोर द' सोशल नौर्म्स सो इजीली। बर के बियाहक मोन नहि छनि से कहि क' आब काज नहि चलि सकैए। लोक आब पूछैए जे किएक मोन नहि छनि। हमरा कोनो जवाब फुरा नहि रहल अछि। अहीं कहू, की कहियै सभ के?' रणजीत बैसि गेला। कहलथिन– 'पापा! जखन अहाँ पूछैत छी त' हम कह' चाहब जे हमर जिनगी पर आन ककरो अधिकार नहि छै। अपन जिनगी पर हमरा पूरा अधिकार अछि। सोकाल्ड 'सोसाइटी' कान्ट एक्सपेक्ट मी टू डांस टू द ट्यून ऑफ सोशल नार्म्स। यू नो मैरेज इज ए फैसिलिटी। बट आइ एम नाट इन ए पोजीशन टू एभेल दैट। बियाह मे बहुत झंझट छै। समस्या छै। हमरा ओतेक फुर्सति नहि अछि जे हम अपन वाइफक ध्यान राखि सकब। वाइफक इच्छा, आवश्यकता के पूरा करबा लेल अपन दिमाग आ समय खर्च कर' पड़त। से हम नहि कर' चाहैत छी। नहि क' सकैत छी। हमरा लेल एखन सभ किछु हमर कम्पनीक अछि। कम्पनीक काज अछि। हम अपन पूरा क्षमता आ योग्यता सँ कम्पनीक टारगेट एचीभ कर' मे लागल छी। अहाँ बियाह लेल हमरा कम्पेल नहि करू। जनै छी जे हमर

बातसँ अहाँ सभ के दुख भ' रहल हैत। माँ एकदम उदास भ' गेल छथि। मुदा हमर प्राब्लेम अहाँ सभ बूझू। नहि बूझब त' के बूझत?' कहि क' रणजीत माय-बाप दिस ताक' लगला।

बिपिन बाबू के भेलनि जे रणजीत के चोट्टे कहियनि जे हमर सभक प्राब्लम त' सेहो अहाँ एकोरत्ती बूझि नहि रहल छी। मुदा कोनो जवाब नहि देलथिन। हुनका भेलनि जे रणजीतक युक्ति सभक जवाब विवादे के खाली बढ़ाओत। बेटा के निरुत्तर कयलासँ की फायदा। हुनका ईहो भेलनि जे ओ तथा रणजीत नदीक दू छोर पर जेना ठाढ़ छथि। दूटा, फराक-फराक द्वीप पर। स्थितिक एहि विडम्बना पर ओ ने हँसि सकैत रहथि ने कानि सकैत रहथि। तैयो ओ अन्ततः अपना के रोकि नहि सकला– 'त' अहाँ लेल अहाँक कम्पनी सर्वोपरि भ' गेल अछि। आर सभ किछु एकदम गौण। माय-बाप, परिवार, समाज सभ...।' रणजीत बिच्चे मे बाप के रोक' चाहलनि। मुसकुरा क' कहलथिन– 'पापा, अहाँ सेन्टीमेन्टल भ' रहल छी। बी रियलिस्टिक। छोड़ू एखन बियाहक गप्प। चलै चलू। तैयार होउ। अशोका होटल चलल जाय।' फेर माय दिस घूमि क' बजला– 'माँ, चलू, अशोका मे अहाँकें ग्रैण्ड डिनर करबै छी। आफ्टर आल यू आर दी मदर आफ ए मार्केटिंग मैनेजर गेटिंग थर्टी लैक्स पर एनम।' कहि क' माय के भरि पाँज के पकड़ि लेलनि। रेखा देवी मुदा बेटाक पाँजसँ अपना के मुक्त केलनि। फेर रणजीत दिस तकैत कहलथिन– 'नहि यौ रणजीत, हमरा से नहि लगैए यौ। अपन बाबू के हम बजैत सुनने रहियनि, जे बाहर कुशल मैनेजर होइए से घरो मे होइए। घर के त' अहाँ बूझिते नहि छियै। तेँ घरसँ अहाँ भागि रहल छी। कम्पनी मे छी अहाँ मैनेजर मुदा खेबा-पीबाक समय नहि भेटैए।' रणजीत एहि बात पर माय के टोकलनि– 'दिन मे समय नहि भेटैत अछि मुदा राति क' त' खाइते छी। खूब खाइ छी। घर अरामे लेल ने होइ छै। से त' करिते छी। तखन?' रेखा देवी रणजीतक गप सुनलथिन आ फेर बजली– 'घर के अहाँ देबाल बुझै छियै की? डनलप के बेड आ तकिया? रेशमी तुराइ? मसनद? टी.भी., फ्रिज? जँ यैह सभ बुझै छियै त' की आराम हैत अहाँके? हरदम तनाओ मे रहब। तखन जे सभ करब से देह-मोन के आर नष्टे करत। आर भागब अहाँ घरसँ। यौ, रणजीत, हमरा त' चिन्ता भ' रहलए। ऐना मे अहाँ जीयब कोना यौ?' रेखा देवी बेटा दिस फेर मात्सर्यसँ ताक' लगली। एहि बेर रणजीतो माय के कोनो जबाब नहि देलनि। ओ बाप जकाँ माय के ई नहि कहि सकैत छला जे अहाँ सेन्टीमेन्टल भ' रहल छी।

■■

अभयक बेटा केँ दूटा दाँत भेलनि

रब्बी भाइ सँ बहुत दिन पर भेंट भेल रहय। ओ हमर पितियौत छथि। छी तँ हम सभ एक्के परिवारक मुदा भेंटघाँट आब कमे होत अछि। भेंटघाँट भले ही नहि होइत हो, सम्पर्क टूटल नहि अछि। स्नेह-भाव ओहिना बनले अछि। बेसीकाल मोबाइल पर गप होइत रहैत अछि।

रब्बी भाइ एकटा जिन्दादिल लोक छथि। संवेदनशील सेहो। गाम-घरक प्रति ममता ओहिना बनले छनि। गाम बेसी जा नहि पबैत छथि। नोकरीक व्यस्तता एकर मुख्य कारण अछि। हमरो स्थिति तेहने सन अछि। हुनका सँ बुझू तँ खराबे। हम कोलकाता मे रहैत छी। ओ पटना मे। पटना आ कोलकाता मे रहितो हमरा सभक बोली-बानी बदलल नहि अछि। मैथिलाम ओहिना अछि। रब्बी भाइक एतेक अंतराल पर भेंट हमरा उल्लसित केने छल। जखने ओ फोन केलनि जे कलकत्ता पहुँच रहल छी तखने सँ हम आ कल्पना दुनू बेकती हुनकर बाट ताकि रहल छलहुँ। भेंट होइते हम दुनू भाइ सोफा पर बैसिक' गप कर' लागल छलहुँ। कनेकाल दुनिया जहानक गपक बाद रब्बी भाइ बाजि उठला– 'बुझलहुँ परेश, फरवरी मे बहुत दिन पर गाम गेल रही। एम्हर छुट्टी आर कम रह' लागल अछि। ई सर्भिसवला नोकरी आब मारुक भ' गेल अछि। ओना सभ नोकरी मरखाह होइते छै। खैर, तँ कहैत रही जे फरवरी मे गाम गेल छलहुँ।' रब्बी भाइ कनेकाल चुप रहला। फेर कहलनि– 'असल बात छै जे ओ गाम आब नहि रहलै जे हमर-अहाँक गाम रहय। ओ गाम तँ आब निपत्ता भेल जाइत छै।' रब्बी भाइ फेर चुप भेला। किछु कालक बाद कहलनि– 'एक गिलास पानि पीआउ। मुदा फ्रीजवला नहि।' हम उठिक' एक गिलास पानि आनिक' देलियनि। ओ पानि पीलनि आ हमरा पूछ' लगला– 'अहाँ केँ मोन अछि, बेचन ककाक दलान पर एकटा डाकवला लाल बक्सा टाँगल रहै? धान कि गहूमक बोझ सभक बीच कोना ओ अकड़िक' ठाढ़ रहल करय? ऐनमेन कोनो साहेब जकाँ। वैह साहेब जकाँ अकड़िक' ठाढ़ डाकबला लाल बक्सा गाम मे बुझू तँ नगरक बोध करबैत रहय, नै? मुदा आब तँ गाम किदन भेल जा रहल अछि।' रब्बी भाइ बीचमे फेर विराम लेलनि। से मुदा हम बुझलिऐ नहि। हम तँ तखन गाम मे ओहि डाकबला लाल बक्सा लग ठाढ़ रही। टुकुर-टुकुर लाल बक्सा कें देखैत। रब्बी

भाइ जखन उठिक' बाथरूम दिस जाय लगला तँ हम चेहा उठलहुँ। मोन पड़ल हमर अवस्था ओहि समय पाँच वर्षक रहल हैत। ओ डाकबला लाल बक्सा हमरा अपना दिस खींचल करय। हम कखनोक' एम्हर-ओम्हर सँ घूमि-फिरि बक्सा लग ठाढ़ भ' जाइ। बक्सा दिस तकैत रही। मोन हुअय बक्सा कें कने छुबितहुँ मुदा हाथ उठाक' छूबाक कोशिश कयला पर छूबि नहि पाबी।

रब्बी भाइ बाथरूम सँ निकलि सोफा पर बैसि गेल रहथि। हुनका पर नजरि गेल तँ हम अपन नेनपनक स्मृति सँ उबरलहुँ। रब्बी भाइ दिस ताक' लगलहुँ। रब्बी भाइ कहलनि– 'असल बात छै जे गाम मे आब मोनो नहि लगैत अछि। की मोन लागत? गाम-घर मे आब ओ जुटान रहलै? भैयारी मे नुनूभाइ, श्यामू भाइ, भिल्ला भाइ आ छोटन गाम मे रहैत छथि। शेष हम-सभ नौ भाइ तँ बाहरे। भातिजक गच्छ मे खाली दीनू आ अभय। दीनूकें संतान नहि भेलनि अछि। अभय के बेटी पर सँ बेटा छनि। डेढ़ बरखक भेल हेतै आब।' कहिक' टेबुल पर राखल सौंफक किछु दाना मुँह मे रखलनि रब्बी भाइ। हम सोच' लागल रही जे अभयक बेटा कें एखन धरि नहि देखलियैए। अभयो सँ भेंट भेना कते दिन भ' गेल। बेसी फोनो नहि क' पबैत छी गाम। अभये मास मे दू-तीन बेर हमरा सँ नहि तँ काकियो सँ गप क' लैत छथि फोन पर। गामक समाचार, कुशलक्षेम सुनबैत रहैत छथिन। बुझू तँ कल्पनेक माध्यम सँ हम अभयक कहल गाम-घरक समाचार बूझि पबैत छी। नहि तँ गाम-घर बेसीकाल मोन सँ बिलायले रहैत अछि। मुदा जखन मोन पड़ैत अछि तँ खूबे जोर सँ मोन पड़ैत अछि। रब्बी भाइ टोकने रहथि। ओ टोकलनि तँ हम सोच-अफसोस सँ उबरलहुँ। ओ कहलनि– 'परेश, आब भूख लागि रहल अछि। कनिया केँ कहिअनु किछु बनौती।' हम ओतहि सँ कल्पना कें तकलहुँ। देखलहुँ जे ओ किचेन दिस जा रहली अछि। आश्वस्त भ' गेलहुँ जे कल्पना रब्बी भाइक बात सुनि लेलनि। हमरा किछु कहबाक प्रयोजन नहि अछि। हम फेर रब्बी भाइ दिस तकने रही। रब्बी भाइ कहलनि– 'परेश! अहाँ एम्हर बहुतो दिन सँ गाम नहि गेल छी। अहाँ कें ठीक सँ बूझल नहि अछि जे गाम मै की सभ भ' रहल अछि। गाम परुकाँ धरि कत्ते बदलि जैत से अहाँ सोचलहुँ अछि? गाम मे पैटघाट पर फ्लाइओवर बनि रहल अछि।' एतबा बाजिक' रब्बी भाइ फेर चुप भ' गेला। हम रब्बी भाइक गप पर गौर कर' लागल रही। हमरा बुझल छल जे पैटघाट फोर लेन सड़कक फ्लाइओवरक तर मे चल जायत। गाम द' क' फोर

लेन रोड गुजरतै। काज शुरू भ' गेल छै। ठाम-ठीम नव-नव संरचना ठाढ़ भ' रहल छै। हम ई सभ निर्माण कार्य अपन आँखि सँ देखने नहि रही। मुदा एहि सभक मादे बहुतो गोटा सँ सुनने रही। अभय से फोन पर समाचार कहैत रहैत छथि। ओ निर्माणक प्रगतिक सूचना दैत रहैत छथि। हमरा दू बरख सँ गाम नहि जेबाक बात कचोट' लागल। अपना के हम एहि लेल दोषी मान' लागल रही जे गाम जाक' अपन आँखि सँ एहि परिवर्त्तन सभ कें किऐ नहि देखलहुँ। हमरा पैटघाट बहुत जोर सँ मोन पड़' लागल रहय। हम आब पूरा-पूरी पैटघाटक मादे सोच' लागल रही। गामक पैटघाट जे वस्तुतः कमलाघाट छल। जत' उत्तर सँ दक्षिण कमला नदी बहैत छल। जत' पूब सँ पश्चिम सड़क छल। जे सुदूर नेपाल सँ दरभंगा आ पटना दिस जाइत छल। दरभंगे आ पटना किऐ कतेको दिस जाइत छल। ओहि कमला नदी पर कमला घाट लग अंग्रेजक जमाना मे एक टा लोहाक पूल बनल। लोहाक पूल बनौनिहार किओ पैट साहेब रहथि। तँ हुनके नाम पर कमलाघाट पैटघाट भ' गेल। ओही पैटघाट पर आब फ्लाइओवर बनि रहल अछि। हमरा समक्ष आब हमर नेनपन सँ आइ धरिक पैटघाट मूर्त्त रूप मे ठाढ़ हुअ' लागल छल। हमरा मोन पड़ि रहल छल जे ई पैटघाट कत्ते बेर ने उजड़ल अछि आ फेर सँ बसल अछि। उजड़ैत आ बसैत पैटघाटक गप गाम मे सभ जनैत अछि। कतेक तँ अपन जीवन मे आँखि सँ देखनहुँ अछि। एहि उजड़ैत-बसैत पैटघाट पर बुलैत-टहलैत, बस पर चढ़ैत-उतरैत हम क्रमशः अपन तरुणावस्था मे प्रवेश क' गेल रही। हमर आँखिक सोझाँ विजयादशमी दिनक पैटघाट प्रत्यक्ष हुअ' लागल। स्मृतिक पट खुजि गेल छल।

विजयादशमी दिनक करमान लागल भीड़। दुर्गा महरानीक जयघोष। चमचम चालक आगू मे महिषासुरक वध करैत दुर्गाक क्रोधित मुद्रा। दुर्गामहरानीक रथ कें खीचैत मारतेरास लोक। पाछू मे धर्रोहि लागल बूढ़, स्त्री, बच्चा तँ आगू मे कुसुमी रंग मे रंगल धोती आ उज्जर गंजी पहिरने माथ पर ललका मुरेठा बन्हने कुदैत-फनैत युवक, तरुण आ किशोर। पैटघाट पर एम्हर-ओम्हर घूमैत घनेरो लोक। ठाम-ठीम पर घौंदायल बजैत-हँसैत दर्जनो लोक। रंग-बिरंगक कपड़ा-लत्ता पहिरने स्त्री-पुरुष आ बच्चा। चाह पीबैत। पान चीबबैत। पीक फेकैत। छानल जाइत जिलेबीक दोकान पर जिलेबी किनबा लेल उपरौंझ करैत लोक। लोके-लोक।

क्रमशः हम ओहि करमान लागल भीड़ सँ बहराक' रब्बीभाइ लग सोफा

पर आबि चुपचाप बैसि गेल रही। देखलहुँ कल्पना टेबुल पर दू टा थारी राखि रहल छली। थारी मे सतुआ भरिक' फ्राइंग पैन मे पकाओल पूरी छल। माइक्रोओभेन मे भट्टा, आलू आ टमाटर कें पकाक' बनाओल साना रहय। ओहि साना मे ठाम-ठीम धनी पात हुलकी-बुलकी दैत रहय। थारी मे धात्रीक चटनी आ हरियर मरचाइ सेहो रखने छली कल्पना। हम दुनू भाइ कल्पनाक बनाओल सरंजाम कें भरि नजरि देखि शुरू भ' गेल रही। चुपचाप खाय लगलहुँ। खाक' भरि इच्छा पानि पीने रही। पानि पीबिक' एक-दोसरा कें देख' लागल रही। हम रब्बी भाइ कें कहने रहियनि– 'भाइ, ओ गप तँ छुटिऐ गेल।'

–'कोन गप?' ओ हमरा दिस प्रश्नवाचक मुद्रा मे ताक' लागल रहथि।

–'अरे, वैह फरवरी मे अहाँक गाम जेबाक गप।'

–'ठीके परेश! से तँ हम ठीके बिसरि गेल रही। आब सुनू सुनबैत छी।' आ रब्बी भाइ सुनब' लागल रहथि, फरवरी मे जखन गाम गेल रही तँ माघ मास रहै। कनकन जाड़। राति आठ बजे पैटघाट पर बस सँ उतरल रही। एकदम, भकोभन्न लागल पैटघाट। अन्हरिया राति रहै। बैग सँ टार्च निकालि आगू दिस रोशनी फेकलहुँ। जत्ते दूर धरि रोशनी गेल, देखलहुँ सड़कक दुनूकात खूनल खाधि मे दूर धरि पातर-पातर, लम्बा-लम्बा लमछुड्डुक लोहाक छड़ गाड़ल अछि। एक पतियानी मे ठाढ़ आसमान दिस तकैत। हमरा तँ अभिचंक भ' गेल। चारू दिस टार्चक रोशनी फेक' लगलहुँ। कने काल मे आश्वस्त भेलहुँ जे हम ठीके पैटघाट पर ठाढ़ छी। तखन सड़कक एकदम बीच द' क' आगू बढ़' लगलहुँ। बड़क गाछ लग पहुँचलहुँ। फेर घर पर पहुँचि गेलहुँ। घर पर पहुँचि गेलाक बाद कुर्सी पर बैसिक' उसास भेल रहय। अभय जगले रहथि। पहिनहि फोन क' देने रहियनि। खा-पीबिक' सूति रहल रही। जल्दीए नीन्न भ' गेल।' रब्बी भाइ बाजिक' कनेकाल चुप भ' गेला। टेबुल पर राखल गिलास उठाक' आधा गिलास पानि पीलनि। गिलास कें टेबुल पर राखि फेर कह' लगला– 'भोरे उठिक' हम नुनूभाइक घर पर पहुँचल रही। नुनू भाइ एम्हर पाँच बरख सँ गामे मे रहैत छथि से तँ अहाँ कें बुझले अछि। नोकरी मे कत'-कत' ने बौअयला। कोन-कोन ने काज पकड़लनि। छोड़लनि। एहि शहर सँ ओहि शहर। देश-विदेश सभ ठाम गेला। अहाँ कें तँ कत्ते दिन ने भ' गेल हैत हुनका सँ भेट-घाट भेना। तँ हमरा देखिते तहिया ओ हर्ष सँ बाजि उठल रहथि, 'रब्बी! आउ, आउ। गाम पहुँचै मे अबेर भ' गेल की? राति मे देरी सँ अयलहुँ?' हम नुनू भाइ कें गोड़ लगैत कहने रहियनि– 'हँ, नुनू भाइ! पहुँचै मे

अबेर भ' गेल। आठ बजे राति मे पैटघाट पर उतरलहुँ। थाकियो बड़ गेल रही। खा-पीबिक' लगले सूति रहलहुँ।' ई गप सुनाक' रब्बी भाइ कह' लगला, 'अहाँ जनैत छी जे हम गाम जाइ छी तँ पहिल काज होइत अछि नुनूभाइ सँ भेट। नुनू भौजी सँ भेट। गप-शप। चाह-ताह। दुनू बेकती आब बूढ़ भ' गेल छथि। मुदा एखनो दुनू बेकती मे प्रेम-भाव ओहिना कायमे छनि। बूझू तँ जबानी सँ बेसिए। एहन मिलान नहि देखल अछि। दिन-दिन जेना बढ़िये रहल छनि। नुनूभौजी केँ बातरस तबाह केने रहैत छनि। उठि-बैसि नहि होइत छनि। नुनू भाइ अजमेटिक छथि। मुदा दुनू एक दोसराक सपोर्ट सँ जीवन जीबि रहल छथि। से नीक जकाँ। नुनू भौजी बैसिक' सभ टा काज करैत छथि। तरकारी कटैत छथि। आटा सनैत छथि। रोटी बेलैत छथि। नुनू भाइ किचेन मे ठाढ़ भ' क' तरकारी रन्हैत छथि। रोटी पकबैत छथि। बुझलहुँ, अद्भुत होइत अछि दुनू केँ देखब।' कहिक' रब्बी भाइ कने साँस लेबाक लेल ठहरला। फेर गामक गप कह' लगला– 'तँ हम, ओहि दिन नुनू भाइक दरबज्जा पर पहुँचलहुँ तँ देखलहुँ जे नुनूभाइ मोटका मंकी कैप पहिरने, दू सूत्ती ओढ़ना ओढ़ने आराम कुर्सी पर बैसल छथि। हम दोसर दिस राखल कुर्सी पर बैसि गेलहुँ। नुनूभाइ पटनाक हमर डेराक हाल-चाल लेलनि। अपन बेटा सभक मादे कहलनि। फेर अकस्मात् कह' लगला– 'रब्बी! एकटा बात बुझलहुँ। गाम आब रहबा जोगर नहि रहल। एक हफ्ता पहिने राति मे किओ दरबज्जा पर मरल कुकूर फेकि गेल। एहिना किछु ने किछु उछन्नर करैत रहैत अछि। भोरे उठलहुँ तँ दरबज्जा पर मुइल कुकूर केँ पड़ल देखलहुँ। माथ पकड़ि क' बैसि गेलहुँ। बाद मे कत'-कत' ने बौअयलहुँ। नेहोरा-मिनती केलहुँ। तखन सय रुपैया मे कुकूर दरबज्जा पर सँ हटल।' कहिक' नुनू भाइ चुप भ' गेला। तनाओ हुनका चेहरा पर स्पष्ट छल। हम बहुत मर्माहत भ' गेल रही। किछु फुराइत नहि छल जे की कहियनि एहि अस्सी बरखक बूढ़ केँ। कनेकाल चुपे रहलहुँ। फेर साहस क' केँ पुछलियनि– 'नुनू भाइ! अहाँ सन लोक लेल गाम की आब एकोरत्ती रहबा जोग नहि रहलै? अहाँ तँ बड़ दुखदायक समाचार सुनोलहुँ। सुख-प्रसन्नताक कोनो समाचार आब गाम मे नहि रहलै की? ...हमर एहि बात पर नुनू भाइक घोंकचल चेहरा नहूँ-नहूँ सरियाम हुअय लागल। कने-काल मे ओ मुसकुराय लागल रहथि। फेर कने हँसल रहथि। हँसैत-मुस्कुराइत, हमरा दिस तकैत कहने रहथि. 'अच्छा तँ सुनू! खुशीक समाचार सुनबैत छी। अहाँ केँ नहि बूझल हैत। अभयक टुनमुनिया बेटा केँ दू टा दाँत भेलै अछि।' कहिक' नुनू भाइ भभाक' हँसल रहथि।

■■

खुशीक नाम जीवन

कन्हैया बाबू एहि बीचमे उदास रहल करथि। मुदा आइ ओ प्रसन्न छला। खूब प्रसन्न। प्रसन्नताक कारण रहनि जे बेटा बियाह करबाक निर्णय कयने रहनि। अपन पसिन्नक कनियाँ सँ। कनियाँ ओकरे संग काज करैत रहैक। दुनू एक्के कम्पनीमे छल। एक्के पद पर। बेटा अकस्मात् आबि क' पसिन्नक कनियाँक संग बियाहक सहमति माँगि रहल छलनि। ई तीनू बात कन्हैया बाबूक लेल प्रसन्नताक बात रहनि। हुनकर उदासी आब छँटि गेल रहनि। उदासीक बात एहि दुआरे जे आइ तीन बरख सँ ओ जेठ बेटा संदीपक बियाह लेल परिश्रम क' रहल छला। मुदा बेटा नाक पर माछी नहि बैस' दैत छलनि। सभ बेर कोनो ने कोनो लाथ लगा क' गपकेँ टारि दिअय। एक बरख पहिने तँ दुनू बेकती एहि काज लेल विशेष रूपें बंगलोर गेल रहथि। दस दिन बंगलोरमे रहला। पति-पत्नी मीलि क' बेटाकेँ बुझेबो-सुझेबो कयलनि। कने-मने आँखियो-ताँखि देखौलथिन। मुदा संदीप सोझे जुआ पटकि देने रहनि– 'अहाँ सभ बियाह लेल किएक एतेक सिरियस भेल छी। एखन कोन बेर बीत गेल छै। हम एखन बियाह नहि करब। जखन बियाह करब तँ अहाँ सभकें कहबे करब ने।' ओ सभ कनियाँ सभक फोटो ल' गेल रहथि। कनियाँक पढ़ाइ-लिखाइक पूरा डिटेल रहनि। किछु एखन पढ़िते रहय। किछु जॉब मे सेहो छल। कुल, गोत्र, मूल, पाँजि, पूरा परिचय लिखल छल। कम्प्यूटरसँ टाइप कयल। सम्बन्धिक सभक नोकरी-चाकरीक विवरण छल। मुदा संदीप ई सभ उतेढ़ दिस कोनो ध्याने ने देलकनि। माय सुभद्रा एकटा कनियाँक फोटो देखा क' कहलथिन– 'हे, एहि कनियाँकेँ देखिअउ। केहेन सुन्दर छै। हम देखनहुँ छियै। मुँह-कान एकदम लिक्खल छै। एहन पुतहुक हमरा बड़ आवेस होइये। अहाँ संग जोड़ी एकदम मीलि जेतै।' संदीप एक नजरि फोटो पर देलक आ बाजल. 'माँ, अहाँ किएक हड़बड़ाइ छी। एखन हमरा बियाहे ने करबाक अछि तँ फोटो-तोटो की। फोटो सभ घुरा दिअउ। बियाह करब तँ हम कहब।' दुनू बेकती की करितथि घूरि क' पटना चल अयला। मुदा कन्हैया बाबूक मोन छटंपटाइते रहलनि। कहिओ क' कन्हैया बाबूकेँ होइन जे कहीं संदीप ओहीठाम तँ ने ककरो पसिन्न क' लेलनि अछि। कोन ठेकान! कहियो बियाह-दान क' कनियाँ संग ने चल आबथि गोर लगेबाक लेल। ई बात बेर-बेर हुनकर मोनमे उठनि। एक दिन सुभद्राकेँ निचेनीमे कहलथिन. 'बुझलहुँ यै! कखनो क' हमरा होइये जे संदीप कोनो छौंड़ीसँ प्रेम तँ ने कर' लागल छथि। तें हमर सभक

प्रस्ताव पर कान-बात नहि दैत छथि। अहाँ घुमा-फिरा क' पुछियनु ने कोनो दिन।' सुभद्राकेँ एहि बात पर हँसी लगलनि। कहलथिन– 'अहाँ केँ तँ हरदम संदीपक बियाहे पर ध्यान रहैत अछि। कहबे तँ केलनि अछि जे जखन बियाह करब तँ अहाँ सभकें कहबे करब ने। अनेरे हम किए प्रेम-त्रेम के बारे मे खोध-वेद करियौन। जँ एहन किछु बात नहि हेतै तँ हुनका केहेन लगतनि?'

–'केहेन लगतनि? कहता जे एहन किछु बात नहि छै। जखन बियाह करब तँ जे कथा सभ आयल अछि ताहि मे सँ चुनाव क' लेब।' कन्हैया बाबू सुभद्राकेँ चोट्टे कहलथिन। सुभद्रा फेर किछु नहि बजली। कन्हैया बाबूकेँ ओना एहि बातमे कोनो हर्ज नहि लगैत छलनि जे युवक-युवती एक-दोसराकेँ पसिन्न सँ बियाह करय। जँ दुनू योग्य अछि तँ अपन पसिन्न सँ बियाहक निर्णय किएक नहि ल' सकैत अछि। हुनका हर्ज खाली एहि बात मे छलनि जे दुनू बियाह खाली चोरा-नुका क' नहि करय। चुपचाप मन्दिर मे बियाह क' लेलहुँ से कोन बात भेल। माय-बाप, परिवार, समाज कियो किछु नहि बुझलक। सुभद्रा केँ फेर कहलथिन, 'देखू ककरा संग बियाह करता से संदीपक निर्णय हेतनि। एहिमे हमरा कोने हर्ज नहि लगैत अछि। जखन पढ़ाइ-लिखाइ, नोकरी-चाकरी, रोजगार सभ किछुक सम्बन्ध मे युवक-युवती आब अपने निर्णय लिय' लागल अछि तँ जीवन संगीक चुनाव माय-बापक अनुसार करय तै मे कोन तुक छै? हमर कहब एतबे जे, किछु करथु चुपचाप नहि करथु। कोनो बातकेँ अनेरे गोपनीय नहि राखथु। ककरोसँ प्रेम करैत छथि तँ बाजथु जे प्रेम करैत छी।' सुभद्राकेँ पतिक बात पर कने रोष भेलनि। ई कोन बात भेल जे माय-बापक कोनो मोजर नहि। जँ बेटा के कनियाँ हेतै तँ हमरो पुतहु हैत ने। सुन्दर, गुणी पुतहुक ककरा ने सेहन्ता होइ छै। से देखल-सुनल, सासु-ससुरक मनमाफिक हो तँ ताहिमे कोन हर्ज? सुभद्रा केँ इहो भेलनि जे भ' सकैत अछि जे ई आक्रोशमे ने बाजि रहल होथि। बेटा कथा-वार्त्ता पर किछु ध्यान नहि द' रहल छनि तेँ किछु एहिना बाजि रहल छथि। कहलथिन. 'अहाँ अनेरे चिन्ता करैत छी। संदीप एहन किछु नै करता। जखन बियाहक मोन हेतनि हमरा सभकें कहबे करता। जे हेतै से देखल जेतै। बेटा पर एतेक निभरोस किएक होउ। एहि मादे बेसी नहि सोचू। हे, अनेरे अपन ब्लड प्रेशर नहि बढ़ाउ।' कहि क' सुभद्रा उठि गेली। कन्हैया बाबू कें हँसी लगलनि। कहलथिन– 'नै, नै, ब्लड प्रेशरक गप नहि छै। हम जे किछु कहलहुँ अछि से ठंडा दिमाग सँ खूब सोचि-विचारि क' कहलहुँ अछि।' सुभद्रा फेर पति दिस एक बेर देखि भनसाघरमे भानसक इंतजाम लेल चल गेली। कन्हैया बाबू टी.भी.क स्वीच ऑन केलनि।

सौभाग्य मिथिला चैनल पर गीत होइत रहैक। देख' लगला।

कन्हैया बाबू पाँजि-पाटिक लोक रहथि। मुदा तकर कोनो गौरव नहि रहनि। परिवारमे ओना ककरो बियाह जाति सँ बाहर नहि भेल रहनि। अपना मोने कियो बियाहो ने केने छल। सभक बियाह घर कथे सँ भेल रहैक। पहिने तँ परिवारमे संस्कृत पढ़बाक परम्परा रहनि। मुदा समय बदललैक तँ अर्थकरी विद्या लोक पढ़' लागल। से कन्हैया बाबूक पीढ़ीसँ पूर्वहिसँ शुरू भ' गेल रहैक। ओ अपने कॉमर्स पढ़ने रहथि। बिहार सरकारमे वित्त अंकेक्षक छला। छोट भाइ डिप्टी कलक्टर रहथि। एखन मधेपुरा जिलामे अपर समाहर्त्ता छलथिन। पितिऔत सभ सेहो विभिन्न नोकरीमे छलथिन। सभ अपन रोजी-रोटीमे लागल छल। कियो गाममे नहि रहैत छल। खेती-बारी कियो अपने सँ नहि करय। जे किछु खेत रहनि से बटैया लागल। गाममे खाली कन्हैया बाबूक एक पित्ती मधुसूदन बाबू रहैत छला। ओ गामेक हाइस्कूलसँ रिटायर केने रहथि। भरि जीवन गाममे रहला। दोसर कन्हैया बाबूक एक भातिज प्रदीप गाममे रहैत छला। ओ गामक चौक पर किरानाक दोकान खोलने रहथि। दोकान खूब चलनि। दोकानक आमदनी सँ हुनकर गुजर नीक जकाँ भ' जाइन। कन्हैया बाबूक घर-आंगन तँ गाममे रहनि मुदा ओहिमे कियो रहनिहार नहि। ओ गामसँ सम्पर्क तोड़ने नहि रहथि। कहियो क' सपरिवार गाम जाथि। परिवारमे कोनो काज-करेबाक होइन तँ ओहिमे यथासम्भव सम्मिलित होथि। रहैत छला पटनामे। जोड़ि-जाड़ि क' एकटा मकान बनौने रहथि। मकान लेल बैंकसँ लोन लेने रहथि। अपने मकानमे रहैत छला। तेँ मकान भाड़ा तँ नहि लगनि मुदा बैंकक हाउसिंग लोन मासे-मास सधब' पड़नि। बेटा संदीप पटनेमे लिखलकनि-पढ़लकनि। चेन्नईसँ कम्प्यूटर इंजीनियरिंग कयलकनि। ओ तीन बरससँ बंगलोरमे टी.सी.एस. कम्पनीमे जॉब करैत रहनि। एकटा बेटी रहनि रूपा। रूपा बी.ए. फाइनल इयरमे छल पटना कालेज मे। अंग्रेजी आनर्स रहैक। ओकर इच्छा रहैक एम.ए., पी.एच.डी. करबाक। ओ लेक्चरर बनय चाहैत छल। बेटाकेँ जखनसँ नोकरी भेलनि तखनेसँ ओ ओकर बियाहक मादे सोचय लगला। ई सोच ओहिना नहि आयल रहनि। जें कि कथा सभ आब' लगलनि तें ओ सोचहु लगला। कएटा इष्ट-मित्र, सर-सम्बन्धीक पुछ' लगलनि जे बेटाक बियाह आब कहिया करेबैक। कतेक पैरबियो कर' लगलनि। हुनका होइन जे बियाह-दान लेल कनियाँ-बरक चुनाव आब माय-बापक काज नहि रहि गेलैक अछि। ताहूमे जखन पाइ-कौड़ी, दान-जैतुकक कोनो खाँहिस नहि अछि तँ किए एहि लेल आफन तोड़ू। मुदा लोक सभक अबरजात आ प्रस्ताव सभ हुनका बिखिन्न केने रहनि। तें ओ

संदीपकेँ निर्णय लेल जोर दैत रहथि। मुदा संदीप नाक पर माछी नहि बैस' दैनि। बादमे ओ लोक सभकेँ कहैयो लागल रहथिन– 'औजी, बियाह तँ हमरा नहि ने करबाक अछि। करता तँ वैह ने। ओ एखन बियाहे ने कर' चाहैत छथि। हमर-अहाँक जमाना तँ आब छैक नहि, जकरा संग माय-बाप कहलनि तकरासँ क' लेलहुँ बियाह। आब तँ बर जत' स्वस्ति देता, जत' पसिन्न हेतनि तत' करा देबनि बियाह। एहनामे कन्यागत किऐ प्रतीक्षा करैत रहता। आनठाम भ' जाइत छनि तँ ठीक क' लेथु। समाजक कन्याकें हम किए अनेरे छेकने रहियौक।' घटक आ पैरवीकार सभ ई गप सुनि चल जाथि। कतेक आयब छोड़ि देलनि। कतेककेँ आनठाम ठीक भ' गेलै। मुदा किछु गोटा एखनो लागल छल। एहनामे संदीपक अपन पसिन्नसँ बियाह करबाक निर्णय सुनि कन्हैया बाबूकेँ भेलनि जे एक्कहि बेर जेना उग्रास भेल हो। ओ प्रसन्न भ' गेल रहथि।

संदीप पहिने माय सँ गप कयलनि। फेर बाप सँ। मायकेँ कहलनि– 'माँ, हम कनियाँ पसिन्न क' लेलहुँ। ओ हमरे कम्पनीमे काज करैत छथि। ओहो हमरे पद पर छथि। दुनू कम्प्यूटर इंजीनियर छी। हमरे संग हुनको बहाली भेल छनि। पहिने त्रिवेन्द्रममे छली। एक बरख पहिने बंगलोर आयल छथि। नीक स्वभाव छनि। स्वभाव हमरासँ मिलैत छनि। बहुतो बात जे हमरा पसिन्न अछि से हुनको पसिन्न छनि। हम दुनू गोटा एक-दोसराक परिवारक सहमति सँ बियाह कर' चाहैत छी। हुनकर पिताक घर केरलमे कोच्चिमे छनि। मीनाक्षी नायर नाम छनि। अहाँ देखबनि तँ अहूँ कें पसिन्न पड़ती। ओ अपन माय-बाप सँ गप क' लेने छथि। हुनकर पापाकें हमरो सँ गप-सप भेलनि अछि। आब जेना अहाँ सभ कहब तेना हम सभ करब।' सुभद्राकेँ बेटाक गप पर कने कालक लेल ठकमूड़ी लागि गेलनि। किछु बजले ने होइन। मोन पड़लनि पतिक गप। तँ हुनका एकर आशंका भ' गेल रहनि। तें ओ एना बजैत रहथि। सुभद्रा सोचलनि जे आब की कयल जा सकैत अछि। जे बेटाक इच्छा सैह हुनको सभक इच्छा। जाहिमे संतान सुखी. ताहीमे हमरो सभक सुख। सभक खुशी सभसँ पैघ बात थिक। कहलथिन– 'जखन अहाँकेँ कनियाँ पसिन्न छथि तँ हमरो सभकेँ किएक ने पसिन पड़ती। अहाँ बियाह क' रहल छी सैह खुशीक बात। अहाँ सुखसँ रही सैह हमर सभक कामना। खाली होइए जे पुतहु सँ गप कर' चाहब त' से कोना हैत?' बाजि क' सुभद्रा बेटाक मुँह दिस ताक' लगली। संदीप मुसकुराइत कहलथिन– 'से किए? गप किए ने हैत। जेना अहाँकेँ पुतहुसँ गपक चिन्ता अछि तहिना पुतहुओकेँ सासुसँ गपक सेहन्ता छनि ने। ओ तँ छह माससँ एहिमे लागल छथि। हमरासँ खोधि-खोधि क' मैथिली

बाजब सिखि रहली अछि। डिक्शनरी सेहो किनलनि अछि। हिन्दी तँ अबिते छनि। जल्दीए ओ मैथिली बाज' लगती। एम्हरका रीति-रेबाज, व्यवहार सभमे सेहो हुनकर रूचि छनि। हमरा होइए अहाँ जे सभ सिखेबनि ओ सभटा जल्दीए सिख लेती। एहि सभक चिन्ता अहाँ नहि करू! मीनाक्षीक पापा, माँ सभ अहाँ सभसँ बियाहक सम्बन्धमे भेंट कर' आब' चाहैत छथि।'

बेटासँ पहिने सुभद्रा पतिसँ सभटा गप कयलनि। ओ एतबे बजला, 'हमरा तँ होइते छल। संदीप ओम्हरे बियाहक लेल कनियाँ चुनता। चलू नीक बात। केरलक पुतहुक हमरालोकनि स्वागत करी। खूब प्रसन्नतासँ बियाह सम्पन्न होअय। कोना-की हेतै ताहि लेल कनियाँक माय-बापसँ तँ गप-सप जरूरी अछिये। पहिने संदीपसँ गप करैत छी।'

से सभटा गप-सप भेल। नायर परिवारकें आमंत्रित कयल गेल। ओ सभ अयला आ निर्णय भेल जे बियाह तँ कोच्चिमे होयत मुदा चतुर्थी पटनामे होयत। बियाह कोच्चिमे हुनका सभक रीतिएँ होयत आ चतुर्थी हिनका सभक रीतिएँ। विध-वाधमे जे किछु भिन्नता हो, बियाह परम्पराक अनुसार वैदिक रीतिएसँ होयत। दुनू समधि एक-दोसराक व्यवहारक विस्तारसँ जनतब लेलनि। सभ कार्यक्रम निश्चित कयल गेल। कन्हैया बाबू छोट भाइसँ गप कयलनि। गाम जा क' पित्ती मधुसूदन बाबू सँ गप कयलनि। सभसँ गप क' बियाहक दिन निश्चित भेल। पित्ती मधुसूदन बाबूक संग सभ बर-बरियाती कोच्चि गेला। बियाह सम्पन्न भेल। खूब आबेस आ सम्मान सँ बरियाती सभक स्वागत भेलनि। फेर सभ पटना अयला। पटनामे चतुर्थीक विधि सम्पन्न भेल। वर-वधूक स्वागत समारोह भेलैक। स्वागत समारोहमे संदीप तँ कने गंभीर बनल छला मुदा मीनाक्षीक चेहरा पर प्रसन्नता छिटकैत रहय। रूपा सदिखन भाउज संग लागल रहय।

सुभद्रा पुतहुकेँ घोघ करब सिखौलनि। माथ पर आँचर राखब सिखौलनि। कनियाँ कें जे सभ सिखाओल जाइ से सभ बेस आबेस सँ मनोयोगपूर्वक सिखय। किछु दिनक बाद कन्हैया बाबू सपरिवार गाम गेला। भगवतीकेँ आँचर-आरत पड़ल। ढोल-पिपही बाजल। कनियाँ-बर गोसाउन केँ गोर लगलनि। गामक माय-धी, सुआसीन-बुआसीन सभ गोसाउनिक घरमे थहाथही करैत छली। सभ नव कनियाँ केँ घोघ उघारि-उघारि मुँह देखलनि। हँसी-चौल भेल। कन्हैया बाबूक पितिआइन लाल काकी बजली, 'ऐँ देखियौ यै, ई केरलक कनियाँ तँ अपने सभ जकाँ छै। हमरा तँ होइ छल जे...।'

■■

टीस

बिमला तीन दिन सँ जेल मे बन्द छली। न्यायिक हिरासत मे। पति फरार छलथिन। आरोप रहनि जे दुनू बेकती मीलि क' गबन आ जालसाजी केलनि अछि। ओहि दिन अकस्मात् मारित रास पुलिस घर मे घुसि गेलनि। घर मे असगरे रहथि। केबाड़ पर जोर सँ खटखट हुअ' लागल रहनि। केबाड़ खोललनि त' देखलनि जे पुलिस सभ ठाढ़ अछि। पुछलखिन– 'की बात छै? किए आयल छी अहाँ सभ?' पुलिस आफिसर कहलकनि– 'वारंट अछि, गिरफ्तार कर' आयल छी। लक्ष्मी नारायण कत' छथि?'

–'ओ कत्तौ बाहर गेल छथि। कत्त गेल छथि से नहि बूझल अछि।' बिमला केबाड़ लग ठाढ़ भ'क' उत्तर देलथिन। ओ पुलिस सभ दिस तकलनि। करीब दू दर्जन सिपाही सभ ठाढ़ रहय। पुलिसक पाछू मोहल्लाक लोक सभ रहय। पड़ोसी सभ। चन्दूक माय रहथिन। पुलिस आफिसर बिमला सँ कहलकनि– 'अहाँ केबाड़ लग सँ हटि जाउ। बाहर मे आबिक' बैसू। हम सभ घरक तलाशी लेब।' आ आफिसर संगे सिपाही सभ घर मे घुसि गेल। बिमला घरक बरामदा पर राखल कुर्सी पर बैसि गेली। चन्दूक माय हुनका लग आबिक' ठाढ़ि भेली। पुलिस सभ कोठली सभ मे जा क' तलाशी ल' रहल छल। ओ सभ अलमारी के खोलि क' देख रहल छल। दिवान आ मेज-टेबुल सभमे ताकि रहल छल। जे कागज आ रजिस्टर सभ भेटलै तकरा एकठाम एकट्ठा क' रहल छल। मुदा लक्ष्मीनारायण माने बिमलाक पति त' घर मे रहथि नहि त' कोना भेटतथिन?

पुलिस आफिसर कागज-पत्तर आ रजिस्टर सभके पढ़ि-पढ़ि एक कात के रखलक। फेर ओकर सीजर लिस्ट बनौलक। मोहल्लाक दू टा लोक के बजा क' गबाह मे दसखत करौलक। फेर बाहर आबि सर्द भेल बैसल बिमला सँ पुछलकनि– 'कत्त' गेल छथि अहाँक हसबैंड? अहाँ दुनू गोटा मीलि पन्द्रह लाख टाकाक गबन आ जालसाजी केलहुँ अछि। चलू, अहाँके थाना चल' पड़त।' ई सूनि क' बिमलाक पैर तर सँ जेना धरती घुसकि गेलनि। ऐं, गबन आ जालसाजी? ओ एकदम सन्न रहि गेली। हुनका किछु फुड़ा नहि रहल छलनि। मुँहक थूक सभटा सुखा गेल रहनि। कहुनाक' सेप घोटलनि आ कहलथिन– 'एखन हम कोना जा

सकब? पति घर मे नहि छथि। धियो-पूता एत' नहि रहैये। हम असगर छी। हुनका आब' दिअनु।' बिमला के दूटा बेटा रहनि। दुनू मे सँ कियो आब संग नहि रहैत छलनि। जेठ बेटा भूवनेश्वर मे छल। इंजीनियरिंगक पढ़ाइ करैत। दोसर दिल्ली मे रहय। होटल मैनेजमेंटक कोर्स करैत। पति लक्ष्मी नारायण एकटा प्राइवेट फर्म मे काज करैत रहथि। मुदा एखन तीनू पुरुष मे सँ कियो लग मे नहि रहनि। ओ बकर-बकर पुलिस आफिसरक मुँह ताक' लगली। पुलिस आफिसर कहलकनि– 'अहाँ सँ पूछताछ करबाक अछि। थाना पर चल' पड़त। चलू।' बिमला घर मे ताला लगौलनि। कुंजी चन्दूक माय के हाथ मे द' देलथिन। गह्वरित आँखि सँ चन्दू माय दिस तकलनि आ पुलिस संग विदा भ' गेली।

जेल मे बैसल बिमला के सभ बात मोन पड़ि रहल छलनि। मोन पड़ि रहल छलनि जे पति के ओ एक हफ्ता सँ बेचैन देखि रहल छली। सदिखन जेना कोनो गुनधुन मे लागल। कखनो कागज-पत्तर मे डूबल त' कखनो रजिस्टर सभकें उलटबैत-पुलटबैत। कखनो नहाइ लेल विदा भेलहुँ, फेर घंटा भरि उघारे आंगे बैसले रहि गेलहुँ। कखनो बिछान पर पड़ल त' कखनो कुर्सी पर बैसि क' देवाल दिस तकैत। एहि बीच मे कोनो वस्तु ठाम पर भेटबे नहि करनि हुनका। नहि भेटनि त' चिकर' लागथि। माथ-कपाड़ नोच' लागथि। बिमला के अनेरे झाड़' लगथिन। सभ वस्तु-जात के फेकि देथि। 'कोनो चीज के अहाँ जगह पर रह' नहि दैत छियै। आइ एत' राखि देलहुँ आ काल्हि ओत' राखि देलहुँ। जग्गह पर किछु भेटिये नहि सकैत अछि। लगैत अछि जेना कपार फाटि जायत। एहि घर मे आब हम रहि नहि सकै छी।' बाजि-भूकि क' फेर ओ घर सँ बहरा जाथि। बेसीकाल बहरायले रहथि।

बिमला के आब अर्थ लागि रहल छलनि। एक दिन एहिना लक्ष्मी नारायण जखन किछु शान्त सन घर मे रहथि त' बिमला पूछि देने रहथिन– 'आइ-काल्हि बड़ बेचैन देखैत छी अहाँकेँ? बेसीकाल घर सँ बाहरे रहैत छी। हरदम क्रोध जेना नाके पर रहैत अछि। एहन त' पहिने नहि रही। एहन त' नहि देखने छी अहाँकेँ? की भेल अछि? किछु भेल अछि की?' बिमला जेना पतिक चेहरा पर अपन आँखि स्थिर क' लेने रहथि। लक्ष्मीनारायण अपना के सहज बनेबाक चेष्टा केने रहथि आ फेर कहने रहथिन– 'कोआपरेटिवक काज बढ़ि गेल अछि। झंझटि बेसी भ' गेल अछि। ई सभ होइते रहैत छै। सभटा ठीक भ' जेतै। सम्हरि जेतै सभटा। अहाँ

किए घबराइ छी? घबरेबाक कोनो बात नहि छै।' मुदा बिमला आश्वस्त नहि भेल छली। हुनका भेलनि पति किछु नुका रहल छथिन। पुछलथिन– 'एहि बीच मे अहाँके ठीक सँ खाइत-पीयैत सेहो नहि देखैत छी। खाइत-पीयैत काल किछु बजितो नहि छी। अन्न-पानिक ने प्रशंसा करैत छी आ ने निन्दा। परसू कते आबेस सँ बड़ी बनौने रही। पहिने एक्कोटा बड़ी सप्पतो खाइ लेल छोड़ैत नहि छलहुँ। मुदा ओहि दिन कहुना दू-तीन टा लाड़ि-चाड़ि क' खा सकलहुँ। की भेल अछि? कोनो विशेष समस्या ठाढ़ भ' गेल अछि की? एतेक अशान्त त' अहाँकेँ कहियो देखने नहि रही।' लक्ष्मीनारायण खूब जोर सँ नकारात्मक मुद्रा मे मूड़ी हिलौलनि। बजला– 'नहि, नहि। तेहेन कोनो बात नहि। यदि किछु अछियो त' से सभटा मैनेज भ' जेतैक। हफ्ता दस दिन मे हम सभटा ठीक क' लेब।' बाजि क' ओ जेना शून्य दिस ताक' लागल छला। मुदा बिमला उत्तर सँ संतुष्ट नहि भेल छली। हुनकर चिन्ता अपन जगह पर बनले रहलनि। सोचलनि जे चिन्तित पति के बेसी खोध-वेध करब ठीक नहि हेतनि। छोड़ि देलथिन। लक्ष्मीनारायण बेस चिन्तित बुझाइत छला। बिमला खोध-वेध क' के हुनकर चिन्ता आर बढ़ब' नहि चाहैत छली।

बिमला के ई बात बूझल छलनि जे लक्ष्मीनारायण पार्ट टाइम मे हाउसिंग कोआपरेटिवक धंधा करैत छथि। लोक के घर बनेबाक लेल जमीन दैत छथिन। कर्जा दिअबैत छथिन। एम्हर बिमला के को-आपरेटिवक अध्यक्ष बना देने रहथिन। अपने सचिव बनल रहथि। काज-उद्यम जोर-सोर सँ चलि रहल छलनि। भिनसर-साँझ लोक सभक भीड़ लागल रहैक। बड़का-बड़का लोक, मोटर-कार बला सभ आबय। लक्ष्मीनारायणक पैर छूबय। लक्ष्मीनारायण सिन्दूरक रुपैया भरि ललका ठोप लगा क' दिबान पर बैसल रहथि। कखनो क' मसनद पर ओंगठियो जाथि। लोक सामने राखल सोफा-कुर्सी सभ पर बैसय। लक्ष्मीनारायण सदिखन अपन बगल मे काठक एकटा बक्सा रखने रहथि। लोक सभ पैर छूबि क' मोटगर नोटक गड्डी हुनकर पैर पर राखि दैनि। ओ गड्डी के उठा क' काठक बक्सा मे राखि देथिन। बिमला कहियो पति के रुपैया गनैत नहि देखलनि। बड़का-बड़का इंजीनियर, डाक्टर, आइ.ए.एस. सभ एहिना कार-मोटर पर आबय। लक्ष्मीनारायणक पैर छूबय। पैर छूबिक' मोटगर नोटक गड्डी हुनकर पैर पर राखय। फेर हाथ जोड़ि क' पाछू दिस घुसकैत ड्राइंग हाल सँ बहरा जाय। बिमला के जखन क' फुर्सति होइन त' एहि खेल के देखल करथि। हुनका आश्चर्य होइन। सैह, एतेक बड़का-बड़का हाकिम सभ कोना नांगरि डोलबैत, माथ झुकौने अबैत अछि। एहि हाकिम सभक डर सँ सौंसे खर जरैत छै। मुदा से सभ हुनकर पति लग दंड-परनाम

दैत छनि। एना किए होइ छै? की बात छनि हुनकर पति मे? कखनो क' हुनका पति पर गौरव होइन। कखनहु के डरो हुअ' लागनि।

बिमला के मोन पड़ैत छनि जे किछु दिन पूर्व लक्ष्मीनारायण एक दिन जोर सँ हुनका सोर केने रहथिन– 'कत' छी यै बड़कागामवाली? आउ, एकटा समाचार सुनबैत छी।' बिमला धरफरा क' आयल रहथि। हुनका पर नजरि पड़िते लक्ष्मीनारायण कहने रहथिन– 'जनैत छी। अहाँकेँ हम कोओपरेटिवक अध्यक्ष बना देलहुँ। अहाँ अध्यक्ष आ हम सेक्रेटरी।' आ बाजि क' एक जोरदार ठहाका लगौने छलथिन। बिमला त' अबाक भ' गेल छली। हुनका बूझल छलनि जे ओ कोआपरेटिवक सदस्य छथि। हुनके नाम सँ मकानो छनि। मुदा ई अध्यक्ष! किए? हमरा सँ बिना पुछने? मुदा ओ पति द्वारा ठहाकाक संग देल समाचार पर किछु बजली नहि। किछु पुछबो नहि कयलथिन। खाली विस्मय सँ एतबे बजली– 'अँए! अध्यक्ष बना देलहुँ।' ओ पतिक चेहरा दिस ताक' लगली। लक्ष्मीनारायण ठोर पर एखनो मुसकी खेला रहल छल। बात आयल आ गेल। फेर ओ कहियो अध्यक्ष-तध्यक्षक चर्चा नहि सुनलनि। अध्यक्ष रूप मे कहियो-कोनो काजो कर' नहि पड़लनि। बिमला कहियो के सोचथि जे अध्यक्ष त' बना देलनि मुदा किछु कर' त' पड़िते नहि अछि। ओ सोचथि जे अध्यक्ष के कोनो काज नहि होइ छै की? खाली माटिक मुरुत होइ छै? एक दिन पति सँ पूछि देलथिन– 'अएँ औ! सुभाष के पापा! अध्यक्ष त' बना देलहुँ। कोनो काज कहाँ कहैत छी कर' लेल? बिना कोनो काजक ई अध्यक्ष की भेलै? एहन माटिक मुरुत अध्यक्ष नहि देखलए।' लक्ष्मीनारायण एहि बात पर जोर सँ ठहक्का लगौने रहथि। हँसैत भरि पाँज के पकड़ि क' कहलथिन– 'अरे, अहाँ हमर भगवती छी। गृहलक्ष्मी। सभटा त' अहींक परताप सँ भ' रहल अछि। अहाँकेँ काज करबाक कोन जरूरति अछि। पूरा घर त' अहीं सम्हारै छी। अहाँ छी तैं ने हम छी। अहाँक बिना त' हम बिग जीरो। काज लेल कोनो चिन्ता अहाँ नहि करू।' बिमला चुप भ' गेल रहथि मुदा चिन्ता त' चुप रहनिहार छल नहि। ओहो बनले रहल। बिमला एहिना अध्यक्ष बनल रहली आ एक दिन अकस्मात् पुलिस पकड़ि क' थाना मे ल' अनलकनि। मारिते रास कागज सभ हुनकर सोझाँ मे टेबुल पर पसारि देलकनि। ओहि कागज सभ पर हिनकर दसखत कयल रहनि 'बिमला देवी'। पुलिस ऑफिसर ओहि दसखत सभके देखा क' पूछि रहल छलनि– 'देखू, ई दसखत देखू। ई अहाँक दसखत अछि की नहि? पूरा होशो-हवास मे ई दसखत सभ केने छी ने अहाँ? अपन दसखत चीन्है छी ने? स्वीकार करै छी ने जे ई सभ दसखत अहींक छी? किछु कहबाक

अछि अहाँके?' बिमला ओहि दसखत सभ के देखि रहल छली। देख रहल छली जे एकोटा दसखत हुनकर नहि छनि। वस्तुतः ओ त' एक्कहुटा दसखत केनहि नहि छली। हुनका तखने मोन पड़लनि पतिक कहल गप। काज लेल कोनो चिन्ता अहाँ नहि करू। बिमलाक माथ एक्कहि बेर जेना झनझना उठल रहनि। आँखि मे चिनगारी सन किछु लहक' लगलनि। एकटा लहरि ऐंड़ी सँ माथ धरि पसरि गेलनि। ऐं! हम एतबो जोगरक नहि। अपने सँ अपन दसखतो नहि क' सकैत छी। हमर दसखतो स्वामिए क' देता? ईह...! बिमला मुदा लगले अपन क्रोध के सम्हारलनि। स्थितिक विषमता के गमलनि मोन के स्थिर केलनि।

फेर आस्ते सँ अपन मूड़ी उठौलनि। पुलिस ऑफिसरक मुँह दिस तकलनि। ऑफिसरक आँखि मे प्रश्न ओहिना ठाढ़ छल। कहलथिन– 'हँ, हम अपन दसखत चिन्है छी। ई सभटा दसखत हमरे छी। हम पूरा होश-हवास मे ई दसखत सभ केने छी। कानून हमरा जे सजाय देत से हम भोगबाक लेल तैयार छी।' बिमला के कोर्ट मे प्रस्तुत कयल गेल। कोर्टक आदेश सँ हुनका जेल पठा देल गेलनि।

जेल मे शान्त आ स्थिर भेल बैसल बिमला के बेर-बेर एक्केटा बात मोन मे घूमि-फीरि कं' अबैत छलनि। अध्यक्ष बनौलनि त' अध्यक्षक काज किए नहि कर' देलनि? हम त' हुनकर सहधर्मी छलियनि। सहकर्मी किए नहि बनौलनि? हमरो दसखत किए अपने क' देलथिन? एहन बेइमानी किए? की बेइमान सभठाम बेइमाने होइत अछि? बाहरो मे बेइमान आ घरो मे बेइमान। बिमला निश्चित केलनि जे पति भेटथिन त' एक बेर पुछथिन जरूर। मुदा पति त' एखनो फरारे छलथिन। ओना भेटबो करथिन त' की जबाब देथिन लक्ष्मीनारायण?

■■

छुट्टीक एक दिन

बहुत दिन पर एहन निचेनी भेटल रहय। असल मे एम्हर नबका चलनि मे छुट्टियोक दिन छुट्टी नहि रहैत छै। आफिस जाय पड़ैत अछि। मुदा आइ छुट्टीक दिन ठीके छुट्टी छल। तैं, एहि छुट्टीक उपयोग नीक जकाँ कर' चाहैत रही। बहुत दिन सँ राखल एकटा उपन्याास पढ़बा लेल उठा लेने रही। पढ़' लगलहुँ त' मोन लागि गेल। डूबल रही ओहि मे कि तखने केबाड़ पर खटखट हुअ' लागल। भरिसक कियो आयल अछि। घड़ी दिस तकलहुँ। दिनक एगारह बजैत छल। उठि क' केबाड़ खोललहुँ त' देखलहुँ जे एक नवयुवक आ तकर पाछू एक नवयुवती ठाढ़ अछि। दुनू पर एक नजरि देलहुँ त' लागल जे एकरा सभकें कतहु देखने छी। मुदा कत' देखने छी? सहसा किछु मोन नहि पड़ल। दुनू हाथ जोड़ि अभिवादन केलक। हम अपरिचयक मुद्रा मे ओकरा सभ दिस तकलहुँ।

–'जी, हम सभ एही गली मे रहैत छी। अपनेक डेराक पाँच मकानक बाद। काल्हि टी.भी. मे अपने के देखलहुँ। मैथिली कथा पर बात करैत। अंकिता कहलनि जे चलू भेंट कयल जाय।' युवक अयबाक उद्देश्य कहलक। उपन्यासक मनलग्गू प्रसंगक कारण हमरा तत्काल कोनो प्रसन्नता नहि भेल। मुदा हम दुनूक स्वागत केलहुँ। भीतर आबि बैसबाक लेल कहलियैक। दुनू आबि क' बैसि रहल। हमरा दिस तकैत रहल। हमरा फुरा नहि रहल छल जे की कहियैक। मोन मे आश्चर्य भ' रहल छल। एकटा युवक-युवती मैथिली लेखक सँ भेंट कर' आयल अछि।

अद्‌भुत गप लागल। एही क्रम मे मोन पड़ल जे एहि दुनू के तरकारी बजार मे देखने रहियैक। दुनू तरकारी सभ किनैत रहय। युवती ओल कीन' चाहैत छल। युवक मना करैत रहैक। ओल कबकब होइत छैक। सौंसे मुँह काटि देत। एहन तरकारी नहि कीनू। मुदा युवती ओल लेल जिदिआयल छल। दुनू मे तर्क होइत रहैक। से मैथिली मे होइत रहैक। हम ओही वार्तालाप सँ आकर्षित भेल रही। दुनू के अपना दिस तकैत देखि हम पुछि देलियैक– 'अहाँ सभ ओहि दिन ओल कीनलहुँ की नहि? अन्ततः की फैसला भेल?' हमर एहि प्रश्न सँ पहिने दुनू अकचकायल फेर भभाक' हँसल। युवती हँसैत बाजल– 'हँ कीनलियै की।

एकोरत्ती कबकब नहि रहै। ई अनेरे डेराइत रहथि। खूब पसिन्न पड़लनि।' हमरो हँसी लागल। कहलियै– 'मुदा असली ओल आइ-काल्हि कमे भेटैत छैक। अहाँ सभ जे ओल कीनैत रही से मद्रासी ओल छल। मद्रासी ओल एकोरत्ती कबकब नहि होइत छै। ओहि मे टोंटी नहि होइ छै। टोंटीवला देशिला ओल कहियो काल अबैत अछि बजार मे।' दुनूक आँखि मे हमर गप सुनि आश्चर्यक भाव अयलै। युवक बाजल– 'तखन त' हम सभ अनेरे झगड़ा करैत रही।' कहि क' ओ मुसकुरा क' युवती दिस तकलक। युवतियो मुसकुरायल।

–'अहाँ सभ दुनू गोटे मीलि क' तरकारी कीनै छी से नीक करैत छी। बजार मे स्त्री आ पुरुष दुनू के मीलि तरकारी कीनैत कमे देखैत छियैक। हम कहलियैक। एहि पर युवक बाजल 'से त' हम सभ घरक काज दुनू मिलिए क' करैत छी। दुनू मीलि-जुलि नहि करब त' कोना काज चलतै। हमरा त' भानसो कर' अबैये।'

–'मुदा सोहारी बेलल नहि होइ छनि। बेलतो छथि त' गोल नहि होइ छनि।' युवकक बात पर युवती बाजल। हमरा सभ एहि बात पर हँसलहुँ। युवतीक कहबाक ढंग एहन छल जे जोर सँ हँसी लागल। युवक कने अप्रतिभ सन भेल। आब हम सोच' लागल रही जे एकरा सभ सँ एखन धरि परिचयो-पात नहि भेल अछि आ एतेक गप भ' गेल। हम युवक सँ पुछलियैक– 'हिनकर नाम त' अंकिता कहलहुँ। अहाँक नाम की छी? की करैत छी अहाँ सभ? एहि गली मे कहिया अयलहुँ?' युवक बाजल– 'जी, हमर नाम अभिनव छी। हम बिजनेस मैनेजमेंट केने छी। नोकिया मोबाइल कम्पनी मे काज करैत छी। अंकिता पी.एच.डी. क' रहल छथि। अंग्रेजी साहित्य सँ एम.ए. केने छथि। एहि गली मे अयना एखन दसे दिन भेल अछि। एहि सँ पहिने पटेल नगर मे रहैत छलहुँ।' कहि क' अभिनव चुप भ' गेल। हमरा अभिनवक जबाब सँ संतोष नहि भेल। दुनूक विषय मे जनबाक उत्कंठा जेना बढ़ि गेल। कहिया दुनूक बियाह भेलै। कोना भेलै बियाह? दुनू के देखि क' ई नहि लागल जे माय-बाप बियाह करौने हेतै। हमर मोन कह' लागल जे हो ने हो ई सभ प्रेम बियाह केने अछि। मुदा हम अपना के रोकलहुँ। लगले आर बेसी खोद-बेद करब नीक नहि बुझाएल। तैं कहलियै– 'त' अहाँ सभ मैथिली कथा पर हमरा चर्चा करैत देखि भेंट कर' चल अयलहुँ। एहन इच्छा आइ-काल्हि कमे लोक के देखैत छियैक। अहाँ सभ एहि सभ मे रुचि लैत छी से जानि प्रसन्नता

भेल।' अभिनव हमर बात पर अंकिता दिस तकलक। मतलब एकर उत्तर अहीं दिअनु। अंकिता बाजल– 'असल मे साहित्य हमर विषय अछि। ओहिमे अभिरुचियो अछि। कथा, कविता सभ पढ़ैत रहैत छी। से सभ भाषाक पढ़ैत रहैत छी। अनुवादक माध्यमसँ। मैथिली सँ त' सहज लगाओ अछि। मैथिली साहित्य बेसी नहि पढ़ने छी। मुदा पढ़बाक इच्छा होइये। मैथिलीक कोनो लेखक सँ आइ धरि भेंट नहि भेल छल। टी.भी. मे अपने के मैथिलीक कथा पर बात करैत देखलहुँ। हमरा बुझल अछि अपने कथाकार छी। दू-तीन टा अहाँक कथा पढ़नहुँ छी। से मोन अछि। टी.भी. मे देखला सँ पहिने एहि डेरामे जाइत-अबैत देखने रही। भेंट करबाक इच्छा भ' गेल। अभिनव के कहलियनि। इहो लगले तैयार भ' गेला।' कहि क' अंकिता मंद-मंद मुसकिआय लागल। हमरा अंकिताक राफ-साफ गप पसिन पड़ल। बजबाक ढंग नीक लागल। भरि नजरि देखला पर सुन्दरो बुझायल। एक अद्‌भुत नेनपन ओकर चेहरा मे हुलुक-बुलुक करैत रहय। गहुमी रंग पर ओकर चमकैत दुधिया दाँत हमरा आकर्षित केलक। कने कचकचेबाक मोन भेल। कहलियै– 'त' लेखक सँ भेंट करबाक इश्यू पर अहाँ सभ लगले सहमत भ' गेलहुँ। ओल सन विवाद नहि भेल?' दुनू के फेर हँसी लगलै। दुनू के एना हँसैत देखि हमरा नीक लागल। अभिनव कहलक– 'कखनहुँ के हिनकर गप बिना विवादे के मानि लैत छियनि।' कहि क' अभिनव कने जोर सँ हँसल। अंकिता एहि गप पर कनेडेरिये अभिनव दिस तकलक। ओकर एना ताकब हमरा फेर नीक लागल। तखने हमर पत्नी नीलम कोठली मे अयली। हम हुनका देखि कहलियनि– 'आउ, बैसू कने काल। हिनका सभ सँ परिचय करा दैत छी। अपने सभक पड़ोस मे रहैत छथि। एही गली मे। पाँच मकानक बाद।' नीलम कुर्सी पर बैसि रहली। बैसि क' कहलथिन– 'ओ, अहीं सभ अयलहुँ अछि ओहि मकान मे?' अभिनव आ अंकिता उठि क' नीलम के गोड़ लगलक। हम नीलम के अभिनव आ अंकिताक परिचय देलियनि। कहलियनि– 'ई अभिनव छथि। नोकरी करैत छथि नोकिया मोबाइल मे। बिजनेस मेनेजमेंट केने छथि। ई अंकिता छथि। पी.एच.डी. क' रहल छथि। टी.भी. मे हमरा देखि क' भेंट कर' आयल छथि।' फेर अभिनव, अंकिता के नीलमक परिचय देलियनि– 'ई हमर पत्नी छथि नीलम। डी.ए.बी. मे टीचर छथि। साइंस पढ़बैत छथिन। नीलम मुसकुराइत हमरा सभ दिस तकैत बजली– 'ओ त' ई सभ लेखक सँ भेंट कर' आयल छथि। तखन त' अहाँ सभक बीच साहित्य पर

चर्चा होयत।' एहि पर हम कहलियनि– 'हँ, से त' हेबे करत। मुदा एहि चर्चा मे जँ अहाँक चाह-ताहक जोग भ' जाय त' खूबे नीक रहतै।' नीलम लगले बजली– 'हँ से हमहूँ सोचैत रही। चाह बना क' अनैत छी आ ताहोक इंतजाम करैत छी।' कहि क' ओ उठली आ किचेन मे चल गेली। हमर मोन मे फेर एहि दुनू युवक-युवतीक संबंध मे आर बेसी जनबाक उत्कंठा जोर मार' लागल। खास क' कय बियाहक प्रसंग। हमरा नहि रहल गेल। पुछिये देलियैक– 'अहाँ सभ प्रेम बियाह केने छी की?' हमर एहि अकस्मात् कयल प्रश्न पर जेना दुनू चौंकल। एक दोसरा के देखलक। फेर अभिनव उत्तर देलक– 'जी, हम सभ प्रेम विवाह केने छी। दुनू हाई स्कूल मे संगे पढ़ैत रही। ओही मे एक-दोसरा सँ परिचय भेल। एक-दोसराक प्रति आकर्षित भेलहुँ। फेर दुनू अलग भ' गेलहुँ। हम बाद मे पटना चल अयलौं एम.बी.ए. करक लेल। अंकिता मुजफ्फरपुर सँ बी.ए. केलाक बाद एम.ए. लेल पटना चल अयली। पटना मे दुनू के भेंट भ' गेल। अंकिता गर्ल्स हॉस्टल मे रहैत छली। हम एम.बी.ए. क' रहल छलहुँ। हमरा सभ के लागल जे एक-दोसराक बिना नहि रहि सकैत छी। त' निश्चय केलहुँ जे हम नोकरी ज्वाइन क' लेब त' दुनू बियाह क' लेब। अंकिता पी.एच.डी. करैत रहती।' हमरा एहि उत्तर पर खूब प्रसन्नता भेल। एहि दुआरे नहि जे हमर सोचल गप मीलि गेल। प्रसन्नता एहि दुआरे भेल जे ई दुनू प्रेमी एतेक सुन्दर मैथिली बजैत अछि। मैथिली लेखक सँ भेंट कर' आयल अछि। हम दुनू प्रेमी के स्नेह सँ देख' लगलहुँ। आब ई दुनू हमरा आर सुन्दर लागि रहल छल। गहूमी रंगक राधा सन अंकिता आ सांवलिया बिहारी अभिनवक जोड़ी हमर आँखि आ हृदय के जेना तृप्त कर' लागल। एहि तृप्तिक आस्वाद लैत हमर मैथिली लेखक फुड़फुड़ा क' ठाढ़ भेल। मोन पड़ल कथाकार राजमोहन झाक गप। मैथिली मे अंग्रेजी सन 'आइ लव यू' सरलता सँ नहि कहल जा सकैत छै। तें मैथिली मे नायक-नायिका कें प्रेमक अभिव्यक्ति लेल हिन्दिए वा अंग्रेजीक आश्रय लेब' पड़ैत छै। हमरा ई बात मोन पड़ल त' पेट मे हौंड़' लागल। नहि रहल गेल। पुछि देलियै, 'अहाँ सभ कने माफ करब। एकटा बात पुछै छी। अहाँ सभ एक-दोसरा कें 'आइ लव यू' मैथिली मे कोना कहलियैक? मैथिलीक एक लेखक के कहब छनि जे मैथिली मे प्रेम करब बहुत कठिन छैक।' जबाब अंकिता देलक। ओ सभ हमर बात पर पहिने खुलि क' हँसल। फेर अंकिता कहलक– 'सर, प्रेम मे भाषा के नहि एतेक पकड़बाक

चाही। हमरा लगैत अछि 'आइ लव यू' के अनुवाद करबाक कोन काज छैक? 'आइ लव यू' रह' देल जाय अपना जगह। मुदा मैथिली मे प्रेम करब कठिन नहि छै। दुनू जँ मैथिली भाषी अछि त' डेटिंग मे सेहो स्वाभाविक रूपें मैथिलीए मे गप करत।' अंकिताक एहि बात पर अभिनव बाजल– 'अंकिता, सवाल एत' प्रेमक भाषाक नहि छै। भाषा मे प्रेमक छै। साहित्य मे प्रेमालाप के छै। मुदा जाहि भाषा मे एतेक रास लोक गाथा छै। लोक गीत छै। विद्यापति सन कवि छै। ओहि मे प्रेमक आख्यान आइ कठिन लागि रहल छै त' से विचारणीय बात अवश्य छै। हमरा जनैत मामला कल्पनाशीलताक छै।' अभिनव आ अंकिताक गप के हम ध्यान सँ सुनि रहल छलहुँ। किछु-किछु बुझियो रहल छलहुँ। ओकर सभक बात हमरा अपना भीतर तकबाक लेल विवश क' रहल छल। अकस्मात् अंकिता हमरा सँ पुछलक– 'अच्छा सर, मैथिली मे लव स्टोरी पढ़बाक लेल कोन उपन्यास पढ़ल जाय? अहाँ कोनो उपन्यासक नाम कहू। ओ किताब कत' भेटत?' सत्त पूछू त' अंकिताक एहि निश्छल आ अबोध जिज्ञासा सँ हम एकदम हड़बड़ा गेलहुँ। मोन पाड़' लगलहुँ जे कोन उपन्यासक नाम कहियै। तत्काल मुदा कोनो उपन्यासक नाम मोन नहि पड़ल। कहलियै– 'अंकिता, अहाँ जेहन उपन्यासक बात क' रहल छी तेहेन उपन्यासक नाम तत्काल हमरा मोन नहि पड़ि रहल अछि। भ' सकैत अछि जे ओ उपन्यास हम नहि पढ़ने होइ। लेकिन हम एकर खोज करब आ तखन कहब।' हमर बात पर अभिनव अंकिता के कहलकै– 'मैथिली मे एक सँ एक उपन्यास हेतैक। अहाँ खाली लव स्टोरीवला मैथिली उपन्यास किए पढ़' चाहैत छी? कोनो दोसर उपन्यास पढ़ू।'

अंकिता के ई बात कहि क' अभिनव फेर हमरा दिस घुमल। बाजल– 'सर, मैथिलीक त' कोनो मार्केट नहि छै, तखन अपने खाली मैथिलीए मे किए लिखैत छी? हिन्दियो मे लीखि सकैत छी।' हमरा अभिनवक सहज प्रश्न बहुत भारी बुझायल। से एहि दुआरे जे कखनहुँ के अपना के सही ठहरायब कठिन होइत छै। बहुत रास बात कह' पड़ि सकैत छै। एहन बात सभ जे प्रासंगिक ओ सार्थक नहियो भ' सकैत अछि। तें हम सोचलहुँ जे अभिनवक सहज प्रश्नक सोझ उत्तर देल जाय। कहलियै.'मैथिली मे लिखनाइ आसान लगैत अछि। लगैत अछि जे अपन भाषा मे हम अपना के बेसी नीक जकाँ अभिव्यक्त क' सकैत छी। सोचै छी मैथिली मे, तें लिखै छी मैथिली मे। जहाँ धरि मार्केटक गप छै से त' कारोबारी बात छियै। एहि लेल फूट सँ प्रयासक जरूरति छै। व्यवसायी बुद्धि वला पूँजीपतिक जरूरत छै मैथिली के।' हमर बात

पर फेर अभिनव कहलक– 'लेकिन सर, मैथिली अपन भाषा रहि कहाँ गेल छै। जखन माइयो अपन धिया-पूता सँ मैथिली मे गप नहि करै छै त' ओ अपन भाषा कोना हेतै? पढ़ाइ-लिखाइ सँ ल' क' नोकरी-चाकरी धरि आ बजार-हाट सँ ल' क' टी.भी. सिनेमा धरि सभठाम हिन्दी-अंग्रजी पसरल छै। जखन जीवन मे मैथिलीक स्पेस एतेक कम भ' रहल छै तखन ओकरा प्रति ममत्व त' घटिये जेतै ने। अपनापनक त' सवाले ने छै। आब त' मैथिल के मैथिली पढ़लो नहि होइ छै। बाजि भले लिअय।' हमरा लागल जे अभिनव बाजि त' रहल अछि ठीके, मैथिली जखन जीवन मे नहि रहतै त' साहित्य रचब आ पढ़ब दुनू पर जरब पड़बे करतै। हमरा इहो लागल जे अपन भूमिक लोक संग संवादक जेकरा खाँहिस रहतै से मैथिली मे लिखब कोना छोड़ि सकैत अछि? मुदा एहि पैघ सामाजिक संकट सँ त्राणक उपाय त' सोचहि पड़तै। से बिना एहि सँ फाँड़ बान्हि क' जुझने कोना हेतै। हम मोने-मोन अभिनव के धन्यवाद देलियैक जे ओ एहि सभ बात पर सोचैत अछि आ हमरो सोचबाक लेल प्रेरित केलक अछि। हम कहलियैक– 'अभिनव, अहाँ बात सभ कहैत छी ठीक। ई एक सामाजिक संकटक रूप मे अवश्य उपस्थित भ' गेल अछि। मुदा एहि संकटक बात जखन हुअ' लागल अछि त' एहि सँ लड़बाक उपक्रम सेहो शुरू हेबे करतै। मनुक्ख अपना कें नष्ट नहि हुअ' देत ने।' 'कोन संकट? कोन संकटक गप क' रहल छी अहाँ सभ? साहित्यिक चर्चा मे ई कोन संकट उपस्थित भ' गेल?' पुछैत नीलम तखने चाह आ भूजल मखानक प्लेट ल' क' प्रवेश केलनि। सभ सरंजाम के टेबुल पर राखि कुर्सी पर बैसि हमरा सभक मुँह ताक' लगली। हम कहलियनि. 'मैथिलीक संकट। समाज मे मैथिली भाषा पर आयल संकट पर हम सभ गप क' रहल छलहुँ। लोक के मैथिली पढ़ले ने होइ छै तखन मैथिली कथा-कविता कोना पढ़त? पोथी-पत्रिका कोना बिकेतै? एही पर गप भ' रहल छलै।' नीलम मखानक प्लेट अंकिता आ अभिनव दिस बढ़बैत कहलनि– 'से पढ़ै जोकर रहतै त' लोक पढ़िये लेतै ने। हमरा जनैत मैथिली मे रहैत अछि की जे लोक पढ़त? मैथिलीक साहित्यकार के एक-दोसराक़ अदगोइ-बदगोइ सँ फुर्सति होइन तखन ने पढ़बा जोगर रचना करता। अहाँ सभ एक दिसाहे गप क' रहल छी।' हमरा भेल जे नीलम फोड़लनि बम। आब हिनकर जबाब देनाइ आर मुस्किल। बात के ने एकदम नकारल जा सकैत अछि आ ने एकदम स्वीकारल। मुदा कतौ बीच मे छै अवश्य। से कत' छै? हम सोच' लगलहुँ। एही क्रम

मे चाह हाथ मे ल' पीब' लगलहुँ। अंकिता मुदा मोर्चा सम्हारलक। बाजल– 'आँटी, बात त' अहाँ किछु ठीके कहि रहल छियै। ई समस्या छै। मुदा एहनो बात नहि छै जे मैथिली मे किछु पढ़बा जोकर नहि छै। हम बेसी नहि पढ़ने छी। मुदा जँ पूछब त' हमहूँ किछु किताबक नाम कहि सकैत छी।' अंकिताक बात पर हँसली नीलम। हँसैत कहलथिन– 'हँ यै, से त' हमहूँ बुझैत छियै। मुदा ई मैथिलीक साहित्यकार सभ से बात नहि कहता। ई सभ अपन पोथीक नाम छोड़ि अनकर नीको पोथीक नाम नहि लेता। जखन यैह सभ मैथिली के एना अबडेरने छथिन त' अनका कोन गर्ज पड़लै अछि? खाली संकट-संकट जपला सँ की होइवला छै? की ई बात सत्य नहि छै जे हरिमोहन झाक साहित्य पढ़बाक लेल लोक मैथिली पढ़ब सिखलक। की एखनो हरिमोहन झाक साहित्य सभ सँ बेसी नहि बिकाइत अछि। किए? अहाँ सभ एहि बात पर बहस किए नहि करैत छी? हमरा लगैत अछि जे ओहि बहस सँ बहुत बात निकलत जे वर्तमान लेल उपयोगी हैत।' नीलमक बात पर अभिनव बाजल– 'आँटी, ई बात अहाँ ठीक कहैत छी जे हरिमोहन बाबू के पढ़बाक लेल लोक मैथिली सिखलक। आइयो हुनक साहित्य लोक खूब पढ़ैत अछि। मुदा ईहो बात सत्य थिक जे आइ समाज बहुत आगू बढ़ि गेल अछि। ओ आब हरिमोहन बाबूक जमानाक नहि रहल। अहाँ आइ हुनकर साहित्य पढ़ि एतबे बुझि सकैत छी जे समाज ओहि समय मे केहेन छल। जँ हँसी लागय त' ओहि समाज पर हँसियो सकैत छी।' हमरा ई बहस नीक लागि रहल छलय। ईहो बुझा रहल छल जे पूरा बहस मे मैथिलीक एक लेखकक रूप मे हम पार्टी बनि रहल छी। ई बात हमरा साकांक्ष केलक मुदा तत्काल हम मौन रहब उचित बुझलहुँ। हमरा आश्चर्य नहि भेल जे अभिनवक उत्तर अंकिता देलक। ओ बाजल– 'मुदा एहि क्रम मे एकटा बात अहाँ बिसरि रहल छी अभिनव। साहित्यक मूल्य के खाली समाजशास्त्रक नपना सँ नहि नापल जा सकैत अछि। समाज अध्ययन लेल साहित्य अहाँकें काज आबि सकैत अछि। मुदा साहित्यक एक साहित्यिक मूल्य सेहो होइ छै। साहित्यक वैह सौन्दर्य पक्ष हमरा साहित्य पढ़बा लेल विवश करैत अछि। हमरा लगैत अछि जे हरिमोहन बाबूक साहित्यक जे सामाजिक सौन्दर्य छै से आइयो हुनका प्रासंगिक बनौने छनि।' अंकिताक बात पर नीलम कहलथिन. 'हमरा लगैत अछि अंकिता, असल बात ई छै जे हरिमोहन झाक साहित्य अथवा यात्रीजीक साहित्य आइयो लोक खूब एहि कारणे पढ़ैत अछि जे ओहि मे आइयो कलात्मकताक संग सामाजिक चिन्ता छै।

सामाजिक चिन्तन छै। एक व्यापक सामाजिक सरोकार छै। ई बात सत्य जे आब ने त' बुच्चीदाइक जमाना छै आ ने पारोक। आइ त' अंकिताक जमाना छै। मुदा अंकिता के बुझबाक लेल बुच्चीदाइ आ कि पारो के बुझब-जानब जरूरी छै। जाहि चेतनाक संग ओ उपन्यास सभ रचल गेलै से अपन समाजक संग गंहीर जुड़ाओ ओ लगाओक बिना सम्भव नहि छैक। लगैये जे ओ जुड़ाओ आ लगाओ जेना आइ कम भ' गेलैक अछि। लगैत अछि जे मैथिल समाज आइ आगू बढ़ि गेल छै आ मैथिली साहित्य पछुआ रहल अछि त' एकर जड़ि मे सैह कारण छैक।' हमरा लागल जे नीलम सोझे-सोझ यथार्थ गप सभ बाजि रहली अछि। हमरा फेर ईहो लागल जे एहि सभक मादे सेहो बहुत रास बात कहल जा सकैत छैक। मुदा से अन्ततः नीलमेक बात के ने उचित ठहरा दिअय। हम मुदा बाजब जरूरी बुझलहुँ– 'अहाँ सभक बहुत किछु बात हमरा ठीक लागि रहल अछि। जेँ कि हम मैथिलीक लेखक छी तैं बेसी लेखकेक सीमा हमरा देखार पड़ैत अछि। हमरा होइत अछि जे सभ किछुक अछैत जेना एक जड़ता सौंसे व्याप्त भ' गेल छै। अहाँ सभ हरिमोहन बाबूक साहित्यक चर्चा करैत छलहुँ। ओ अपन उपन्यास कन्यादान मे ई कामना व्यक्त केने छथि जे शारीरिक ओ मानसिक स्तर पर समान स्थितिक युवक-युवती यदि स्वेच्छापूर्वक विवाह करैत अछि तँ यैह आदर्श विवाह थिक, एहि सँ समाज बदलत। से भ' रहल अछि। समाज बदलि रहल अछि मुदा से साहित्य मे जेना अभिव्यक्त हेबाक चाही से नहि भ' रहल छैक। ई बात त' अवश्य विचारणीय छै।' एहि बात पर नीलम मुसकुरेली आ बजली– 'चलू ई बात अहाँ लेखक भ' क' स्वीकार त' केलहुँ। हम अहाँक बात मे ईहो जोड़' चाहब जे समान स्थितिक युवक-युवती आब अपन पसित्र सँ बियाहे टा नहि क' रहल छथि, जाति आ धर्मक बन्धन के सेहो तोड़ि रहल छथि ओ सभ नब समाज बना रहल छथि। मुदा ओहि नब समाजक लोक जेना मैथिली के बारने छथि तहिना मैथिली सेहो हुनका सभ लेल नो एंट्रीक बोर्ड लगौने अछि। ओहि नब समाजक हलचल मैथिली साहित्य मे कतहु देखाइ नहि देत।' नीलमक एहि बात पर हमरा लागल जे अंकिता आ अभिनवक आँखि मे किछु चमकलै अछि। दुनूक ठोर पर एक मुसकान सेहो छिटकल। हमर मोनक भीतर चलैत संघर्ष फेर हमर ठोर पर आयल। अंकिता आ अभिनव सँ पुछलहुं. 'अहाँ सभ प्रेम बियाह केने छी से त' बुझलहुँ। मुदा हमरा ईहो लगैत अछि जे अहाँ सभ अन्तर्जातीय विवाह सेहो केने छी। दुनू एक जातिक नहि छी। की?' हमर प्रश्नक उत्तर अंकिता

देलक– 'जी, अपने ठीक सोचि रहल छी। अहाँ लोकनिक समाज मे जेकरा फौरवार्ड आ बैकवार्ड कहै छै ताहि हिसाबें हमरा दुनू गोटा मे एक फौरवार्ड छी आ एक बैकवार्ड।' कहि क' अंकिता चुप्प भ' गेल। हमर मोनक साँप फेर अपन फन के हिलौलक। भेल जे ई बात बुझी कि दुनू मे के फौरवार्ड अछि आ के बैकवार्ड। मुदा तखने ई विचार आयल जे नहि, ई पुछब एहि दम्पतिक गरिमाक विरुद्ध होयत। एकरा सभक लग त' बैकवार्ड-फौरवार्डक किलाबन्दी टुटि गेल छै। खाली एतबे पुछलियैक– 'अहाँ दुनूक परिवारक एहि बियाह मे सहमति भेटल की नहि? ओ सभ एकर विरोधो केलनि?'

हमर प्रश्नक उत्तर अभिनव देलक– 'नहि, सहमतिक त' प्रश्ने नहि छल। किएक त' एक परिवार के धनक हानि भेलनि आ दोसर कें जातिक हानि। एहि दुनू लौस के बाद विरोध त' स्वभाविक अछि। हम सभ कोर्ट मे जा क' बियाह केलहुं।' हम देखलहुं नीलम बहुत ध्यान सँ अभिनव आ अंकिता कें सुनि रहल छली। हम ईहो देखलहुं जे ओ ओहि दुनू नव दम्पत्ति के स्नेह भरल आँखि सँ देखियो रहल छली। हमरा लोकनिक चाह आब समाप्त छल। अंकिता आ अभिनव आब एक-दोसरा दिस देखय लागल। हमरा भेल जे ओ सभ आब बिदा हेबाक उपक्रम क' रहल अछि। अंकिता नीलम के कहलकनि– 'आंटी, आब हम सभ चलैत छी। लगैत अछि जे आइ छुट्टीक दिन खूब सार्थक रहल। खूब मोन लगलै। भेंट त' कर' आयल रही मैथिली लेखक सँ मुदा जा रहल छी कका-काकी सँ भेंट क' कय।' हमरा अंकिताक बात नीक लागल। देखलहुं जे नीलमक आँखि मे नोर हुलुक-बुलुक क' रहल छनि। मुदा ओ अपना कें सम्हारलनि। कहलथिन– 'मुदा खाली चाह पर छुट्टीक दिन कोना हेतै? रवि के त' अहाँ सभ के अवश्ये छुट्टी रहैत हैत। अगिला रवि के अहाँ दुनू बेकती काकीक हाथक बनाओल खेनाइ खाउ।' एहि बात पर अंकिता मुसकुरायल आ हमरा दिस ताकि क' कहलक– 'सर, खेनाइ मे आंटी टेंटीबला देशिला ओलक तीमन बनबथि त' नीक रहतै। नै? देखै छियनि जे अभिनव के कबकब लगैत छनि की नहि।' अंकिताक गप पर अभिनव संग हमहूँ सभ हँसलहुं। हँसैत अंकिता के कहलियैक– 'नहि, नहि। हिनका एकोरत्ती कबकब नहि लगतनि। ओल कबकब झगड़ाहु लोक के लगै छै। अभिनव झगड़ाहु कहाँ छथि।' एहि बात पर फेर हम सभ हँसलहुँ। अभिनव आ अंकिता जाइत काल हमरा आ नीलम के प्रणाम केलक आ केबाड़ खोलि चल गेल।

■■

गामक कातक हाइवे

एहि बेर गाम अयलहुँ त' गोला के नहि देखलियैक। गोला भरि टोलक कुकूर रहय। टोल भरिक लोकक आत्मीय। टोलक सभ लोक के लागै जे ओ हमरे कुकूर छी। पटना सँ जखने गाम पहुँची आ दरबज्जा पर आबी, पता नहि कत' सँ गोला दौड़ैत चल आबय। पैर लग नुड़िआय लागय। फेर लगे मे बैसि रहय। हमर मुँह दिस तकैत। हमरा सभ बेर ओकरा एना तकैत देखि हँसी लागि जाय। बिना किछु लेने ओ एत' सँ टघरत नहि। हम बैग सँ बिस्कुट आ कि सनपापड़ी, जे किछु संग मे रहय ओकरा खाइ लेल दियैक। निचेन सँ खा क' ओ फेर चल जाय। से गोला आइ दौड़ल नहि आयल। आन धिया-पूता सभ आयल मुदा गोला नहि आयल। कनी कालक बाद हम एम्हर-ओम्हर ताक' लगलहुँ। मुदा गोलाक कत्तौ पता नहि। हमरा एना तकैत देखि मुनमुन बूझि गेला जे हम ककरा ताकि रहल छी। कहलनि– 'गोला के तकैत छियैक? गोला त' मरि गेल।' हम अकबका गेलहुँ जेना।

–'ऐं, कोना मरि गेल? केहेन बढ़ियाँ त' छल। हृष्ट-पुष्ट। की भेलै?' हम लगले पुछि क' मुनमुन दिस ताक' लगलहुँ। देखलहुँ हुनकर चेहरा पर उदासीक एक घनगर छाहरि एम्हर सँ ओम्हर चल गेल। ओ दुखी स्वर मे कहलनि– 'अरे, ई एन.एच. जे ने करय। सौंसे गामक कुकुर मरल जा रहल अछि। गाम-गामक कुकुर मरल जा रहल अछि। गोला सेहो एन.एच. पर पिचड़ा-पिचड़ा भ' गेल! हमर मुँहसँ अनायास निकलि पड़ल– 'ऐं, पिचड़ा-पिचड़ा भ' गेल। हे भगवान! की भेलै?' मुनमुन कह' लगला– 'कतहु सँ एकटा गीदड़ पड़ा के टोल पर चल आयल रहै। गीदड़ के खिहारैत गोला एन.एच. पर चल गेल। गीदड़ त' पड़ा गेल मुदा गोला दुमहला बसक पहिया तर मे आबि गेल। ठामहि जै सियाराम। ई सय किलोमीटरक रफ्तार मे ब्रेको त' नहि मारल होइ छै।' हम मुनमुन सँ गोलाक एहि तरहें मरबाक समाचार सुनि गह्वरित भ' गेल रही। ओकर चेहरा मोन पड़' लागल। ओकर नेनपन सँ जुआनी मोन पड़ल। नेना मे केहेन खुरलुच्ची रहय ओ। ओकर माय रहै ओरी। बच्चू भाइ दीदीगाम सँ ओकर माय के अनने रहथि। हरदम ओरीक सेवा मे लागल। अपना जे खाइ ले भेटनि ओहि मे सँ ओरी के खुआबथि जरुर। छोट खूंट के ओरी जवानी मे एकदम अगरायल चलय। ओरी भरि जीवन

हमरे सभक ओहिठाम रहल। ओकरे बेटा रहै गोला। ऐनमेन बाघ सन के कल्ला रहै। की मजाल जे कोनो अनजान लोक ओकर सोझाँ सँ दरबज्जा टपि जायत। ककरो आइ धरि कटलकै नहि, मुदा गुम्हरै तेना क' जे लोक के डर भ' जाइ। गोलाक दुखद मृत्यु हमरा पता नहि किए बेसी संवेदित क' देलक। हमरा लाग' लागल जे ई स्वच्छन्द, बिन चमौटीक कुकूरक प्रजाति आब नष्ट भ' जायत। गामक रखबार, टोलक रखबार नहि बचत आब। आब रहत त' खाली चमौटी लागल, जंजीर मे बान्हल, विदेशी नस्लक कुकूर सभ। जे कोनो एके घर मे, एक्के स्वामीक तर मे बास करत। ओही स्वामीक सुख-दुख मे शरीक हैत। खाली ओकरे ताक-हेर करत। भरि गाम आ भरि टोल सँ अपनैती कर'बला कुकूर सभ आब एन. एच. पर मरबे करत। ओकरा सभ के बुझले नहि छै जे दुनिया त' बदलि गेल छै। गामक कात द' क' जाइत ई ऊँचगर आ चाकर राजमार्ग गामक सड़क नहि छियै। एहि पर गेनिहार लोक के हरदम अगुताइ रहै छै। जल्दी सँ जल्दी बेसी सँ बेसी दूरी नपबाक। एहिठामक सत्य छियै गति। गति नहि त' दुर्गति। एहि गतिक तीव्रता मे सबारी सभ सेहो बदलि गेल अछि। आब त' हर्र द' बस आओत आ फर्र द' जत' पहुँचबाक अछि, पहुँचि जाउ। इजोरिया राति मे बैलगाड़ी कि टायरगाड़ी पर कोसक कोस नहुँ-नहुँ चलबाक सुख आब कतेक लोकक स्मृति मे बँचल अछि? बैलगाड़ी कि टायरगाड़ी, सबारी कि महफा-खड़खड़िया जे बचल अछि तकर फोटो खींचि क' फेसबुक कि यू ट्यूब पर लोड क' देल जाय। आब'बला पीढ़ी ओकर फोटो देखि क' सोचत जे एहनो सबारी रहय जाहि पर लोक एकठाम सँ दोसरठाम जाइत रहय। बड़ कि पीपड़क गाछ तर सुस्ताइत रहय। आमक गाछी मे जिराइत रहय। मुदा आब ने ओ नगरी ने ओ ठाम। आब त' गाम सँ चारि कि.मी. पहिनहि जँ सावधान भ' उतरबाक लेल मोस्तैद नहि भ' जायब त' दू-चारि कि.मी. आगू धरि बस खींचने चल जायत। गामक चेन्ह सभ त' नष्ट भैये गेल। आब त' गाम छोटछीन हरियर साइनबोर्ड मे सिमटि गेल अछि।

पहिने हमर गामक चेन्ह रहय बड़क गाछ। गाम दिस बढ़ैत रस्ता मे दूरे सँ गाछ नजरि आबय। आश्वस्त भ' जाइ जे गाम आबि गेल। बुझू त' बड़क गाछ गामक परिचय छल। बेस चाकर, विशाल गाछ जानि नहि कहिया सँ एहिना चतरल रहय। ठाढ़ छल रस्ताक कात मे। ओहीठाम सँ हमर टोल दिस रस्ता फूटैत छल। पहिने त' दुनू रस्ता माटिये के रहय। फेर एकटा पर कंक्रीट आ अलकतरा चढ़ल। दोसर पर पजेबा। कंक्रीट आ अलकतरा बला रस्ता फोर लेन भ' गेल।

आसमान सन ऊँच। जकर आगू सभ किछु छोट भ' गेल। पुनेशर बाबा छोट भ' गेला। दुर्गा मंदिर छोट भ' गेल। घर-आंगन छोट-छोट। बीच मे जेठैरयत सन एन. एच.। घमंड मे चूर। जत' कनियो काल लेल ठाढ़ नहि रहि सकैत छी। पलो भरि लेल बिलमि नहि सकै छी। जँ बिलमब वा चौंकल नहि रहब त' लाश मे बदलि जायब।

मुनमुन गामक आर गप सभ कह' लागल रहथि। कुकूरक बाद गप बकरी पर चल आयल रहय। कहलनि– 'सकली मायक बकरी एक दिन एन.एच. पर चल गेलै। बकरी के पकड़ै लेल बुढ़िया सेहो एन. एच. पर चढ़ल। बकरी सड़क पर एम्हर-ओम्हर मेमियाइत दौड़ल फिरै। कहुना क' बकरी के पकड़ि घूम' लागल कि दन्तार ट्रक आबि क' चपेटि देलकै। बकरी त' एकदम पिचड़ा भ' गेल मुदा सकली माय बचि गेल। खाली दहिना पैरक हड्डी टुटलै। ट्रक ओकरा झटका द' पड़ा गेल। बुढ़िया प्लास्टर चढ़ा क' घर मे पड़ल अछि। एहन बुढ़ारी मे काहि काटि रहल अछि। बकरीक असरा रहै से खतम भेलै।' हमरा भेल जे ठीके काहि कटैत हेतै बुढ़िया। कखनो जा क' देखि अयबैक। बेचारी एहन बुढ़ारी मे महाग कष्ट मे पड़ि गेल अछि। हम मुनमुन के पुछलियनि– 'ऐं हौ, बड़क गाछ के केना हटौलकै? एहन विशाल गाछ। एतेक गहींर धरि ओकर सीड़ सभ धँसल रहै।' हमर मोन मे नेनपने सँ ओ बड़क गाछ जीवित छल। गाछ जेना धड़कैत रहय धक्क-धक्क। से गाछ आब नहि अछि। ओकर कत्तौ नामो-निशान नहि छै। पछिला बेर आयल रही गाम त' देखने रहियैक सड़कक कात मे बहुत नीचा खधिया मे पड़ल अछि। आब कोनो टा हरियरी बचल नहि रहै ओहि हरियर-कचोर गाछक देह मे। कोनो रस नहि। सुखायल काठ सन टांग चिआरने पड़ल रहय चितंग। मुनमुन कहलनि– 'एह, दूइए दिन मे काटि-कूटि क' फेकि देलकै। मशीन जे ने करय। जड़ि सँ उखाड़ि देलकै।' हमरा लागल बड़क गाछक संग हमरो जड़ि उखाड़ि रहल अछि मशीन।

मोन पड़ल जहिया पीचो रोड नहि रहै। कच्ची सड़क रहै। बड़क गाछ पूरा चतरल रहय। सीड़ सभ जागल रहै। लोक सभ ओहि पर बैसि क' सुस्ताय। हमरा सभ ओकरे छाँह तर खेलाइ। झुटका सभ गेंटि क' ओहि पर निशाना लगाबी। झगड़ा-दन करी। ओकरे छाँह तर कोनो दुरगमनियाँ कनियाँक महफा राखल जाइ। कहार सभ अपन देहक घाम सुखाबय। बहीन सभ जखन सासुर जाथि त' बड़क गाछ धरि कनिते आबथि। हम सभ बैलगाड़ी कि टायरगाड़ीक पाछू-पाछू घर सँ बड़क गाछ धरि आबी। सभ बेर बिदागरी मे बड़क गाछ लागय जेना उदास भ' गेल अछि। होइत छल जेना बहीन सभ के पुछैत होइन– 'फेर कहिया आयब

फल्लों?' हमरा सभ बड़क गाछक छाहरि मे ठाढ़ भ' सासुर जाइत बहीन सभक सबारी के तावत् देखैत रही जाबत धरि देखायब बन्द नहि भ' जाय। मुदा आब ओ गाछ नहि अछि। ओ छाँह नहि अछि। आब त' अछि नेशनल हाइवे। एहि हाइवे पर खुजल आकास मे बस पकड़ै लेल ठाढ़ रहू। रौद रहय वा बरखा हुअय रस्ता कात मे कत्तहु छाहरि नहि भेटत।

अपन स्मृति मे धड़कैत ओहि बड़क गाछक मादे सोचैत-विचारैत हमरा लागल जे ओ गाछ एहिना नष्ट नहि भेल अछि। ओकर मृत्यु अकस्मात् नहि भेल। खाली मशीनक झटका सँ नहि भेल। वस्तुतः पहिने गाछक आत्मविश्वास के मारल गेल। जे गाछ गौरव सँ अकास दिस तकैत रहैत छल ओहि गौरव के नष्ट कयल गेल। से बहुत सुनियोजित रुप सँ। पहिने ओकर बगल मे माटि के पहाड़ ठाढ़ भेल। ओकरा समतल कयल गेल। ईंटा बिछाओल गेल। फेर कंक्रीट। राशि-राशि के कंक्रीट। फेर अलकतरा। तप्पत, गरम-गरम, लस्सेदार अलकतरा ओहि पर ढारल गेल। एहि पहाड़, ईंटा, कंक्रीट, अलकतराक पकड़ आ अकड़ सँ बड़क गाछ अवांछित आ अजनबी होइत गेल। ओकर ऊँचाई के धीरे-धीरे छोट कयल गेल। ओकर विशालता सिकुड़ि गेल। ओ तुच्छ सन लाग' लागल। ओकरा लग एकदम अनचिन्हार, विपरीत आ विरोधी वातावरण निर्मित भ' गेल छल। एहना मे बड़क गाछक जिजीविषा सकचुन्नी होइत गेल। मृत्यु सँ पूर्वे ओ बुझू त' मृतप्राय भ' गेल।

ई जे एन.एच. होइत अछि तकरा ककरो परबाहि नहि होइत छैक। एकरा एक्के बातक परबाहि होइ छै जे के बड़का-बड़का बाहन सभक मालिक अछि। मालिक सभ के कोनो असुविधा नहि होइ। मुदा एहि मालिक सभ के हमर गाम सँ कोन मतलब छै? ओकरा सभ के एहि बात सँ कोन मतलब छै जे माल लदल ओकर भारी वाहन सँ हमर घर-आँगन कोना थरथर कँपैए। आसमर्द करैत चल जाइत गाड़ीक चित्कार सँ कोना बच्चा सभ चेहा उठैए। भागल चल जाइत एहि गाड़ी तर पीचा क' मरैए गामक लोक। मुनमुन कहैत रहथि जे– 'एहि एन.एच. क निर्माण मे हजारो-हजार गाछ सभ काटि देल गेल। लोक सभ विस्थापित भेल। मुआवजा त' भेटलैक मुदा ओ परिवेश फेर कत' पाबी।' एहि एन.एच.क योजना मे सड़कक कात मे गाछ-वृक्ष लगायब नहि रहैत अछि। बीच मे लगबैत अछि खाली करबीर आ कनैलक गाछ। से सुन्दरता लेल भले ही हो, छाया लेल त' नहिएँ होइ छै। रस्ताक कात महक गाछ जे माटि के पकड़ने रहैत अछि, लोक के छाया द' सकैत अछि तकर कोनो प्रयोजन एन.एच. के नहि रहै छै। ई एन.एच.

बनौनिहार सभ हजारक हजार गाछ के काटि त' सकैत अछि, एक्को टा गाछ रोपि नहि सकैत अछि। जहिया सँ ई हाइवे बनल अछि, हमर गाम मे गरमी बहुत बढ़ि गेल अछि। डीजल आ पेट्रोलक धुआँ से भिन्ने तबाह केने रहैत अछि। चिड़े-चुनमुनी अलोपित भेल जा रहल अछि। पहिने गाम माने होइ छल शहर सँ फराक जग्गह। जत' गरमियो मे आराम सँ लोक रहैत छल। हिमालयक नजदीक एहि भूमिक लोक गरमियो मे ओढ़ना ओढ़िते रहय। मुदा आब कि गया आ पटना आ कि गाम। तापमान मे खाली एक-दू डिग्रीक अन्तर। वैह अलकतरा, वैह सिमेंट आ कंक्रीट-बालु। वैह गरमी आ गरम हवा।

साँझ मे सकली माय के देखबा लेल बिदा भेलहुँ त' रस्ता मे फेकन कामति सँ भेंट भ' गेल। फेकन पहिने रिक्शा चलबैत रहथि। मुदा आब रिक्शा चलायब बन्द छनि। हुनकर हाल-चाल पुछलियनि। कहलनि जे– 'जहिया सँ एन. एच. भेल, रिक्शा खतम भेल। आब कहाँ भेटत रिक्शा। गाम मे साइकिलो नहि भेटत। आब त' जकरा ओकाति छै से टेम्पो निकालने अछि। बिना डीजल बला कोनो सबारी नहि भेटत। जकरा मोटरक ओकाति छै से मोटर पर चढ़ैत अछि। गाम मे किराया पर बोलेरो खूब भेटैत छै। जे बोलेरो पर नहि चढ़ि पबैए से टेम्पो किराया करैए।' फेकन सँ गप करैत सकली मायक घर धरि पहुँचि गेलहुँ। सकली माय घरक बरंडा पर पड़ल रहय। प्लास्टर चढ़ल छलै। ओकर नजदीक जा कय पुछलियै. 'की सकली माय, केहेन मोन छौ? बड़ कष्ट भ' गेलौ तोरा?' सकली माय पहिने त' हमरा चिन्हबाक कोशिश केलक फेर चीन्हि के बाजल– 'की हाल रहत बौआ! जीबै छी। लछमिनिया बकरी चल गेल। सोचने रही एहि बेर बिआएत त' पठरु सभ के नीक जकाँ पोसब। दू टा पाइ हाथ पर हैत। से असरा भगवान छीनि लेलनि।' हमरा भेल जे भगवान के हमरालोकनि कहिया धरि दोष दैत रहबनि? सकली मायक ओहिठाम सँ घुरलहुँ त' राति भ' गेल रहय। अन्हार पसरि गेल छल। बिजली नहि आयल रहय। टार्चक रोशनी मे रस्ता पार करैत दरबज्जा पर अयलहुं त' भक्क सँ रोशनी आबि गेल। बिजली जरि गेल। मुनमुन कहलनि जे आब आयल अछि त' भरि राति रहत। हम आश्वस्त भेलहुं जे एहन गरमी मे नीन्न कामहि नहि हैत। गाम आब गाम नहि रहल मुदा तैयो गाम त' अछिये। ई एन.एच. चाहैए जे हमरा सँ हमर गाम छीनि लिअय। मुदा हम अपन गाम कोना छीन' दिऔ?

■■

एना भ' क' कियो

ई ओहि समय के बात छी जहिया भारत मे उदारवाद नहि आयल रहै। टी.भी. श्वेत-श्याम रहय। रेडियो मुदा टू इन वन शुरू भ' गेल छलै। रेडियो मे लोक बिनाका गीत माला सुनय आ अमीन सयानीक आवाजक नकल करय। हँ, देश मे इमरजेन्सीक बाद जे चुनाव भेलै ताहि मे इन्दिरा गान्धी चुनाव हारि गेल रहथि। राति मे बारह-एक बजे जखन हुनक हारब सुनिश्चित भ' गेल रहय त' रेडियो पर गीत बाजल रहै– 'झुमका गिरा रे बरेली के बजार मे।' लोक बूझू त' नाचि उठल रहय। ओकर बादक समय मुदा बेसी दिन टीकि नहि सकलै। लगले फेर चुनाव भेलै आ सोरहो भ' गेल रहै जे– 'मैडम इज कमिंग।' ठीक-ठीक ई बात ओही समयक छी। भेल ई रहै जे संजयक बड़का हाकिम पटना सँ आयल रहथि। ओहि समय मे संजय बक्सर मे पदस्थापित छल। हाकिम पी.डब्लू.डी के डाकबंगला मे टिकल रहथि। तहिया संजय सरकारी नोकरी शुरूहे केने छल। कालेज छोड़नहि रहय, कम्पीटीशन मे बैसल आ सेलेक्ट भ' गेल। तैं कहू त' ओहि समय धरि ओकर दुद्धा दाँत सेहो नहि टूटल रहै। कालेजिया मोन बेर-बेर नोकरीक छान्ह-पगहा तोड़बा पर बिर्त्त रहल करै। ओना गुलामीक जुआ ओकर कान्ह पर चेन्ह बनायब शुरू क' देने छल मुदा घट्ठर पड़बा मे एखन देरी छलै। से संजय पटना सँ आयल अपन डिविजनल हाकिम चौधरी साहेबक स्वागत-सत्कार मे लागल रहय। एकटा इंस्पेक्टर के त' डाकबंगला मे डेपुटेशने क' देने रहै।

चौधरी साहेब पचपन सँ बेसी बएसक लोक रहथि। सेवानिवृत्तिक आब करीब तीनिए बरख बाँकी रहनि। तहिया अठाबन बरख मे रिटायर भ' जाय लोक। दोहरा शरीर रहनि हुनकर। गाल एकदम फुलल-फुलल ऐनमेन भाकुर माछ सन। माथपर केशो कमेसम बचल रहनि। कत्तौ-कत्तौ छेहर सन घास जकाँ चतरल। रंग हुनकर आबनूसी कहल जा सकैत अछि। गोलायम मुँह, दाढ़ी-मोछ सफाचट। पोछल-पाछल सन। हुनका बहुते अजगुत हिस्सक सभ रहनि। जखन कखनो टूर मे जाइत छला त' अपन तकिया संगे लेने जाइत छला। हुनका दोसर तकिया पर नीन्न नहि होइन। भिनसर मे पाँच टा लहसुन खाइ छला। अंकुरायल बदाम आ मूँग जलखै करै छला। चाह ओ कहियो ने पीलनि। चाहक विरुद्ध हुनका

लग बहुतरास तर्क सभ रहनि। भोजन आ जलखै सभक लिस्ट पहिनहि स्थानीय अफसर के भेटि जाइ। लिस्ट मे टाइम आ मेनू सभटा लिखल रहै। संजय के सेहो लिस्ट पहिनहि भेटि गेल रहैक। सभ इंतजाम रखने छल ओ डाकबंगला मे। इंसपेक्टर त' मोस्तैद रहबे करय।

त' जाहि समयक हम बात कहि रहल छी तहिया जमाना बोरोलीनक रहै। बोरोप्लस ओना आबि गेल रहय मुदा सभठाम नहि भेटै। फेयर एण्ड लवलीक जमाना एखन दूर छल। चौधरी साहेब बोरोलीनक जबर्दस्त आशिक रहथि। हरदम बोरोलीनक दू-चारिटा ट्यूब हुनका लग रहबे करनि। ओ दर्जनक हिसाब सँ खरीद करथि। हुनका केना ने केना ई बात मोन मे बैसि गेल रहनि जे बोरोलीन लगेला सँ साल-दू साल मे लोक गोर भ' जाइत अछि। सुन्दर लाग' लगैत अछि। आब ई गोर हेबाक नशा कोनो आइये त' नहि चढ़लै अछि। आब खाली एतबे भेलैए जे लोकक मनोविज्ञान बूझि-गमि क' व्यापारी सभ राशि-राशि के प्रोडक्ट बनाब' लागल अछि। सुन्दर-सुन्दर, गोर-नार युवक-युवतीक फोटो देखा क' लोक के पोल्हाब' लागल अछि। विज्ञापन मे देखबैत रहै छै जे क्रीम लगेला सँ केना चेहरा परहक सियाह झिल्ली उतरि जाइ छै आ चेहरा गोर भुभुक्का सन दमक' लगैत छै। से देखि क' लोक सभ लागल रहैत अछि गोर बनबाक फिराक मे। असल मे ई गोर बनबाक बिजो चौधरी साहेब के तहिया सँ नहि चढ़ब शुरू भेलनि जहिया हुनकर आफिस मे सातटा लेडी सुपरवाइजर के एक्के संग पोस्टिंग भेलनि। सभ धड़ाधड़ ज्वाइन कर' लागल। पुरखाही आफिस मे त' बूझू पीह-पाह मचि गेल। पूरा वातावरणे जेना बदलि गेलै। आइधरि एकोटा स्त्री ओहि आफिस मे काज नहि केने रहथि। से अकस्मात् सातटा युवती सभ सँ पूरा आफिस गनगना गेल। आन पुरुष सहकर्मी सभ आब सम्हरि क' बैस' लगला। ओरिया क' बाज' लगला। कतेक के अपन परिवारक सदस्य छोड़ि कोनो आन स्त्री सँ कहियो नहिये जकाँ गप-सप भेल छलनि। से सभ कोनो ने कोनो लाथ सँ गप करबा लेल उत्सुक भ' उठला। आफिसक लोक सभ आब अपन पहिरन-ओढ़न दिस ध्यान राख' लागल रहथि। साबुन-तेलक खर्च बढ़ि गेलनि। आफिस मे लेडी सुपरभाइजर सभ कें काज आवंटित कयल गेल। शनैः शनैः आफिस नब तरीका सँ पुनः व्यवस्थित भ' गेल। सुपरभाइजर सभ विभागीय रिपोर्ट, शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम, कोनो चिट्ठीक प्रारुप पर अनुमोदन लेल साहेबक चैम्बर मे आब' लगली। चौधरी साहेब सेहो अपन

रंग-रुप, कपड़ा-लत्ता पर पहिने सँ आर बेसिए ध्यान राख' लगला। चेहरा पर बोरोलीन बेसी रगड़' लगला।

वस्तुतः ई बोरोलीन लगेबाक बिजो हुनका एक अधीनस्थ अधिकारी शर्माजी लगा देने रहथिन। शर्माजी ओही आफिस मे प्रशासी पदाधिकारीक पद पर रहथि। हुनकर आइ.ए.एस. मे प्रमोशन के समय आबि गेल रहनि। एहि लेल कन्फीडेन्सियल रिपोर्ट (सी.आर.) मे लगातार छह साल धरि 'उत्कृष्ट' (आउटस्टैडिंग) लिखायल रहब जरुरी होइ छै। तैं ओ साहेब के दरबार मे लागि गेल रहथि। ओ चौधरी साहेब सँ एखन लगातार दू साल धरि 'उत्कृष्ट' लिखबा सकैत छला। ओ सदिखन साहेब के घेरने रहथि। हरदम हुनकर सेवा मे तत्पर। दूनू मे बएसक बेसी अन्तर नहि रहनि। सात-आठ बरखक जेठ रहथिन चौधरी साहेब। शर्माजी मखौलिया स्वभावक लोक रहथि। हरदम हास्य-व्यंग्य आ शृंगारिक गप सभ हुनका नीक लगनि। बजबो करथि बेस छवि-छटा सँ। से शर्माजी बूझि गेल छला जे साहेब के सुन्दर लगबाक बहुत सेहन्ता छनि। तैं ओ हुनका मे सुन्दर बनबाक इच्छा के आर गहींर सँ जगेबाक ब्योंत मे लागि गेल छला। जखन कोनो मौका भेटनि साहेबक पुरुषोचित सौन्दर्यक बखान मे लागि जाथि। कहथिन– 'सर, ई जुलुम बात अछि जे एतेक बएसो भेला पर अहाँक शरीरक त्वचा एकोरत्ती घोकचल नहि अछि। केना एहन देह-दशा मेनटेन अछि से नहि जानि। एकदम जवान सन लगै छी अहाँ। एहन पुरुष के देखि क' कियो स्त्री आकर्षित भ' जायत। देखितो छी हम जे जखने कियो स्त्री अहाँकें देखैत अछि त' टकटकी लागि जाइत छै। हमरा त' देखि क' ईर्ष्या हुअ' लगैत अछि।' चौधरी साहेब के ई बात सभ सुन' मे त' लागनि नीक मुदा शर्माजी पर फुसियाही के तामस देखाबथि– 'ऐह, शर्माजी, केहेन बात करै छी? आब की हमरा दिस आकर्षित हैत स्त्री सभ। बेटा जवान भ' गेल अछि। नोकरी कर' लागल अछि। बेटियोक बियाह-दान भ' गेल। कनिएँ दिन मे नाति-नातिन हैत। बुझलहुँ, अहाँ अनेरे हमरा पर लागल रहै छी।' एहि पर शर्माजी कने हँसि क' पूरा गम्भीर भ' जाथि। फेर खूब गम्भीरता सँ साहेब के कहथिन– 'नहि सर, हम फूसि नहि कहैत छी। अहाँके कतहु फूसि कही। मौका लागत त' कोनो स्त्री सँ सत्त बात अहाँ अपने सुनि लेब। बएस भेल अछि जरूर मुदा बएस कोनो प्रभाव नहि छोड़लक अछि अहाँ पर। खाली अहाँ कने अपना पर ध्यान दिऔ। चेहरा पर क्रीम सभ लगाउ। गर्मी मे नारिकेरक तेल आ जाड़ मे कडू तेल सँ देहक मालिश करू। एकटा

चपरासी के अहाँक ओहिठाम डेपुटेशन क' दैत छी। ओकरा बढ़िया मालिश कर' अबैत छै। मालिश क' देत। एक सँ एक क्रीम सभ भेटै छै। सुनै छी बोरोलीन सँ चमक अबै छै। बोरोलीन लगौला सँ चेहरा लाल भ' जाइत अछि। गोर सन के लाग' लगैत छै।' शर्माजीक बात पर हँसला चौधरी साहेब। से जोर सँ हँसला। फेर कहलथिन– 'यौ शर्माजी, कथी लेल ठकै छी हमरा। बोरोलीन की करतै? हमर कारी रंग के कोना गोर क' देतै? कने-मने चिक्कन-चुनमुन क' देत। सैह...बहुत भेल। छोड़ू ई गप-सप। दोसर गप कहियौ।' शर्माजी मुदा मानैबला कहाँ रहथि। ओ जनै छला जे साहेब बाजथु किछु मुदा हुनकर गप आ सुझाओ असरि क' रहल छनि। तेकर कारणो छल। साहेब के आब उदासी कटैत रहनि। बेटा-बेटी कियो घर मे रहनि नहि। मेमसाहेब रहथिन बड़ जब्बर। सदिखन अपन हुकुम चलब'बाली। कनियाँ संग कहियो कनेक्शन जुटलनि नहि। ओ शुरुहे सँ साहेब के पसिन्न नहि केलथिन। कहियो दूनू बेकती सहज नहि भेला। जाबत बेटा-बेटी रहनि संग ताबत् कखनहुँ के खुशीक वातावरण भ' जाय। खास क' बेटी रहनि बड़-चंचल आ हँसमुख। बाप सँ सिनेहो रहै खूब। ओ बापक बड़ खोज-खबरि राखय। मुदा सासुर चल गेलाक कारणे आब से बेसी सम्भव नहि रहि गेल रहै। तैं साहेब के घर बूझू त' काट' दौड़नि। आब ओहि जमाना मे त' फेसबुको नहि आयल रहै। आइ के जमाना रहितै त' दूनू बेकती फूट-फूट फेसबुक मे लागल रहितथि। गप-सप नहि होइतनि ताहि सँ की? झगड़ा-दन त' नहि होइतनि। साहेब के घर मे समय काटब पहाड़ होइत गेलनि। एहना मे आफिस आब हुनका लेल मनोरंजनक स्थान भ' गेल छल। घरक उदासी के ओ आफिस मे आबि क' दूर करथि। चाहथि जे आफिस टाइम कखनहुँ खतमे नहि हुअय। सात बजे साँझ सँ पहिने कहियो आफिस नहि छोड़थि। आब एहि लेल सभ कर्मचारी जत्ते खौंझाय। मुदा सातो बजेक बाद त' हुनका घर जाइये पड़नि। त' आब ओ घर मे खाली अपन चेहरा-मोहरा, देह-दशा सुधारबा पर ध्यान दिअ' लगला। ओहि समय बाबा रामदेवक जमाना सेहो नहि आयल रहै। तैं अनुलोम-विलोम, कपालभाती सभ त' नहि मुदा आन व्यायाम सभ जे बूझल रहनि, से सभ कर' लगला। शरीर के फिट रखबाक लेल व्यायाम आ चिक्कन-चुनमुन लेल बोरोलीन। एहि सभ पर मेमसाहेब जत्ते हरहर-खट्खट् करथिन साहेबक मोन तत्ते आर रमल गेलनि।

त' शर्माजी फेर कह' लागल रहथिन– 'सर, अपने कहै छियै त' ठीके

कहैत हेबै। मुदा हमर बात के ध्यान रखबै। बोरोलीन ठीके असरि करै छै। अच्छा सर छोड़ू ई गप-सप। रूपक सिनेमा मे मुमताजक फिल्म लगलैए। 'दो रास्ते'। चलल जाय चुपचाप देखि आबी मैटिनी शो। आफिस मे कहि दैत छियै जे मिटिंग मे जा रहल छी हम सभ। फेर आफिस नहि आयब।' एहि बात पर साहेब प्रसन्न भ' गेल रहथि। कहलथिन– 'ठीक छै, चलू। सुनै छी बढ़िया सिनेमा छै।'

साहेब आ शर्माजी एहिना चुपचाप मैटिनी शो सिनेमा देखल करथि। आफिस मे लोक बूझय जे मिटिंगमे गेलाहे। कोनो संस्थाक इन्सपेक्शन मे छथि, विभागीय काज क' रहलाहे, मुदा दूनू गाँधी मैदान लगक रूपक सिनेमा मे मैटिनी शो देखैत रहथि। कहियो-कहियो घूरि क' फेर आफिस चल आबथि। एक-डेढ़ घंटा फेर आफिस मे बैसि क' तखन डेरा लेल निकलथि।

जेना होइ छै, कोनो बात छपित नहि रहै छै। जेना सिनेमा देखबाक बात आफिसक लोक सभ बूझि गेल तहिना साहेबक जवान आ सुन्दर बनबाक सेहन्ता मादे सेहो बुझबा मे भांगठ नहि रहलै। तेकर चर्चा-बर्चा आ कौचर्ज सेहो हुअ' लागल।

–'हे बुझलहुँ? साहेब ठीके जवान सन के लाग' लगला अछि। तै पर सँ जँ हुनका ई गप कहबनि त' खूब प्रसन्न होइ छथिन।' कियो अपन मत राखय त' दोसर ओकरा चपेटो दै।

–'ईह, अनेरे अहाँ सभ खाली साहेब के प्रसन्न करबा लेल ई बात बजै छी। आब की ओ जवान लगता? रिटायर हेबाक बएस भेलनि, बूढ़ो मे छह दाँत! ईह!' तै पर सभ एहेन लोक के लुलुआबो लागइ।

–'नहि, नहि, ठीके सुन्दर लगैत छथिन। अहाँ खाली हुनकर बएस देखैत छी। बएस किछु नहि होइ छै। बएसे की भेलनि अछि? पचपने त' छियनि। एहि बएस मे त' कत्ते के धिया-पूता होइ छै।' कहि क' लोक सभ ठहक्का लगाबय। लेडी सुपरभाइजर सभक उपस्थिति सँ एहि तरहक गप मे आर गति आबि गेलैक। शुरू मे सुपरभाइजर सभ के एहि गप-सप मे लाज होइ मुदा बाद मे धीरे-धीरे ओहो सभ एहि मे सम्मिलित हुअ' लागल। आफिसक पूरा वातावरण जखन एही तरहक भेल चल गेलैक त' ओ सभ कत्ते दिन एहि सँ फराक रहि सकैत छल। मुदा लेडी सुपरभाइजर सभक बीच सेहो मत विभिन्नता रहय। किछु गोटे मानैत रहय जे साहेब जवान आ सुन्दर लगबाक सनक मे कने बेसिए आबि गेल छथि। ई जँ एक

स्वाभाविक इच्छा अछि त' से व्यक्तिगते स्तरक बात छी। व्यक्तिगते स्तर धरि एकरा सीमित रहबाक चाही। पूरा आफिस के एकरा मे समेटि लेब आ अधीनस्थ सभ सँ जवान आ पुरूखाह लगबाक प्रशंसा सुनब नीक आचरण नहि मानल जायत। मुदा बेसी लेडी सुपरभाइजर एहि मत के छली जे जखन स्त्रीगण लोकनि बएसो भेला पर जवान आ सुन्दर लगबाक लेल उपक्रम करैत छथि त' पुरुष किए नहि क' सकैत अछि? आ सुन्दरता लेल प्रशंसा सुनबाक लोभ त' सभ के होइते छैक। साहेबो के होइ छनि त' कोन बेजाए बात। एहि सँ ओ प्रसन्न होइ छथि त' हमरा सभ के प्रशंसा करबा मे कोन हर्ज? एवं प्रकारें सम्पूर्ण आफिस मे साहेब आ हुनकर सेहन्ता चकभाउर दिअ' लागल रहय। सभ एहि अवसर के ताक मे रह' लागल जे कोनो ने कोनो लाथेँ साहेब के प्रशंसा करबाक अवसर भेटय।

एक दिन चारिटा लेडी सुपरभाइजर गोल बना क' साहेबक चैम्बर मे गेली। सभ के एक संग देखि क' चौधरी साहेबक चेहरा एकदम भकरार भ' गेलनि। खुशी चेहरा पर फाड़ि क' बाहर निकल' लागल मुदा ओ तेकरा कने रोकलनि आ गम्भीर बनल रहबाक कोशिश कर' लगला। गम्भीरे बनल बजला 'की बात छै? आइ चारि गोटा संगे अयलहुँ अछि? कोनो डेलीगेशन छै की? कोनो डिमान्ड? कोनो शिकाइत अछि?' कहि क' ओ लेडी सुपरभाइजर सभ दिस ताक' लगला। ओहि मे सँ एक पूनम मुसकिआइत उत्तर देलनि, 'नहि सर! कोनो डेलीगेशन नहि। आइ हमरा सभ के भेल जे अपन-अपन काज ल' क' संगे चली। काजो हेतै आ गपो-सप करब।' चौधरी साहेब के लेडी सुपरभाइजर सभक सामूहिक उपस्थिति मोन मे हुलास भर' लगलनि। एम्हर एहि बएस मे स्त्रीगण सभ के देखब हुनका कने बेसिए नीक लाग' लागल रहनि। जे हिस्सक सभ पहिने नहि रहनि से सभ बढ़ियाँ सँ लागि रहल छलनि। ई हुनकर सौभाग्य रहनि जे ओ आफिसक बौस छला आ हुनका अधीन लेडी सुपरभाइजर सभ पदस्थापित छल। ओ पदक गरिमा आ बएसक गम्भीरता दूनू के बचा क' रखबाक चक्कर मे डाइरेक्ट आँखि गड़ा क' त' नहि देखथि मुदा एक-दू सेकेण्ड धरि कनडेरिए अवश्य रूप माधुरीक पान क' लेथि। ओ एहि कोशिश मे रहल करथि जे ककरो सँ सोंझा-सोंझी आँखि नहि मीलि पाबय। फल ई होइत छल जे ओ कनेकाल देखि क' एम्हर-ओम्हर ताक' लागथि। आइयो सैह सभ कर्मकाण्ड केलाक बाद पुछलथिन. 'तँ अहाँ सभ पहिने गप करब कि काज करब?' पुछि के फेर पूनम दिस कनडेरिए

तकलथिन। एहि पर दोसर सुपरभाइजर सुजाता बजली— 'दूनू संगे हेतै सर। कोनो गम्भीर काज सभ नहि छै। किछु रिपोर्ट छै से पहिने देखि लिअउ। ओना सभटा ठीक छै। जिला सँ आयल रिपोर्ट सभ के कम्पाइल कएल गेलैए बस्स...।' चौधरी साहेबक आगू मे रिपोर्ट सभ के राखि देल गेल। साहेब सभ रिपोर्ट पर बेरा-बेरी एक नजरि द' कए दसखत करैत गेला। कने काल सभ साहेब दिस तकैत रहल। फेर तेसर सुपरभाइजर नंदिनी एहि अवसर के बिना गामौने बजली— 'सर सभ के त' एकदम अभ्यास भ' गेल छनि। एक्के नजरि मे सभटा पढ़ि लैत छथिन। कोनो गड़बड़ी सरक नजरि सँ बचिए नहि सकैत अछि।' एहि पर मुसकियाक' नंदिनी दिस तकलनि चौधरी साहेब। कहलथिन— 'से ठीके, आब त' ई सभ काज करैत बूढ़ भ' गेलहुँ। ई रिपोर्ट सभ कियो पढ़ै छै थोड़े। सेक्रेटेरिएट मे जा क' सभटा फेका जायत। घूरियो के ने कियो तकतै। मुदा हरेक मासक दस तारीख धरि अवश्ये पहुँचि जेबाक चाही। नहि पहुँचतै त' स्पष्टीकरण पूछि देत।' कहि क' ठहक्का लगौलनि साहेब। ठहक्का लगबैत काल सभ के भरि नजरि देखि लेलनि। देखलनि सभ हिनके दिस टकटकी लगा क' देखि रहल अछि। मोने-मोन खुशी भेलनि। तखने पूनम एक-एकटा शब्द के चिबा-चिबाक' बाज' लगली— 'सर, एकटा बात कही। अपने बिगड़बै त' नहि? हम सभ एम्हर ग'र क' रहल छी जे अपनेक चेहराक चमक जेना लगातार बढ़ि रहल अछि। चेहरो एकदम ललौन भेल जा रहलए। बएस लगैए जेना पाछू दिस के भागि रहल अछि।' कहि क' चुप भ' गेली पूनम। ई सभ बजैत कोढ़ कने कँपैत रहलनि। पता नहि बिगड़िए ने जाथि। चौधरी साहेबक आँखि सिकुड़ि क' छोट भ' गेल रहनि। गालो घोकचि गेलनि। चेहरा गम्भीर सन के लाग' लगलनि। पूनम दिस ताकि क' बजला— 'पूनम, एकटा बात पूछू?' पूनमक धड़कन तेज भ' गेल रहनि। आनो सभ गुम्मी लधने रहय। मुदा पूनम बजली— 'पूछू सर।' साहेब पुछलथिन— 'अहाँ कविता करै छी की? अहाँ जरूर कविता करैत हैब।' पूछि क' साहेब मुसकी संग पूनमक चेहरा पर आँखि के स्थिर क' लेलनि। ई नीक अवसर परि लागि गेल रहनि हुनका। सभ के मुदा जान मे जान अयलै। स्वाभाविक छल जे पूनम एहि प्रश्न सँ लजा गेल रहथि। अपना के सम्हारैत बजली— 'नहि सर, हम सत्ते कहै छी। कविताक बात नहि छियै। बएस अहाँक एकदम पाछू दिस जा रहलए। एकरो सभ सँ पूछि लिऔ।' एहि बात पर सुजाता आब आगू बढ़ि क' मोर्चा सम्हारलनि। बजली— 'सर, पूनम

कविता-तविता नहि करैए। एकदम सत्त बाजि रहल अछि। हम सभ परोक्षो मे गप करैत रहैत छी जे साहेब एकदम जवान लगैत छथिन।' चौधरी साहेब एहि बात पर हो...हो...क' हँसि पड़ला। एत्ते जोर सँ हँसला जे बाहर बैसल चपरासी परदा हटा के तकलक आ फेर परदा के ठीक सँ सरिया क' चल गेल। चौधरी साहेब हँसैते सुजाता के कहलथिन— 'ओह, सुजाता। अहाँ त' कथे कहि देलहुँ। अरे, अहाँ सभ एहिना झूठ बजै छी। हम की आब लाल होयब आ जवान होयब? ई सभ बात ओहिना हमरा खुशीक लेल अहाँ सभ कहैत रहैत छी।' मुदा लेडी सुपरभाइजर सभ के बूझल रहनि जे साहेब ई बात उपरे मोने बजैत छथि। वस्तुतः प्रशंसा सूनि क' त' हुनकर मोन मे लड्डू फूटि रहल छनि। ओहि सुपरभाइजर सभ मे जे सभ सँ सुन्दर रहथि विनीता से मधुर स्वरें बजली— 'नहि सर, हम सभ झुट्ठे किएक कहब? झूठ बजला सँ की भेटत हमरा सभ के। अपने के नहि लगैए जे गोराइ के संग कोना चमक सेहो आबि रहलए चेहरा मे? बाजि क' विनीता मुसकिआइत साहेब दिस ताक' लगली। सभक आँखि साहेबक चेहरा पर जमि गेल रहैक। साहेबक सोझा-सोझी कियो स्त्री एना प्रशंसा नहि केने रहनि। से एक नहि चारि गोटे हुनकर प्रशंसा क' रहल छलनि। ओ आइ भीतर सँ एकदम उत्फुल भ' गेल रहथि। मन मयूर नाच' लागल रहनि। चेहरा पर एक अजगुत गौरवक भाव आबि गेलनि। साहेब नहू-नहू बाज' लगला— 'लगैत त' अछि हमरो। साँझ मे जखन डेरा लगक बजार मे निकलैत छी त' स्त्रीगण सभ हमरा दिस ताक' लगैए। अपना मे फुसुर-फुसुर गप कर' लगैए। इशारा सँ हमरा दिस आंगुर देखा क' आपस मे बतिआइये। ई सभ एना किए भ' रहल अछि से हम बूझि नहि पाबि रहल छी।' बाजि क' चौधरी साहेब लेडी सुपरभाइजर सभक दिस अपन दूनू आँखि के तेना ने फिरौलनि जे चेहरे देखि क' सभक मोनक भाव बूझि जाथि। ओ जान' चाहैत रहथि जे हुनकर रहस्योद्‌घाटन पर ई सभ की सोचि रहल छथि। मुदा ओ सभ अपन फनक उस्ताद रहथि। भीतरका भाव के नुकेबाक कला मे सिद्धहस्त। हुनका सभक चेहरा सँ लगैत छल जे ओ सभ साहेबक बात के शत-प्रतिशत सही मानि रहल छथि। जबाब देबाक लेल मुदा आन सभ पूनम दिस तकलनि। जेना कहि रहल होथि जे एकर जबाब अहीं दिअनु। ठीके, पूनम तखन साहेब के कह' लगलथिन— 'से सर, अहाँ किए नहि बूझि पाबि रहल छियैक? ई त' एकदम सोझ गप छै। अहाँक पुरुखाह चमकैत आकृति सँ कियो स्त्री आकर्षित भ' सकैत अछि।

अहाँक व्यक्तित्व भीड़ मे एकदम अलग देखाइ दैत अछि। तै पर सँ अहाँ मे दिन-दिन एक अजीब प्रकारक ईश्वरीय आभा पसरि रहल अछि।' चौधरी साहेब पूनमक एहि उक्ति पर चौंकि उठल रहथि। हुनका ईश्वरीय आभाक अर्थ जेना ठीक सँ नहि लगलनि। पुछलथिन— 'ऐं, ईश्वरीय आभा? ई की भेलै? से हमरा मे कोना पसरि रहल अछि?' साहेब प्रश्न क' देलथिन त' ओ कनेकाल लेल पराभव मे पड़ली। फेर लगले सम्हरि गेली। बजली— 'सर, भगवान कृष्ण के त' अपने देखिए रहल छियनि। पिण्डश्याम रंग के छथि। हुनकर सम्पूर्ण देह मे मुदा केहेन अजीब प्रकारक आकर्षण छनि। एकटा रोशनी सन छिटकैत रहैत छनि जेना हुनकर काया सँ। सैह त' ईश्वरीय आभा छियैक। अलौकिक रोशनी। डिभाइन लाइट। सैह लाइट अहाँक देह सँ छिटक' लागल अछि आइ-काल्हि।' कहि क' पूनम अपन संगी सभ दिस तकलनि। सभक चेहरा पर पूनमक प्रति प्रशंसाक भाव रहैक। सभ के भीतर मे अही संग ईर्ष्याक भाव सेहो उत्पन्न भेल रहैक जे ई त' आइ बाजी मारि लेलक। मुदा आब कएल की जा सकैत छल? पूनम त' ठीके बाजी मारि लेने रहथि। बाजी खाली एहि दुआरे नहि मारि लेने छली जे ओ आन सभ सँ अगुआ गेल रहथि, बाजी एहि दुआरे मारि लेने रहथि जे साहेब के ई बात आइ धरि कियो नहि कहने रहनि। एहन बात जे साहेबक रोम-रोम के पुलकित क' देलकनि। हुनकर समस्त कुंठा के जेना खुजल आकाश भेटि गेलनि। एही क्षण सँ हुनका लाग' लगलनि जे ओ कृष्ण भ' गेल छथि। कृष्णे सन हुनका मे ईश्वरीय आभा आबि गेल छनि। हुनकर आँखि मुना गेलनि। कनीकाल मे आँखि खुजलनि त' ओ चारू लेडी सुपरभाइजर के अपना दिस तकैत देखलनि। ओ पूनम के कहलथिन— 'की बात अहाँ कहि देलहुँ पूनम। केहेन बात कहि देलहुँ। हम त' आब अपना भीतर गोलोक के बसल देखि रहल छी।' कहि क' साहेब फेर आँखि मूनि लेलनि। आब चारू गोटे के एहिठाम बैसल रहब अनसोहाँत लाग' लगलनि। कागज-पत्तर समेटलनि आ सभ चैम्बर सँ बाहर निकलि गेली।

एहि घटनाक बाद भेल ई जे साहेब आफिस मे बैसल-बैसल कहुखन के आँखि मूनि लेल करथि। कियो जँ चैम्बर मे आबय त' हुनका आँखि मुनने बैसल देखय। देखि क' चल जाय। यदि ककरो जरूरी काज रहै त' बैसि जाय। साहेबक आँखि खुजबाक प्रतीक्षा करय। प्रतीक्षा करय जे आँखि खुजतनि त' गप करब। चौधरी साहेबक जखन आँखि खुजनि त' ओ आगू मे बैसल लोक के अजीब नजरि

सँ देख' लागथि जेना पहिले-पहिल देखि रहल होथि। तखन एहन स्वर मे बाज' लागथि जेना हुनकर आवाज कतहु दूर सँ आबि रहल हो।

–'अरे, बुझलहुँ। एहन सुन्दर गोपी सभ के त' हम आइ धरि देखनहि नहि छलहुँ। सभ के सभ सोलह सँ बीस बरखक। चेहरा सँ एहन रोशनी छिटकैत जे आँखि चोन्हरा जाय। सभ हमर चारूकात नाचल घुरय। पता नहि कत' सँ हमर हाथ मे एकटा बाँसुरी आबि गेल। हम लगलहुँ ओकरा बजब'। बाँसुरीक धुनि पर त' ओ गोपी सभ एकदम उन्मत्त भ' गेल।' कहि क' साहेब फेर चुप भ' जाथि। बड़ीकाल धरि चुप...। लोक सभ के त' एहन बात सुनि किछु ने फुराइ। कहुना जे काज रहै से क' कए चैम्बर सँ निकलि जाय। होइ जे साहेब आब एकदम बतहपन दिस जा रहल छथि। संजय मुदा चौधरी साहेबक मादे ई गप-सप पहिने नहि सुनने रहय। से सभ सुनलक आ बुझलक बाद मे। लोक सभ खूब विन्यास सँ सभ कथा कहै। संजय के लगै जे कहनिहार सेहो खूब रस ल' रहल अछि। ओकरा नीक नहि लागै साहेबक मादे एहन कौचर्ज सभ! ओ क्षुब्ध होइत रहय सुनिक'। सुनौनिहार के टोकाटोकी कर' लागय। त' ओहि दिन जखन संजय डाकबंगला पहुँचल जत' चौधरी साहेब ठहरल रहथि त' हुनका बाहरे मे बरंडा पर बैसल देखलक। साहेबक आगूं मे तीनटा कुर्सी राखल छल। एकटा पर ओ ओंगठि क' सूतल जकाँ रहथि। कुर्सी सभ बेंत के रहय। साहेब आँखि मुनने रहथि। संजय हुनका प्रणाम केलक। ओ किछु जबाब नहि देलथिन। ओहिना आँखि मुननहि रहला। संजय एक कुर्सी पर बैसि गेल। साहेबक आँखि खुजबाक प्रतीक्षा कर' लागल। किछु काल मे जखन चौधरी साहेबक आँखि खुजलनि त' ओ संजय के देखलनि– 'ओ संजय, कखन अयलहुँ?' साहेब पुछलथिन।

–'थोड़े काल पहिने अयलहुँ सर। अपने थाकि गेल हेबै पटना सँ अयबा मे। रस्ता कतहु-कतहु बड़ खराब भ' गेल छै।' संजय बहुत सम्हरि-सम्हरि क' बाजल। साहेब मुसकुराय लागल छलथिन। फेर कहलथिन– 'नहि थकबै किए? देह एकदम तन्दुरूस्त अछि। असल मे कने समाधि मे चल गेल रही। आइ-काल्हि बेसीकाल बैसले-बैसल समाधि लागि जाइये।' कहि क' साहेब चुप भ' गेला। संजय के सेहो नहि किछु फुड़लै जे की बाजय एहि बात पर। ओकरा भेलै जे साहेब त' तुरन्ते शुरू भ' गेला। आब की करब? ओ किछु नहि बाजल। सोचलक जे किछु उत्तर नहि देला सँ साहेब कहीं दोसर गप कर' लागथि। विभागीय काज सभक मादे पुछथि। मुदा

साहेब त' अपन धुन मे रहथि। फेर कह' लगलथिन– 'बुझलहुँ संजय। समाधि मे रंग-विरंगक परिधान मे गोपी सभ देखाइये। एह, एहेन सुन्दर गोपी सभ जे तराटक लागि जाय। तैपर ओ सभ हमर चारूकात नाच कर' लगैत अछि। ओह, ओ कंचन कायाबाली युवती सभ कें देखि क' हम कृष्ण रूप मे बदलि जाइ छी। अहाँके आश्चर्य लागत मुदा हम सत्त कहै छी केना ने केना हमर सम्पूर्ण देह कृष्ण भ' जाइत अछि।' संजय के आब साहेबक मुँह सँ ई सभ गप प्रत्यक्ष सुनैत लाज हुअ' लागल रहै। एक चौबीस-पच्चीस बरखक नवयुवक अपना सँ दोबर बएसक सीनियर अधिकारी सँ एहन गप सुनि संकोचे नीचा दिस ताक' लागल रहय। जाहि अधिकारीक कर्मठता, अनुशासन ओ कठोरताक सम्बन्ध मे ओ एहि सेवा मे प्रवेश करितहि बहुत किछु सुनने रहय से आइ ओकरा समक्ष एहन रूप मे प्रस्तुत छथि से देखि ओ एकदम क्षुब्ध भ' गेल। ओकरा भेलै जे साहेबक ई स्थिति जँ आर किछु दिन रहतनि त' ओ नोकरी करबा जोग नहि रहि जेता। ओ एकदम पितायल जा रहल छल। सोच' लागल रहय जे लोक अपना के एना किए बना लैत अछि। अपन कएल-धयल एना किए नष्ट कर' लगैत अछि? जेकरा एतेक आदर-सम्मान भेटल रहै छै से कोना अपना के एतेक नीचा खसा सकैत अछि? सभ लाज-धाख, मर्यादा बिसरि क' अपना के हँसीक पात्र बना लेबा मे की भेटैत छैक? ओकरा नहि रहल गेलै। सोचलक जे हेतै से देखल जेतैक। आइ साहेब के साँच बात कहल जाय अवश्य। बाजल– 'सर! ई कोन फितूर सवार भ' गेल अछि अहाँके? ई समाधि, ई कृष्ण बनब, ई गोपी सभक गप। एना किए क' रहल छी? ई कोन बतहपन सवार भ' गेल अछि? अहाँक नीक-नीक काजक सम्बन्ध मे कतेक सीनियर सभ हमरा सभ के कहने छथि। हम सभ अहाँ सन के अधिकारी बनबाक सेहन्ता रखैत छलहुँ। बहुत सम्मान अछि अहाँक प्रति हमरा सभक मोन मे। हम ईहो नहि बूझि पाबि रहल छी जे अपन देह, अपन चेहरा जवान आ सुन्दर बनेबाक एतेक ललक किए जागि गेल अछि अहाँके? नारी देहक प्रति एतेक उद्दाम लालसा किएक? सभ अहाँक निन्दा करैत अछि। कौचर्य करैत अछि। सौंसे प्रमण्डल मे खाली एकरे चर्चा! की एहेन चर्चा अहाँके नीक लगैत अछि? एना किए क' रहल छी अहाँ? की एही जीवन मे अपन अरजल सभ प्रतिष्ठा के नष्ट क' दिअ' चाहैत छियै? की अहाँ चाहै छी जे लोक अहाँके एक सनकी, रूप-लोलुप, नटकिया मनुक्खक रूप मे मोन राखय? हँसी-मजाकक लेल लोक अहाँके स्मरण करय?

लोक सभ बाजय जे चौधरी साहेब बताह भ' गेला अछि? बाजू, जबाब दिअ'? आइ अहाँके जवाब दिअ' पड़त सर!' संजय के बजैत-बजैत कंठ बाझि गेल रहै। दुख, क्षोभ आ तामस सँ ओकर आँखि मे नोर आबि गेलै। से नोर अनायास टपटप खस' लगलै। ओ जेबी सँ रूमाल निकाललक आ अपन दूनू आँखि पर राखि लेलक। मुदा नोर बहब बन्द नहि भेल रहै।

चौधरी साहेब एकदम स्तब्ध भ' गेल रहथि। ओ खाली निर्निमेष दृष्टिएँ संजय के देखि रहल छला। हुनका बुझा रहल छलनि जे भीतर मे सभ किछु उघड़ा-भाँड़ भ' रहल अछि। बहुत मोट के जमल काइ साफ भ' रहल अछि। किछु घमि रहल अछि त' किछु बनि रहल अछि। तखने हुनका भेलनि जे तप्त देह पर शीतल बसात लाग' लागल अछि। ओ एक विरल सुख सँ भरि रहल रहथि। एहन सुख जे एहि सँ पहिने कहियो ने भेटल छलनि। ओ नहू सँ उठला आ संजय के भरि पाँज के उठा लेलनि। ओकर आँखि पर सँ रूमाल हटौलनि आ अपन हाथ सँ ओकर दुनू आँखि सँ बहैत नोर के पोछ' लगला। नोर पोछैत ममत्व सँ भरल आर्द्र स्वर मे बजला– 'एहन बात हमरा एहि सँ पहिने कियो नहि कहने छल हौ संजय। एना कियो डँटने सेहो नहि छल। हमरा नहि बूझल छल जे कियो एतेक आ ऐना प्रेम क' सकैत छै। हौ, तों कत' छलह एत्ते दिन?' कहि क' संजय के फेर सँ कुर्सी पर बैसा देलथिन। अपनहुँ कुर्सी पर बैसि गेला। किछु काल धरि वातावरण निशब्द रहल। दूनू गोटे इंस्पेक्टरक आवाज सँ चौंकला। ओ पूछि रहल छल, 'जलखै एहीठाम आनल जाय सर?'

■■



अशोक

जन्म	:	18 जनवरी 1953
जन्म स्थान	:	लोहना, मधुबनी (बिहार)
शिक्षा	:	बी.एस-सी., डी.सी.एम. (मास्को)
वृत्ति	:	बिहार सहकारिता सेवाक सेवानिवृत्त पदाधिकारी
प्रकाशन	:	चक्रव्यूह (कविता-संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा-संग्रह) ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह) मातवर (कथा-संग्रह) मैथिल आँखि (निबन्ध-संग्रह) कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा (मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक अध्ययन) आँखि मे बसल (यात्रा कथा) बात-विचार (आलोचना)
सम्पादन	:	संवाद (वार्त्ता) प्रतिमान (विचारगोष्ठीक आलेख ओ विमर्शक संग्रह) सन्धान (अनियतकालीन पत्रिका)
वर्त्तमान पता	:	बी 102, श्रीरामचन्द्र इन्क्लेव, रोड नं.1 ए, शिवपुरी, पटना-23 मो. न. : 8986269001 ashokthewriter@gmail.com

नवारम्भ
पटना/मधुबनी
navarambhprakashan@gmail.com
www.navarambh.com

ISBN 9789382013105

मूल्य : 200